* ॐ ह्रीं अर्हम् नमः *

खरतरगच्छीय

विधिपूर्वक

श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र

[सचित्र]

संपादक—

परम पूज्य श्री श्री १००८ श्री प्रसिद्ध वक्ता पं. प्र. आर्यपुत्र
श्री उदय सागर जी महाराज साहब के शिष्य
मुनिश्री प्रभाकर सागरजी महाराज ।

प्रकाशक—

श्री आनन्दज्ञान मन्दिर,

पो० सैलाना, जिला रतलाम
(मध्यप्रदेश)

वीर सं. २४९३
प्रथम संस्करण
२०००

विक्रम सं. २०२३

१९६६ ई.
मू० ४) रुपया

प्राप्ति स्थान—

(१) श्री आनन्द ज्ञानमंदिर,
पो० सैलाना,
जि० रतलाम
(मध्यप्रदेश)

(२) श्री जैन बालवीर मंडल,
C/o जैन श्वेताम्बर मंदिर,
पो० सिवनी
(मध्यप्रदेश)

(३) जैन कुशल भवन,
गौशालावार्ड,
पो० गोंदिया
(महाराष्ट्र)

दो शब्द

परम पूज्य खरतरगच्छाचार्य आगमवेत्ता वीरपुत्रजी श्रीमज्जिन आनन्द सागर सूरीश्वर जी महाराज साहब के शिष्यरत्न व्याख्यान वाचस्पति पं. प्र. आर्यपुत्र श्रीश्री १००८ श्री उदय सागरजी महाराज साहब के सदुपदेश से शासन भक्तों ने इस ग्रन्थ को छपवाने का खर्च दिया है, अतएव दानदाता धन्यवाद के पात्र हैं।

मूल्य रखने का कारण आशातना से बचना तथा भविष्य में ग्रन्थ प्रकाशन के लिए सुविधा मात्र लक्ष्य है।

पाठकों से अनुरोध है कि अपनी धार्मिक दिनचर्या में इसका सदुपयोग करके अपनी आत्मा का कल्याण करें।

दृष्टिदोष के कारण यदि अशुद्धि रह गई हो तो पाठकजन सुधारने का कष्ट करें। और शुद्धि पत्र के अनुसार प्रथम सुधार कर के पीछे पढ़ें।

॥ ॐ शान्ति ॥

मानापाट (मध्यप्रदेश)
दिनांक २२-६-६६ } मुनि प्रभाकर सागर

समर्पण

श्री खरतरगच्छगगनदिवाकर प्रखरवक्ता विद्वद्वर्य पूज्यपाद
स्वर्गीय आचार्यदेव वीरपुत्र श्रीमज्जिन
आनन्दसागर सूरीश्वरजी

गुरुदेव ?

आपश्री के अनुपमेय गांभीर्य, अपरिमित धैर्य, महान् औदार्य, विशदवात्सल्य, अप्रतिम विद्वत्ता, अनुपम व्याख्यान-शैली एवं कुशल समुदाय संचालन आदि दिव्यगुणों का स्मरण आज भी सबकी स्मृति में विद्यमान हैं।

इन्हीं गुणों से नतमस्तक हो यह सम्पादन आपश्रीके पवित्र पाणिपद्ममें समर्पित कर कृतार्थ हो रहा हूं।

भवच्चरणचंचरीक:
मुनि प्रभाकर सागर

खरतरगच्छगगनदिनमणि
जैनाचार्यश्रीमज्जिनानन्द
सागरसूरीश्वरजी
महाराज सा.

मुनि श्रीचन्द्रप्रभसागरजी

मुनि श्रीप्रभाकरसागरजी

मुनि श्रीमहोदयसागरजी

मुनि श्रीसूर्यसागरजी

दानदाताओं की नामावली

१०००) श्रीयुत् भैरुदानजी चोरड़िया — गोंदिया
५००) ,, चंपालालजी कोचर — बालाघाट
२००) ,, रामलालजी रानीदानजी लोढ़ा — कुटेली
२००) ,, सुगनचंदजी लूणकरणजी पारख — दाढ़ी
२००) ,, बालचंदजी देवीचंदजी ,, — ,,
१०१) ,, बीजराजजी गोलेच्छा (५०+५१) — धमतरी
५१) ,, इन्द्रचंदजी बंगानी — रायपुर
३२) ,, भीकमचंदजी चोरड़िया — बालाघाट
२५) ,, केशरीमलजी वेद — ग्रर्जुनी
२५) ,, मिसरीमलजी कटारिया — केशवाल
३००) सौ. कमला बहेन धर्मपत्नी श्रीयुत चंदुलाल जमनालाल — ग्रहमदाबाद
१०१) ,, नाजूबाई ,, ,, हमीरमलजी लोढ़ा — पंढरिया
१०१) ,, नेमीबाई ,, ,, सेसमलजी ,, — ,,
१०१) ,, तेजबाई ,, ,, ग्रनराजजी श्रीश्रीमाल — बागबहारा
१०१) ,, ग्रनोपबाई ,, ,, भागचंदजी निमाणी — रायपुर
१०१) ,, ,, ,, ,, जीवणमलजी लूंकड — रायपुर
५१) ,, मदनबाई ,, ,, फूलचंदजी लोढ़ा — पंढरिया
५१) ,, जतनबाई ,, ,, धर्मचंदजी लूनिया — कवर्धा
५१) ,, ग्रणचीबाई ,, ,, देलीचंदजी लोढ़ा — पंढरिया
५१) ,, रुक्मीबाई ,, ,, चुनीलालजी नाहटा — सीवनी
५१) ,, चंदाबाई ,, ,, कस्तूरचंदजी चोपड़ा — गोंदिया
३१) ,, गुप्त — बालाघाट

२५) ,, अजनाबाई ,, ,, लालचंदजी गिडिया राजनांदगांव
२५) ,, सुखदेवबाई ,, ,, भीकमचंदजी मुणोत खेरागढ
२५) ,, सुन्दरबाई ,, ,, धनराजजी सुराणा बालाघाट
६) ,, झमकुबाई ,, ,, पुखराजजी बंगानी धमतरी
७) ,, सोनीबाई ,, ,, प्रेमराजजी बाफना केशकाल
२५) ,, आशाबाई लोडा रायपुर
५१) श्रीमती मूलीबाई धर्मपत्नी श्रीयुत मूलचंदजी नाहटा सीवनी
७५) ,, केशरबाई गेंदाबाई धमतरी
५१) ,, गंगाबाई कोचर राजीम
५०) ,, अणचीबाई चोपडा कांकेर
५१) ,, ,, गोंदिया
५१) ,, लादूबाई केशरबाई जगदलपुर
५०) ,, खमाबाई पारख धमतरी
३०) ,, श्राविकासंघ कांकेर व जगदलपुर
२५) ,, मीनाबाई खुशालचंदजी नाहटा की माँ जबलपुर
२५) ,, मांगीबाई चोपडा कांकेर
२५) ,, पेंपाबाई चोपडा कांकेर
२५) ,, चंपाबाई डाकलिया खेरागढ
२५) ,, तीजांबाई भनशाली राजनांदगांव
२५) ,, मीरांबाई ,,
२५) ,, चंपाबाई ललवाणी छुरिया
२५) ,, पानबाई धमतरी
२५) ,, मीरगाबाई नयापारा राजीम
२५) ,, चंपाबाई चोपडा कांकेर
२५) ,, रमकुबाई कोचर
११) ,, किशनीबाई बोथरा गोंदिया
२०१) ,, बसन्तीबाई जमनाबाई श्री श्रीमाल महासमुद

शुद्धि-पत्र

पेज नंबर	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
८	१४	दिटिठसंचालेहि	दिट्ठिसंचालेहिं
,,	१५	आगारेहि	आगारेहिं
६	६	संति	संति
२६	१४	निसीही	निसीहि
२६	४	शल्य	शल्य
,,	७	सब	सब मन वचन कायासे
,,	१२	परानदादि	परनिंदादि
३०	१४	परिक्कमामि	पडिक्कमामि
३५	६	परलाए	परलोए
,,	१८	जेए	जेए न
३७	२	तिदंडविमाणं	तिदंडविरयाणं
,,	४	ने	मे
,,	७	योहि	योहिं
३८	१२	निसीही	निसीहि
४४	१८	निस्सीहि	निसीहि
४५	१३	,,	,,
५२	१५	थाए	साएं
५६	३	वोसिरा	वोसिरामि
६७	१५	मेहा	मेटो

,,	१८	मुनि	मुनिवर
७९	९	धम्म सति	धम्मं संति
८०	१२	अप्पकिलताणं	अप्पकिलंताणं
९०	१६	वंदि	वंदित
९६	१९	समाइए	सामाइए
१०६	११	सम्मसत्तस्इआरे	समत्तस्सइआरे
११२	७	दिविसो	दिवसो
११४	१०	कायसफासं	कायसंफासं
११८	९	धम्म	धम्मं
१२३	६	इवमाइ	एवमाइ
१३९	११	पुप्फदतं	पुप्फदंतं
१४९	८	यश्चेन	यश्चेनं
१७४	६	ठह्नि	ठंह्नि
१८७	१९	विरईआ	विरईओ
१९७	३	भ्फानाचार	ज्ञानाचार
२०३	७	दातारि	दातार
२१४	८	किाय	किया
२२२	९	एअंकारे	एवंकारे
२३३	१२	वघो	वंघो
२४१	५	सपाडक्कमणं	सपडिक्कमणं
२५२	११	उवरिभाए	उवरिभासाए
२५३	११	मे उग्गहं	मे मिउग्गहं
२९०	६	श्रीघृत	श्रीघृति

२६५	३	दुर्नामत्तादि	दुर्निमित्तादि
,,	,,	ाहत	हित
३२३	४	करकर	कहकर
३३४	३	पडिलेहे	पडिलेहे
३४३	१३	पयट	पयइ
३५७	२२	रक्तदाणं	रक्तेशणं
३६३	१८	॥रण	॥रणं
३६६	१६	पञ्चमः	पञ्चमः
३६६	१६	यः	यः
३७२	११	हिंनस्तु	हिनस्तु
३७३	३	सांगं	सर्वांगं
३७४	४	मूंच्यते	मुंच्यते
,,	१३	दृष्टे	दृष्टे
३७५	१३	महमाणसिया	महामाणसिया
३७७	६	दुष्कृत	दुष्कृत
,,	२०	सोऽत्यर्थ	सोऽत्यर्थं
३७६	१८	पंचमुव्रत	पंचसुव्रत
३८०	२	पंचनां	पंचानां
३८६	१८	दिन भवित	जिनभवित

—— भूमिका ——

संसार में अनन्त जीव अपने २ कर्मों के अनुसार विभिन्न गतियों में नानाप्रकार के सुखदुःखों का अनुभव करते हुए अनादिकाल से भ्रमण कर रहे हैं। घुणाक्षर न्याय से कभी कुछ आत्मा मानव जन्म प्राप्त करते हैं। उनमें से कतिपय प्राणी आर्यक्षेत्र उत्तम कुल दीर्घआयु आरोग्यता तथा धर्मश्रवणादि प्राप्त करके आत्म स्वरूप को समझ पाते हैं। स्वरूप का भान होने पर ही अनन्त अव्याबाध सुख की वाञ्छा जागृत होती है और उसे प्राप्त करने के लिए धर्माराधना में प्रवृत्त होता है। जैसे क्षेत्र में बीजवपन करने से पूर्व क्षेत्र शुद्धि आवश्यक है, चित्र बनाने से पूर्व भित्तिका स्वच्छ होना अनिवार्य है; वैसे ही धर्मरूप बीजवपन या आत्म स्वरूप प्रकट करने से पूर्व आत्मशुद्धि आवश्यक है।

आत्मशुद्धि के विभिन्न साधनों में आवश्यक क्रिया का स्थान सर्वप्रथम है। आवश्यक क्रिया का अर्थ ही अवश्य करने योग्य क्रिया है।

विश्व के प्रायः सभी धर्मों-मत मतान्तरों में कुछ ऐसी क्रियायें हैं जो समाज के सदस्यों के लिए अनिवार्य नहीं तो आवश्यक तो मानी ही जाती हैं। जैसे-वैदिक धर्मावलम्बियों के लिए सन्ध्योपासना, मुसलमानों के लिए नमाज, क्रिश्चियनों के लिए प्रार्थना। बौद्ध धर्मानुयायी भी अपने मान्य त्रिपिटकादि ग्रन्थों में से कुछ सूत्रों का नित्य नियमित पाठ करते हैं जो हमारी आवश्यक क्रिया से तुलना करने पर मिलते-जुलते से हैं। ये सब पाठ यहाँ देने से भूमिका बड़ी हो जाती; अतः नहीं दिये गये जिन्हें जिज्ञासा हो वे उक्त धर्मावलम्बियों के ग्रन्थों में देख सकते हैं और उन २ धर्मों के त व्यक्तियों से जान सकते हैं।

जैन समाज में आवश्यक क्रिया साधु साध्वियों के लिए प्रतिदिन प्रातः सायं अनिवार्य रूप से करनी आवश्यक है। शास्त्रों में विधान है

कि श्री ऋषभदेव भगवान और महावीर प्रभु के शासन में साधु साध्वी नित्य दोनों सन्ध्याओं में प्रतिक्रमण-आवश्यक क्रिया करें। न करने पर प्रायश्चित का भागी बनता है और प्रायश्चित न करे तो साधुपद से भ्रष्ट समझा जाता है।

श्रावक समाज मे यह आवश्यक क्रिया वैकल्पिक है। अर्थात् नियम व्रतधारी श्रावक श्राविकाओं के लिए भी अनिवार्य नही। परिस्थितियो और सुविधानुसार करने को गृहस्थव्रती स्वतन्त्र है। फिर भी यह देखा जाता है कि नित्य न करने वाले पाक्षिक प्रतिक्रमण और चातुर्मासिक प्रतिक्रमण तो यथासाध्य करने का प्रयत्न करते ही हैं। सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का तो इतना आदर है कि संवत्सरी के दिन तो, कभी न आने वाला व्यक्ति भी धर्मस्थान मे आता है और बालक बालिकाओं को भी प्रेरणा करके साथ में लाता है। प्रतिक्रमण करके सभी प्राणियों से क्षमायाचना करना परम कर्त्तव्य समझते हैं। इस प्रवृत्ति से यह स्पष्ट है कि आवश्यक क्रिया का महत्व अत्यधिक है और प्रायः बाल्यावस्था मे बालकों को धार्मिक शिक्षा देते समय सर्वप्रथम आवश्यक क्रिया सिखाई जाती है।

जनगण की इस आदरपूर्ण प्रवृत्ति से आवश्यक क्रिया को महत्व पूर्ण पद प्राप्त है। ऐसी आवश्यक क्रिया के विषय में प्रश्न होना भी स्वाभाविक है कि आवश्यक क्रिया क्या है? उसका क्या स्वरूप व क्रम है? आत्मा से क्या सम्बन्ध है? इत्यादि।

अवश्य करने योग्य क्रिया को आवश्यक क्रिया कहते है। जिस क्रिया से आत्मा के गुण-ज्ञान दर्शन चारित्र अनन्त बल आदि प्रकट होते हों वह आवश्यक क्रिया है।

सामान्य रूप से संसारी जीव दो प्रकार के हैं—१ बहिर्दृष्टि २ अन्तर्दृष्टि।

१ वहिर्दृष्टि—

वहिर्दृष्टि जीव संसार के भोग्य पदार्थों में लुब्ध रहता है, उसे आत्मा का भान नहीं होता। वह देह से सम्बन्धित विषयों में ही रुचि रखता है।

२ अन्तर्दृष्टि—

जिसकी दृष्टि आत्मा की ओर है, जो जड़ के साथ रहता हुआ भी चेतन स्वरूप को नहीं भूलता है, आत्मा के अतिरिक्त अन्य सर्व पदार्थों को पर समझता है, जड़-कर्म से मुक्त होने को व्याकुल है।

अन्तर्दृष्टि प्राणी आत्मा के साथ लगे हुए कर्म-जड़ को दूर करने को आवश्यक क्रिया करता है। जिससे उसकी आत्मा सहज सुख का अनुभव कर सके और कर्मों से आच्छादित आत्मगुण व्यक्त हों।

स्थूल दृष्टि से आवश्यक क्रिया ६ विभागों में विभक्त है—

१ सामायिक, २ चतुर्विंशतिस्तव, ३ गुरुवन्दन, ४ प्रतिक्रमण, ५ कायोत्सर्ग और ६ प्रत्याख्यान।

१ सामायिक—

रागद्वेष के वशीभूत न होकर समभाव में रहना अर्थात् सब प्राणियों के साथ रागद्वेष की भावना का परित्याग करके समता का व्यवहार करना सामायिक है। सामायिक के तीन भेद हैं—१ सम्यक्त्व सामायिक, २ श्रुत सामायिक और ३ चारित्र सामायिक।

सम्यग् दर्शन-सम्यक्त्व होना-अर्थात् सर्वज्ञकथित वचनों-आत्मा अजीव पुण्य पाप वन्ध मोक्ष आदि पर विश्वास होना, तीर्थंकर के वचनों में शंका न करना सम्यक्त्व सामायिक है।

सम्यग् ज्ञान प्राप्ति होना श्रुत-सामायिक है।

चारित्र सामायिक के दो भेद हैं :— सर्वचारित्र सामायिक, देश

चारित्र सामायिक। साधुओं के सर्वचारित्र सामायिक होता है और गृहस्थ श्रावक देश चारित्र सामायिकधारी होता है। एक मुहूर्त अर्थात् ४८ मिनट काल देश सामायिक का होता है। इससे कम समय का सामायिक नहीं होता। सामायिक करना प्रथम आवश्यक क्रिया है।

२ चतुर्विंशतिस्तव—

ऋषभादि चौबीस तीर्थंकर भगवान की स्तुति करना चतुर्विंशति स्तव नामक दूसरा आवश्यक है।

३ वन्दनक—

मन वचन और शरीर से पूज्यों के प्रति बहुमान प्रकट हो उस क्रिया को अर्थात् द्वादशावर्त वन्दन करना, वन्दनक आवश्यक है। बत्तीस दोष रहित वन्दन करना चाहिये।

४ प्रतिक्रमण—

प्रमादवश-शुभ योग से पतन होता है और अशुभ योग में प्रवृत्ति हो जाती है। पुनः शुभ योग में आने की क्रिया प्रतिक्रमण है। तथा अशुभ योगों का परित्याग कर शुभयोगों में प्रवृत्ति होना भी प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण का सामान्य अर्थ पीछे लौटना है। पाप कार्यों-दोषों से पीछे हटना प्रतिक्रमण है। महाव्रत या देशव्रतधारी को अपने व्रतों का पालन पूर्ण सावधानी से करने पर भी छद्मस्थ व्यक्ति से प्रमादवश भूल हो सकती है। उन्हीं गलतियों का मिथ्या दुष्कृत देकर शुद्ध होने की क्रिया प्रतिक्रमण है।

१ दैवसिक २ रात्रिक ३ पाक्षिक ४ चातुर्मासिक और ५ सांवत्सरिक। ऐसे प्रतिक्रमण के ५ भेद हैं, जो शास्त्र सम्मत हैं। काल भेद से तीन प्रकार का प्रतिक्रमण भी शास्त्रवर्णित है:—१ अतीत के दोषों की आलोचना करना। २ संवरभाव में रहकर वर्तमान में लगने वाले

दोषों से बचना। अनागत-भविष्य में दोषों से बचने के लिए प्रत्याख्यान करना।

उत्तरोत्तर आत्मगुणों का विकास करने के इच्छुक को यह भी जानना आवश्यक है कि प्रतिक्रमण किन २ दोषों से मुक्त होने के लिए किया जाय इस विषय पर भी थोड़ा विचार करलें। आत्मा के साथ अनादिकाल से १ मिथ्यात्व २ अविरति ३ कषाय और ४ योग इन चार का सम्बन्ध लगा हुआ है। इनको दूर हटाने के लिए—अर्थात् मिथ्यात्व को दूर करने के लिए सम्यग् दर्शन में वर्त्तना, अविरति से बचने को व्रतधारण करना, क्रोध, मान, माया और लोभ, इन चार कषायों में प्रवृत्ति न करके क्षमा मार्दव, आर्जव और निर्लोभ रहना तथा मन वचन और शरीर से होने वाले पाप व्यापारों को छोड़ना और शुभ प्रशस्त कार्यों में मानसिक वाचिक और कायिक प्रवृत्ति करना उचित है।

५ कायोत्सर्ग—

धर्म या शुक्ल ध्यान में प्रवृत्ति करने के लिए शरीर पर से ममत्व का परित्याग करना कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग करने से देह और बुद्धि की जड़ता दूर होती है। अर्थात् शरीर के वातादि दोष सम होते है और बुद्धिमान्द्य नष्ट होकर विचारशक्ति विकसित होती है। सुख दुःख में समभाव से रहने की योग्यता प्राप्त होती है। अनुकूल और प्रतिकूल संयोगो में स्थिरता धैर्यता और दृढ़ता से रहने की शक्ति बढ़ती हैं। भावना और ध्यान का अभ्यास भी कायोत्सर्ग से परिपुष्ट बनता है। अतिचारों का चिन्तन भी कायोत्सर्ग में सूचारुरूप से होता है। इस प्रकार कायोत्सर्ग का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। १६ दोष रहित कायोत्सर्ग करना चाहिए।

६ प्रत्याख्यान—

किसी वस्तु या वृत्ति आदि का त्याग प्रत्याख्यान कहलाता है।

बाह्य और आभ्यन्तर दोनों का त्याग करना चाहिए। आहार वस्त्र आदि बाह्य पदार्थ और मिथ्यात्व अज्ञान असंयम आदि आन्तरिक। आभ्यन्तर त्यागपूर्वक किया हुआ बाह्य त्याग ही वास्तविक त्याग है। श्रद्धान, ज्ञान, वन्दन, अनुपालन, अनुभाषण और भाव इन छह शुद्धियों सहित किया जाने वाला प्रत्याख्यान ही शुद्ध प्रत्याख्यान है। प्रत्याख्यान का ही दूसरा नाम गुणधारण इस कारण से ही है कि इससे अनेक गुण व्यक्त होते हैं. प्रत्याख्यान से आस्रव निरोध अर्थात् संवर होता है, संवर से तृष्णानाश, तृष्णानाश से समभाव, समभाव से क्रमशः कर्म प्रकृतियों का नाश और मुक्ति की उपलब्धि होती है।

आवश्यक क्रियाका स्वरूप व क्रम—

अन्तर्दृष्टि वाले महानुभावों के जीवन का उद्देश्य समभाव प्राप्त करना है। उनके प्रत्येक व्यवहार में समत्व के दर्शन होते हैं। ऐसे अन्तर्दृष्टि आत्मा जब किसी आत्मा को समभाव के सर्वोच्चशिखर पर समासीन अवलोकन करते हैं तो उस परमात्मावस्था प्राप्त महापुरुष के अलौकिक गुणों की स्तवना करने को प्रवृत्त होते हैं। इसी प्रकार सम-भाव स्थित साधक-मुनि आर्याओं को वन्दन करना भी विस्मृत नहीं करता और विनम्रभाव से द्वादशावर्त्त वन्दन करता है। अन्तर्दृष्टि वाले इतने सचेत सावधान और अप्रमत रहते हैं कि कदाचित् पूर्ववासना-वश या कुसंसर्गवश समभाव से स्खलित हो जायें तो प्रतिक्रण-आलोचना द्वारा पुनः पूर्वसमभाव में स्थित हो जाते हैं और कभी २ तो पूर्व स्थिति से अग्रगामी बन जाते है। कायोत्सर्ग-ध्यान ही आत्मशुद्धि व आत्मोत्सर्ग की मूल कुञ्जी है; अतः अन्तर्दृष्टि व्यक्ति बार बार कायो-त्सर्ग द्वारा आत्मशुद्धि करते हुए, विशेषरूप से आत्मलीन बन जाते हैं और आत्मलीन के लिए जड़ पदार्थों के प्रति परित्याग की भावना साह-जिक क्रिया है।

इस प्रकार यह स्पष्टतया सिद्ध होता है कि आध्यात्मिक प्राणी

के जड़ चेतन की पृथक्करण क्रिया का नाम ही आवश्यक क्रिया है। यह आवश्यक का स्वरूप है।

समभाव के बिना चतुर्विंशति स्तव नहीं होता, क्योंकि जो स्वयं समभावी नहीं है वह भावपूर्वक उन सर्वज्ञदेवों की वन्दना स्तवना प्रशंसा कैसे कर सकता है? अतएव सामायिक के अनन्तर चतुर्विंशति स्तव का स्थान है। चतुर्विंशति स्तव करने वाला व्यक्ति गुरुवन्दन कर सकता है, क्योंकि जो अरिहंतदेवों के गुणों से प्रसन्न होकर उनकी स्तुति प्रशंसा नहीं कर सकता वह तीर्थंकरों के सिद्धान्तों का पालन करने वाले और उनका उपदेश करने वाले सद्गुरुओं को विनयभावपूर्वक वन्दन कैसे कर सकता है? अतः तृतीय स्थान वन्दनक आवश्यक का है। वन्दनान्तर प्रतिक्रमण रखने का आशय यह है कि आलोचना गुरुसमक्ष करने का विधान है। जो गुरु को वन्दन नहीं करता वह आलोचना का अधिकारी ही नहीं हो सकता। गुरुवंदन रहित आलोचना वास्तविक आलोचना नहीं कहलाती और उससे साध्य की सिद्धि नहीं हो सकती। सच्चे आलोचक की मनोभावना इतनी नम्र और कोमल होती है कि बरबस गुरुपादपद्मों में शिरोन्यस्त हो जाता है, अर्थात वन्दन करता है और कृतपापों दोषों वा अतिचारों को सद्गुरु के सम्मुख प्रकट करके मिथ्यादुष्कृत देता हुआ आत्मा को स्वच्छ पवित्र बनाता है। आलोचना प्रतिक्रमण से विशुद्ध ध्यान—कायोत्सर्ग की योग्यता प्राप्त करता है। कारण यह है कि विशुद्धात्मा—अर्थात् आलोचना-प्रतिक्रमण से चित्तशुद्धि वाला आत्मा कायोत्सर्ग की योग्यता वाला होता है। कायोत्सर्ग का उद्देश्य हैं धर्मध्यान शुक्लध्यानके लिए एकाग्रता सम्पादन करना। विशेष चित्तशुद्धि एकाग्रता और आत्मबल वाला व्यक्ति प्रत्याख्यान के योग्य होता है। चित्तशुद्धि एकाग्रता और संकल्पबल कायोत्सर्ग से प्राप्त होते हैं। संकल्पबल रहित व्यक्ति प्रत्याख्यान का निर्वाह नहीं कर सकता। एतदर्थ कायोत्सर्ग के पश्चात् प्रत्याख्यान का विधान है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि षडावश्यक का क्रम कार्यकारण भाव की शृंखलाओं में आबद्ध है। इसमें व्यतिक्रम करने से स्वाभाविकता विनष्ट हो जाती है और उद्देश्य सिद्धि नहीं होती।

आवश्यक क्रिया का आत्मा से संबंध या आध्यात्मिकता:—

जो क्रिया या साधना आत्म विकास के लक्ष्य से की जाती है, वही आध्यात्मिक साधना है। आत्मविकास का आशय है आत्मगुणों— सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन और सम्यग् चारित्र का विकास होना। सामायिकादि षडावश्यक से इन्हीं गुणों का विकास होता है। यथा:— पाप व्यापार से निवृत्त होना सामायिक है। यह निवृत्ति आत्मगुण विकास का कारण है। चतुर्विंशति स्तव का उद्देश्य गुणानुराग की अभिवृद्धि द्वारा गुण प्राप्ति है। गुणीजनों की स्तुति से कर्म निर्जरा होती है और निर्जरा से विकास। वन्दन क्रिया विनयरूप होती है, अभिमान त्यागकर गुरुजनों की वन्दना करने से तीर्थंकर भगवान् की आज्ञा का पालन, गुरुजनपूजा और श्रुतधर्म की आराधना होती है। ये सब आत्मविकास के क्रमिक साधन है। वन्दन करने वाले को शास्त्रश्रवण का अवसर मिलता है। शास्त्रश्रवण द्वारा क्रमशः ज्ञान, विज्ञान, व्रतरुचि संयम, अनाश्रव, तप, कर्मनाश, अक्रिया और सिद्धि, ये फल बतलाये गये हैं। अतः वन्दनक्रिया भी विकास का असंदिग्ध कारण है।

आत्मा स्वरूपतः पूर्णशुद्ध अनन्तज्ञानादि गुणों वाला है पर अनादिकालीन मिथ्यात्व कषायविषय आदि वासनाओं के संसर्ग से कर्मों की अनेक तहों में दबा हुआ है। स्वरूप का भान होने पर ऊपर उठने का प्रयत्न करता है, उस समय अनादि अभ्यासवश स्खलना होना स्वाभाविक है और पदपद पर भूलें भी होती हैं। उन भूलों स्खलनाओं का संशोधन प्रतिक्रमण द्वारा होता है। अतः पूर्वकृत दोषों से शुद्ध होकर भविष्य में उन दोषों को न करने की सावधानी रखना प्रतिक्रमण का

उद्देश्य है, जिससे आत्मा धीरे २ सर्वदोषों से मुक्त होकर अपने स्वरूप में स्थित हो सके; अतः प्रतिक्रमण भी आध्यात्मिक क्रिया है।

कायोत्सर्ग एकाग्रता से आत्म स्वरूप विचारने का सुअवसर प्रदान करता है। कायोत्सर्गस्थित आत्मा स्वनिरीक्षण द्वारा चेतन जड़ की विश्लेषण क्रिया में निरत होकर आत्माके साथ बद्ध जड़ को दूर हटाने का प्रयत्न करता है और प्रत्याख्यान द्वारा संवरभाव की वृद्धि के योग्य बनता है। संसार में जितनी योग्य वस्तुएँ हैं उन सब का भोग तो हो नहीं सकता न सभी वस्तु भोगने योग्य है। अपरिमित भोगों को भोग लेने पर भी शांति चिरस्थायी नहीं रहती।

अतः प्रत्याख्यान द्वारा मुमुक्षु व्यक्ति स्वयं को व्यर्थ के भोगों से बचाकर तृष्णा पर नियन्त्रण रखता है, अनिवार्य आवश्यकताओं से आगे नहीं बढ़ता। इस प्रकार प्रत्याख्यान क्रिया भी आध्यात्मिक ही है।

आवश्यक लोकोत्तर साधना है परन्तु व्यवहार से पृथक नहीं निश्चय और व्यवहार का सम्बन्ध होने पर ही मानव जीवन का उत्कर्ष सम्भव है तथा अन्त में विकास की पराकाष्ठा अर्थात् सिद्धत्व या वीतरागता प्राप्त हो सकती है।

जिन तत्वों या आचरणों से मानव सर्वश्रेष्ठ बनता है वे हैं ये आचरण:—

१ समभाव—अर्थात् श्रद्धा ज्ञान और संयम की त्रिवेणी। २ जीवन को उच्च, निर्दोष बनाने के लिए सर्वोच्चपद पर प्रतिष्ठित तीर्थंकरदेवों को आदर्श मानकर उनके प्रति अनन्य भक्ति रखना। ३ गुणीजनों का बहुमान व विनय। ४ कर्त्तव्य की स्मृति रखना और कर्त्तव्य पालन में होने वाली त्रुटियों का परिमार्जन करके पुनः त्रुटियां न हो इसलिए प्रतिक्षण जागृत-सचेत रहना। ध्यान के अभ्यास द्वारा वस्तु के यथार्थ स्वरूप को जानने के लिए विवेक बुद्धि का विकास करना और त्यागवृत्ति द्वारा सन्तोष व सहनशीलता की अभिवृद्धि करना।

इस प्रकार व्यावहारिक आचरण से निश्चय भी अर्थात् मुक्ति लक्ष्य सिद्ध होता है।

इस व्यावहारिक आचरण में आरोग्य-जिसका मूल कारण मानसिक प्रसन्नता है, वह भी प्राप्त होता है। क्योंकि पापवासनायुक्त या दोषसेवी आत्मा प्रसन्न नहीं रह सकता, कृत दोषों-अपराधों की ज्वाला उसे जलाती रहती है और अशान्त-भयभ्रान्त रहता है। नैतिकता बिना जीवन में शान्ति दुर्लभ है। उपर्युक्त आचरण नैतिक और आध्यात्मिक दोनों हैं।

कौटुम्बिक और सामाजिक सुख-शान्ति के मूलाधार भी उपरिलिखित षट् तत्व हैं। कुटुम्ब में शान्ति के लिए पारस्परिक यथोचित विनय, आज्ञापालन, सेवाभाव और कर्त्तव्य ज्ञान तथा उत्तरदायित्व की भावना आवश्यक है। समाज में सुव्यवस्था रखने के लिए विचारशीलता, प्रामाणिकता, दीर्घदर्शिता, गम्भीरता और समत्व की अनिवार्यता होती है। ये सब तत्त्व षडावश्यक क्रिया में सन्निहित हैं।

इस प्रकार स्पष्टतया सिद्ध हो जाता है कि निश्चय और व्यवहार दोनों दृष्टियों से आवश्यक क्रिया का अनुष्ठान परम श्रेयस्कर है।

इसको दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक क्रिया पुस्तक सामने रखकर कण्ठस्थ न रखने वाला व्यक्ति भी कर सके यह विधि के चित्रों सहित और विधि सहित संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। यद्यपि इससे पूर्व भी कई संस्करण प्रकट हो चुके हैं, किन्तु वे सब समाप्त प्राय से हैं; अतः संशोधक व प्रकाशक दोनों ही धन्यवादार्ह हैं।

आशा है आवश्यक क्रियाभिलाषी इससे लाभान्वित होंगे।

॥ शुभम्भूयात् ॥

जयपुर — जैनशासन सेविका
विजयादशमी प्र० ज्ञानश्री
व. सं. २०२३

विषयानुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पेज
१	प्रभातकालीन सामायिक लेने की विधि	१ से ११
२	राइय प्रतिक्रमण विधि	१२ से ६६
३	पडिलेहन विधि	७० से ७४
४	सामायिक पारने की विधि	७४ से ७५
५	संध्याकालीन सामायिक लेने की विधि	७६ से ८४
६	देवसिक प्रतिक्रमण विधि	८५ से १४६
७	सामायिक पारने की विधि	१५० से १५१
८	पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण विधि	१५२ से २६८
९	छींक दोष निवारण विधि	२६९ से ३००
१०	मार्जारीदोष निवारण विधि	३०० से ३०२
११	पचक्खाण सूत्राणि	३०३ से ३१२
१२	आठ पहरी पौषध विधि	३१३ से ३३१
१३	पोसह पारने की विधि	३३१ से ३३२
१४	दिन सम्बन्धी चउपहरी पोसह विधि	३३२ से ३३४
१५	रात्रि संबंधी चउपहरी पोसह विधि	३३४ से ३३५
१६	देसावगासिक लेनेकी और पारने की विधि	३३५
१७	सप्त स्मरणानि १ बृहदजितशान्ति स्तवन	३३६
१८	२–लघुअजितशान्ति स्मरणम्	३४२
१९	३–नमिऊण स्मरणम्	३४४
२०	४–गणधरदेव स्तुतिरूपं स्मरणम्	३४६

२१ ५-गुरुपारतंत्र्यनामकं स्मरणम् ३४६
२२ ६-सिग्घमवहरउ नामकं स्मरणम् ३५१
२३ ७-उवसग्गहर नामकं स्मरणम् ३५२
२४ भक्तामर स्तोत्र ३५३
२५ कल्याणमंदिर स्तोत्र ३५६
२६ महशान्ति (श्रीभद्रबाहु विरचित) ३६४
२७ नवग्रह पूजाजाप विधि ३६७
२८ जिनपञ्जर स्तोत्र ३६८
२९ ऋषिमंडल स्तोत्र ३७०
३० तिजयपहुत्त स्तोत्र ३७४
३१ जिनदत्तसूरि स्तुति ३७६
३२ सरस्वती स्तोत्र ३७६
३३ द्वितीया (दूज) की स्तुति ३७८
३४ पंचमी (पांचम) की स्तुति ३७९
३५ अष्टमी (आठम) की स्तुति ३८०
३६ मौनएकादशी स्तुति ३८०
३७ पार्श्वजिन स्तुति ३८१
३८ नवपदकी स्तुति ३८२
३९ नेमिनाथजी की स्तुति ३८३
४० दीपमालिका (दीवाली) स्तुति ३८३
४१ महावीरस्वामी की स्तुति ३८४
४२ आदिनाथजी की स्तुति ३८५
४३ पर्यूषण की स्तुति ३८५
४४ नवपद चैत्यवंदन ३८६
४५ सिद्धगिरि स्तवन ३८६
४६ ऋषभ जिनेश्वर स्तवन ३८७
४७ पर्यूषण स्तवन ३८९

४८ अष्टापदगिरि स्तवन ३८८
४६ शंखेश्वर स्तवन ३६०
५० श्रीपार्श्वजिन स्तवन ३६१
५१ नवपद स्तवन ३६२
५२ आदिजिन स्तवन ३६२
५३ नेमीनाथजी का स्तवन ३६३
५४ देवजसाजिन स्तवन ३६४
५५ वज्रधरजिन स्तवन ३६५
५६ चंद्राननजिन स्तवन ३६६
५७ वाहुजिन स्तवन ३६७
५८ सुवाहुजिन स्तवन ३६८
५६ पार्श्वजिन स्तवन ३६६
६० अजितजिन स्तवन ३६६
६१ चंद्रप्रभु स्तवन ४००
६२ आदिजिन स्तवन ४००
६३ ,, ४०१
६४ महावीरस्वामी स्तवन ४०१
६५ पंचमीका बड़ा स्तवन ४०२
६६ पंचमीका लघु स्तवन ४०५
६७ पार्श्वजिन स्तवन ४०५
६८ अष्टमीका स्तवन ४०६
६६ एकादशीका बड़ा स्तवन ४१०
७० वीरजिनविनतिरूप अमावस का स्तवन ४११
७१ पूर्णिमाका स्तवन ४१३
७२ दादागुरु जिनदत्तसूरिजीका स्तवन ४१४
७३ दादागुरु जिनकुशलसूरिजी का स्तवन ४१५
७४ दादागुरुका सवईया ४१६

७४ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ४१७
७६ निर्वाणकल्याणक स्तवन ४१७
७७ श्रावककी करणी ४१८
७८ तीर्थमाला स्तवन ४२०
७६ सीमंधरजिन स्तवन ४२१
८० गोतमस्वामीजीका रास ४२२
८१ शत्रुंजयका रास ४३०
८२ गौडीपार्श्वजिनवृद्ध स्तवन ४४०
८३ तावका छंद ४४६
८४ चारशरण ४४७
८५ आलोयण स्तवन ४४६
८६ पद्मावती आलोयण ४५१
८७ जैनतिथि मंतव्य ४५५
८८ सूतक विचार ४५७
८६ असज्झाय विचार ४५६
६० वस्तुकाल विचार ४६१
६१ श्रावकके चौदह नियम ४६२
६२ निंदावारक सज्झाय ४६५
६३ सोवाजीकी सज्झाय ४६६
६४ अनाथीऋषिकी सज्झाय ४६७
६५ जम्बूद्वीप अथवा पूनमकी सज्झाय ४६८
६६ समकितकी सज्झाय ४६६
६७ प्रतिक्रमणकी सज्झाय ४६६
६८ ढंढणऋषिकी सज्झाय ४७०
६६ अरणकमुनिकी सज्झाय ४७१
१०० भरत चक्रवर्तीकी सज्झाय ४७२
१०१ वैराग्य पद ,,

१०२ आपस्वभावकी सज्झाय ४५३
१०३ चिन्तामणि पार्श्व छंद ४५४
१०४ नाकोडाजी छंद ४५५
१०५ प्रभुजीको पोंखणेका स्तवन ४५६
१०६ आदीश्वर भगवान की आरती ४५७
१०७ मंगलचार ,,
१०८ कुंभस्थापन स्तवन ४५८
१०९ मंगल वधावा ७७६
११० चद्दांग्र स्तुति ४८०
१११ परसमयतिमिरतरणि भावार्थ ४८२
११२ सामायिक तथा पौषधपारने की गाथा भावार्थ ४८३
११३ जयमहायस भावार्थ ४८५
११४ श्रुतदेवताकी स्तुति भावार्थ ४८५
११५ क्षेत्रदेवताको स्तुति भावार्थ ४८६
११६ भुवनदेवताकी स्तुति भावार्थ ४८६
११७ सिरिथंभणयट्टिपाससामिणो भावार्थ ४८६
११८ थंभणपार्श्वनाथ का चैत्यवंदन भावार्थ ४८७
११९ जयतिहुअण स्तोत्र भावार्थ ४८८

—:-०-:—

ॐ ह्रीं अर्हम नमः ।

श्रीस्तम्भनपार्श्वनाथाय नमः ।

श्रीखरतरगच्छीय श्रावकों का

श्रीप्रतिक्रमणसूत्र

विधिसहित ।

प्राभातिक सामायिक लेने की विधि ।

(सब से प्रथम श्रावक और श्राविका पडिलेहन किये हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, पट्टा प्रमुख उस स्थान की प्रमार्जना करके ठवणी-स्थापनाचार्यजी, पुस्तक माला आदि को स्थापन करें । बाद में कटासना, मुँहपत्ति, चरवला पास में ले सामायिक करने की जगह पूँज कर बैठे, बाद बाँये हाथ में मुँहपत्ति ले कर मुँह के सामने रखे । और जमना हाथ स्थापन की हुई पुस्तक आदि के सामने करके तीन नवकार गिने—)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं ।
णमो आयरियाणं । णमो उवज्भायाणं ।

णमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच णमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं[१] ॥१॥

(इस प्रकार तीन नवकार गिने । यदि प्रतिष्ठित स्थापनाचार्यजी हो तो तेरह बोल से स्थापनाजी की पडिलेहना करे–)

शुद्ध स्वरूप धारे (१), ज्ञान (२), दर्शन (३), चारित्र (४), सहित सद्दहणा-शुद्धि (५), प्ररूपणा-शुद्धि (६), दर्शन-शुद्धि (७), सहित पांच आचार पाले (८), पलावे (९), अनुमोदे (१०), मनोगुप्ति (११), वचनगुप्ति (१२), कायगुप्ति आदरे (१३).

(पीछे चरवला मुँहपत्ति हाथ में ले कर गुरुजी को या स्थापनाचार्यजी को खडे हो कर वंदन करे—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

---

१ अरिहंत के १२ गुण, सिद्धभगवान् के ८ गुण, आचार्यमहाराज के ३६ गुण, उपाध्याय महाराज के २५ गुण, साधुमहाराज के २७ गुण, सब मिलाने से १०८ गुण होते हैं, और नवकारवाली मे १०८ मणके होते है । माला जपने से पंचपरमेष्ठी के गुणों का स्मरण होता है ।

(इस प्रकार तीन खमासमण देना, पीछे खड़े ही रह कर)

इच्छकार भगवन् ! सुहराइ, सुहदेवसि सुखतप शरीर निराबाध सुखसंयमयात्रा निर्वहते हो जी ? स्वामी साता है जी ?

(ऐसा कह कर, नीचे बैठ कर दाहिने हाथ को चरवले पर या नीचे रख कर, मस्तक नीचे नमा कर नीचे का सूत्र बोले—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं इच्छं, खामेमि राइअं ॥ जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(इस प्रकार बोल कर पीछे नीचे लिखे अनुसार बोलना-)

---

१ त्यागी और क्रियावान् गुरु वंदन करने योग्य हैं, पासत्था (शिथिलाचारी) गुरु को वंदन करने से कर्मों की निर्जरा नहीं होती, केवल कायक्लेश और कर्म-बंधन होता है। आगम में कहा है— "पासत्थाइ वंदमाणस्स नेव कित्ती न निज्जरा होइ, कायकिलेसं एवं कुणाई तह कम्मबंधं च ॥ १ ॥"

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुँहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(ऐसा बोल कर मुँहपत्ति की पडिलेहना नीचे लिखे पचीस बोल मन में बोलते हुए करे—)

१ सूत्र अर्थ साचो सद्दहूं, २ सम्यक्त्वमोहनीय, ३ मिथ्यात्व-मोहनीय, ४ मिश्र-मोहनीय परिहरूं। ५ कामराग, ६ स्नेहराग, ७ दृष्टिराग परिहरूं ।

(ये सात बोल मुहपत्ति खोलते समय कहने चाहिये ।)

१ ज्ञानविराधना, २ दर्शनविराधना, ३ चारित्रविराधना परिहरूं । ४ मनोगुप्ति, ५ वचनगुप्ति, ६ कायगुप्ति आदरूं। ७ मनोदंड, ८ वचनदंड, ६ कायदंड परिहरूं ।

(ये नव बोल दाहिने हाथका पडिलेहन के समय कहना चाहिए।)

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूं। ४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूं। ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरूं।

ये नव बोल बांयें हाथ का पडिलेहन के समय कहें।

(अब नीचे लिखे पचीस बोलों से अंग की पडिलेहना करे, अर्थात् जिस अंग का नाम आवे उसी अंग को मुंहपत्ति से स्पर्श करें—)

१ कृष्णलेश्या, २ नीललेश्या, ३ कापोतलेश्या. ये तीन निलाडें मस्तके परिहरूं। १ ऋद्धिगारव, २ रसगारव, ३ सातागारव ये तीन मुखे परिहरूं। १ मायाशल्य, २ नियाणशल्य, मिथ्यादर्शनशल्य ये तीन हृदये परिहरूं। १ क्रोध, २ मान, ये दोनों दाहिने कंधे परिहरूं। १ माया, २ लोभ ये दोनों बांये कंधे परिहरूं। १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ये तीन बांये हाथे परिहरूं। १ भय, २ शोक, ३ दुगंछा ये तीन

मट्टी–मक्कडासंताणा–संकमणे, जे मे जीवा विराहिया । एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहाँ एक लोगस्सका या चार नवकार का काउस्सग्ग करें।[1] पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहें—)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

---

१ इरियावहि में अठारह लाख चोवीस हजार एकसौ बीस (१८२४१२०) विराधनाओं (?) की संख्या है।

(फिर खमासमण दे कर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणो संदिसाहुं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वैसणो ठाउं 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(इस प्रकार खमासमण दे कर आठ नवकार गिने। शीत-काल में वस्त्र की आवश्यकता हो तो—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छा-कारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरणो संदिसाहुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरणो पडिग्गहुँ ? 'इच्छं'।

(इस प्रकार दो खमासमण दे कर वस्त्र ग्रहण करें। पीछे दो घड़ी (४८ मिनिट) स्वाध्याय ध्यान करें या प्रतिक्रमण करें। सामायिक में या पौषध में सामायिक और पौषधवाला यदि श्रावक आपस में वन्दन करें तो 'वंदामो' कहे और श्राविका वन्दन करे तो 'सज्झाय करेह' ऐसा कहे।)

॥ इति सामायिक लेने की विधि ॥

⊙

राइय-प्रतिक्रमण-विधि ।

★

(प्रथम पूर्वोक्त रीति से सामायिक ले कर पीछे[1]—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ।

(ऐसा कह कर बांया घुटना ऊंचा करके नीचे लिखे अनुसार "जयउ सामिय०" " बोलना)

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण । भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण । अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागयसंपइअ, वंदु जिण सव्वेवि ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहू

---

१ पौषध में रहा हुवा श्रावक कुसुमिण दुसुमिण काउस्सग्ग करके पीछे चैत्यवन्दन करते हैं ।

गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि विहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडिसहस्स दुश्र थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ । चउसय छायासीया, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना । अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्म-

दयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्व दरिसिणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवस्सग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ! ॥ ५ ॥

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धचाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण-दुसुमिण-राइय-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्गं करूं ? "इच्छं" कुसुमिण-दुसुमिण-राइयपायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहाँ चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग पारके नीचे मुजब प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च

सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजीमिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए, मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्याय-जीमिश्र' ॥ २ ॥

(यहां पर धर्माचार्य का नाम ले कर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगम-युगप्रधान भट्टारक वर्त्तमान....मिश्र' ॥३॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्व-साधुजीमिश्र' ॥ ४ ॥

(इसके बाद दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, गोडाली आसन से बैठ कर, मस्तक नमा कर, बायें हाथ से मुँहपत्ति मुख के आगे रख कर सव्वस्सवि० बोले ।)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं,

पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जो-अगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं । बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत, मक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति, "सिद्धिगइ"-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

[१ सामायिकावश्यक]

(अब खड़े हो कर बोलना।)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं

पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे राइयो अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं

छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चारित्र विशुद्धि निमित्त यहां एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे काउस्सग्ग पार करके "लोगस्स०" कहना।

[२ चतुर्विंशतिस्तवावश्यक]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल - सिज्जंस - वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं

नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं,

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दर्शनविशुद्धि के निमित्त एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे नीचे मुजब "पुक्खरवरदीवड्ढे" कहना)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणव-नरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ

सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं,एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ।

(ज्ञानविशुद्धि निमित्त काउस्सग्ग में "आजूणा चउप्रहर रात्रिसंबंधी" इत्यादि आलोचणा का चितवन करें । यदि न आता हो तो आठ नवकार का काउस्सग्ग करें । पीछे नीचे मुजब "सिद्धाणं बुद्धाणं" कहना ।)

- सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपर - गयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

[३ वंदनावश्यक]

(इसके बाद प्रमार्जन पूर्वक बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुंहपत्ति पडिलेहन करे, पीछे नीचे लिखे मुजब दो बार 'वांदणा' देवे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे

किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राइवइ-
क्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि
खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए
पडिक्कमामि, खमासमणाणं, राइआए आसाय-
णाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मण-
दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए
माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-
मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसाय-
णाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमा - समणो।
पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि-
रामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि,
अहो-कायं काय - संफासं । खमणिज्जो भे किलामो
अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे, राइवइक्कंता ?
जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो
राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं
किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए,

कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्म-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

[४ प्रतिक्रमणावश्यक]

(अब खड़े होकर बोलना।)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे राइओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आजुणा चार प्रहर रात्रि में मैंने जिन जीवों की विराधना की होय। सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वायुकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दो इंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौद लाख मनुष्य एवं कुल चार गति के चौरासी लाख जीव योनियों में से किसी जीव का मैंने हनन किया हो, कराया हो, या करते हुये का अनुमोदन किया हो, वे सब मन वचन कायासे मिच्छा मि दुक्कडं।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नववां लोभ, दसवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह,

तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशून्य, पंद्रहवां रति-अरति, सोलहवां पर-परिवाद, सत्रहवां माया-मृषावाद, अठारहवां मिथ्यात्व-शल्य, इन अठारह पापस्थानों में से किसी का मैंने सेवन किया हो कराया हो या करते हुये का अनुमोदन किया हो, वह सब मिच्छा मि दुक्कडं ।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देवगुरु धर्म की आशातना की हो, पंद्रह कर्मादानों की आसेवना की हो, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा की हो, और जे कोई परनिदादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुये का अनुमोदन किया हो, वे सब मन वचन काया से रात्रि अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणा में आलोऊं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

(नीचे बैठकर दाहिना हाथ चरवले या आसन पर रख के बोलना।)

सव्वस्स वि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चि-

ट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! 'इच्छं' तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब दाहिना गोडा ऊँचा करके भगवन् सूत्र पढ़ें' 'इच्छं' कह कर तीन वार 'नवकार' तीन वार 'करेमि भंते' और 'इच्छामि पडिक्क०' कह कर 'वंदित्तु सूत्र' बोले।)

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचणमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वि-

चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

॥ वंदित्तु - सूत्र ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥
दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥३॥
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥५॥

संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु।
सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥६॥
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥८॥
पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवाय-विरईओ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
वहबंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए।
पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१०॥
बीए अणुव्वयम्मि, परि-थूलग अलिअ-वयणवि-
रईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-
संगेणं ॥११॥ सहसा-रहस्स दारे, मोसुवएसे
अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे
राइअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि, थूलग-
परदव्वहरण-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडि-

रूवे अ विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे,पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदार - गमण - विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थ वयस्स-इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणु-व्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि। परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न - खित्त - वत्थू, रुप्प - सुवन्ने अ कुविअपरि-माणे। दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उव-भोग - परिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि - दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे

राइअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी,-भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत-लक्ख रस - केसविसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसलजंतग, तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव - रस—गंधे । वत्था-सण-आभरणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही - पमाय तह चेव भोअणाभोए । पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खा-

वए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व, दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरण-जुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरि-हामि ॥ ३२ ॥ इहलोए, परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइयारो, मा. मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ कायेण काइअस्स, पडिकमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु-सन्ना-कसाय-दंडे-सु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइयारो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सप-डिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं

उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कय-पावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि वहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचि-रेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा वहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ,

तिविहेण तिदंडवियाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय-पावपणासणीइ, भवसयसहस्स-महणीए । चउ-वीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चा-णमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीय-परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिय दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं काय-संफासं, खमणिज्जो मे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता ? जत्ता भे ! जवणिज्जं च भे ?

खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं आवस्सि आए पडिक्कमामि । खमासमणाणं राइआए आसा-यणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसाय-णाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमास-मणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं कायसंफासं । खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे ? राइवइक्कंता ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइ-आए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्-

डाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(अब "अब्भुट्ठिओमि" सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगाकर पढ़ें ।)

अब्भुट्ठिओ - सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरराइअं खामेउं ? 'इच्छं' खामेमि राइअं । जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय - परिहीणं, सुहुमं वा वायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(फिर नीचे मुताबिक दो वांदना देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-

जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे? राइ-वइक्कंता? जत्ता भे! जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! राइअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि. खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे? राइअ

वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब मस्तक ऊपर अंजलि लगा कर बोलना ।)

आयरिय - उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

(५ काउस्सग्ग आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे राइयो अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

"श्रीमहावीर स्वामी छम्मासी तप चिंतवण निमित्तं करेमि काउस्सग्गं" अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(काउस्सग्ग में श्रीमहावीर स्वामी कृत छम्मासी तपका चिंतवन करना। छह लोगस्स या चौवीस नवकार गिनना और जो पच्चक्खाण करना हो वह मन मे धार कर काउस्सग्ग पारना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल - सिज्जंस - वासुपुज्जं

च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय - रय - मला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(६ पच्चक्खाण आवश्यक)

(अब छट्ठा आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना, फिर नीचे मुजब दो वांदना देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे,

राइवइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिकमामि खमासमणाणं, राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंच मिच्छाए मणदुकडाए वयदुकडाए कायदुकडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइकम्मं पडिकमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तिसन्नय-

राए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

सकल-तीर्थ-नमस्कार ॥

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्तराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले ताराकाणां विमाने। पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसान्द्रान्धकारे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले हस्तिदन्ते, वक्खारे कूटनन्दी-श्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवन्ते। चैत्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥२॥ श्रीशैले विन्ध्यशृङ्गे विपुल-

गिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले । सह्याद्रौ वैजयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे देवकूटे विराटे । कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा । डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जङ्गले वा ढमाले, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥५॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौण्डे मुरण्डे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे । आर्द्रे माद्रे पुलिन्दे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ६ ॥ चम्पायां

चन्द्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चौज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम् । नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे । ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ८ ॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कौण्डले मानुषांके । इक्षूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम् । तेषां श्री-तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां

सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारी ॥ १० ॥

(पीछे)

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसायकरी पच्चक्खाण करूँ जी"

(ऐसा कह कर गुरुमुख से या वृद्ध साधर्मिक के मुख से या स्वयं स्थापनाचार्य के सामने अपनी इच्छानुसार नमुक्कारसहियं आदि का पचक्खाण कर ले।)

जो सज्जन चौदह नियम स्मरण नहीं करते उनके लिये 'नमुक्कारसहिअ' का पचक्खाण--

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरामि ।

जो सज्जन चौदह नियम प्रतिदिन स्मरण करते हैं उनके लिए 'नमुक्कारसहिअं' का पचक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं,

खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ।

(पोरसी का पच्चक्खाण करना हो तो 'नमुकारसहिअं' के स्थान पर 'पोरसी' कहो । और उपवास एकासनादि पच्चक्खाण करना हो तो एकसाथ लिखे हैं, वहां से देख लो पीछे–)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्यः ॥

(यहाँ पर स्त्रियाँ प्रतिक्रमण करती हों तो 'संसारदावानल' नीचे अनुसार कहे—)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं

गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाऽहिंसाविरलहरिसंगमागाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥३ ॥

(अगर पुरुष प्रतिक्रमण करते हों तो नीचे मुताबिक 'परसमयतिमिरतरणिं' की तीन गाथा कहें—)

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम् । रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसार - विहारकारि - दुरन्तभावारिगणा निकामम् । निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ सन्देहकारिकुनयागमरूढगूढ-संमोहपङ्कहरणामलवारिपूरम् । संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं, तित्थयराणं; सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं; सरणदयाणं, वोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत - चक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं; जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, वुद्धाणं वोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताण, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि

(अब खड़े होकर वोलना)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुव-सग्गवत्तियाए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरि-हंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुई कहना—)

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नन्द । नव करतनु निरुपम, नील वरण सुखकन्द ॥ अहि

लंछन सेवित, पउमावई धरणिंद । प्रह ऊठी प्रणमु नितप्रति पास जिणंद ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्म-लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार के दूसरी थुई पढ़ना-)

कुलगिरि वेयड्ढद, कणयाचल अभिगम । मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखठाम । भुवण-

सुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम । वंदें ते जिनवर, पूरो मुझ्झ मनकाम ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं, सणस्स सुरगणनरिंद-महियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ।

सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ५ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहना)

जिहां अंग इग्यारे, बार उपांग छ छेद । दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउ भेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त । सांभली सद्दहतां, छूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति।
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्ध-
माणस्स। संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं
वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसी-
हिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं
नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दोय,
वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठिसमा-
हिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-
एणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिस-
ग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसं-
चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-
संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अवि-
राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं

भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरा।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुई कहना—)

पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष। सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष॥ समरो जिन भक्ति-सूरि कहे इक चित्त। सुख सुजस समापे, पुत्र कलत्र बहु वित्त॥ ४॥

(अब नीचे बैठ कर बाँया घुटना खड़ा करके बोलना।)

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहि-दयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनाय-गाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवर-नाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं;

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं; सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहम-पुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजीमिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजीमिश्र' ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजीमिश्र' ॥ ३ ॥

(पूर्व में मुख कर पीछे उत्तर दिशा के सामने मुख करके तीन खमासमण देकर श्रीसीमंधरस्वामी का चैत्यवंदन करे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं, (सीमंधर युगमंधर, बाहु सुबाहु जाण । सुजात स्वयंप्रभ सातमा, ऋषभानन मन आण ॥ अनंत-वीर्य ने सूरप्रभ, विमल वज्रधर कहिए । चंद्रानन चंद्रबाहुजी, भुजंग नेमप्रभु लहिए ॥ १ ॥ ईश्वर श्रीवीरसेनजी, महाभद्र जिनदेव । देवजस अनंत वीर्यजी, सुरपति सारे सेव ॥ पंच विदेह विचरता ए, वीस जिनेसर जाण । कृपाचंद त्रिहुं काल में, नमता क्रोड कल्याण ॥ २ ॥)

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर - पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं

चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिद-याणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर - चाउरंत - चक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं; बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं; सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय - मव्वाबा-हमपुणराविति सिद्धिगइ - नामधेयं ठाणं संप-त्ताणं, नमो जिणाणं जियभयाणं ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविर-याणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

श्री सीमंधर - जिन - स्तवन ।

श्रीसीमंधर साहिवा, वीनतडी अवधार लालरे। परमपुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लालरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरू, भांगे सादि अनन्त लालरे । भापक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनन्त लालरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लालरे । पद पंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरण कमल पिंजर वसे, मुझ मन हंस नितमेव लालरे । चरण शरण मोहि आसरो, भव भव देवाधिदेव लालरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ संवत अढार सत्यासीये, उत्तम मास आसाढ लालरे । सुद दसमी सुभ वासरे, वीकानेर मझार लालरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लालरे । कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लालरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

कार्ती पूनम दश कोडसु ए, द्राविड वारिखिल्ल जाण
सिद्धिवधु रंगे वरया, कृपाचंद मन आण ॥८॥)

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।१।

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं; आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्म-वरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं; बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो

जिणाणं जिअभयाणं ॥६॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ-लोए अ । सव्वाइं ताइं वन्दे, इह संतो तत्थ संताइं ॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(श्री पुंडरीक गणधर नमुं, पुंडरगिरि सिणगार लालरे । पांच करोड मुनि परिवर्यो, कीधो अणसण सार लालरे ॥पुंड०॥१॥ आदिसर जिन उपदिसें, ए तीरथ परसाद लालरे । सिव कमला तुमें पामशो, सहु मेहा विखवाद लालरे ॥पुंड०॥२॥ तीरथ-पतिमां हुं अछुं, प्रथम तीरथ इम जाण लालरे । प्रथम सिद्ध सिद्धा-चले, तुम थास्यो महिराण लालरे ॥ पुंड० ॥ ३ ॥ मुनि

आणा आदरी, संलेखना चित्त लाय लालरे । चैत्री दिन सिवपुर लह्या, घाती कर्म खपाय लालरे ॥ पुंड० ॥ ४ ॥ यात्रा विधिसुं कीजिये, जिनजी दियो उपदेश लालरे । कृपाचन्द गिरि-राजनी, चाहे सेवा हमेश लालरे ॥ पुंड० ॥५॥)

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गा - णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुव-सग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं,

भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां एक नवकारका काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर श्रीसिद्धाचलजीकी थुई कहना।)

शत्रुंजयगिरि नमियें, ऋषभदेव पुंडरीक।
शुभतपनो महिमा, सुणि गुरुमुख निरभीक।
शुद्ध मन उल्लासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक।
करिये जिन आगम, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥

इति राइयप्रतिक्रमणविधिः ॥

अथ पडिलेहनविधिः ।

(अब स्थिरता हो तो नीचे लिखी विधि के अनुसार पडिलेहन करें । और स्थिरता न हो तो दृष्टि पडिलेहन तो अवश्य [1]करें ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहण संदिस्साउं ? 'इच्छं' ॥

[2]इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहण करूं ? 'इच्छं' ॥

(यहां मुँहपत्ति की पडिलेहन करें[1])—

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अंगपडिलेहण संदिसाउं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अंगपडिलेहण करूं ? 'इच्छं' ॥

(मुँहपत्ति, आसन, चरवला, धोती और कंदोरा की पडिलेहन करके फिर)

---

[1] कोई सामायिक पारने के बाद भी पडिलेहन करते हैं । [2] इच्छामि खमासमणो० इत्यादि संपूर्ण पाठ बोलना ।

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहण पडिलेहाओजी ।

(ऐसा बोलकर स्थानाचार्य की पडिलेहन करें । पीछे—)

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' ॥

(ऐसा कह कर यहाँ मुँहपत्ति पडिलेहना । पीछे—)

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहण संदिसाउं ? इच्छं' ॥

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहन करूं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कह कर कंबल वस्त्र आदि सब की पडिलेहन करें । पीछे पौषधशाला की प्रमार्जना करके काजा (कचरा) निरवद्य भूमि पर परठव कर नीचे लिखे अनुसार इरियावहियं करें ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरिया- वहियं पडिकमामि ? 'इच्छं' । इच्छामि पडिक-

मिउं, इरियावहिआए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे - ओसा-उत्तिंग - पणग-दग - मट्टी - मक्कडासंताणा-संकमणे जे मे जीवा विराहिया । एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं वि-सोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिस-ग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसं-चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्म-

अथ संध्याकालीन सामायिक लेने की विधि।

(दिनके अंतिम प्रहरमें पौषधशाला आदि में अथवा गृह के किसी एकान्त स्थानमें जाकर, उस स्थान का तथा वस्त्र का पडिलेहन करें। देरी हो गई हो तो दृष्टि पडिलेहन करें। साधुजी न हो तो तीन नवकार गिन कर स्थापना करे। पीछे स्थापनाचार्य के सामने बैठ कर, भूमि प्रमार्जन करके, बाँयी ओर आसन रखके और बाँयें हाथमें मुँहपत्ति लेकर नीचे का पाठ कहे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक लेवा मुँहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'॥

(ऐसा कहा कर मुँहपत्ति पडिलेहना, पीछे—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाउं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

स्थापनाचार्य स्थापन करने की विधि—

इस आकृति अनुसार दाहिने हाथको पुस्तक आदि की स्थापना के सम्मुख करके तीन नवकार पढ़े ।

(पृष्ठ—७६)

सामायिक उच्चरने की विधि—
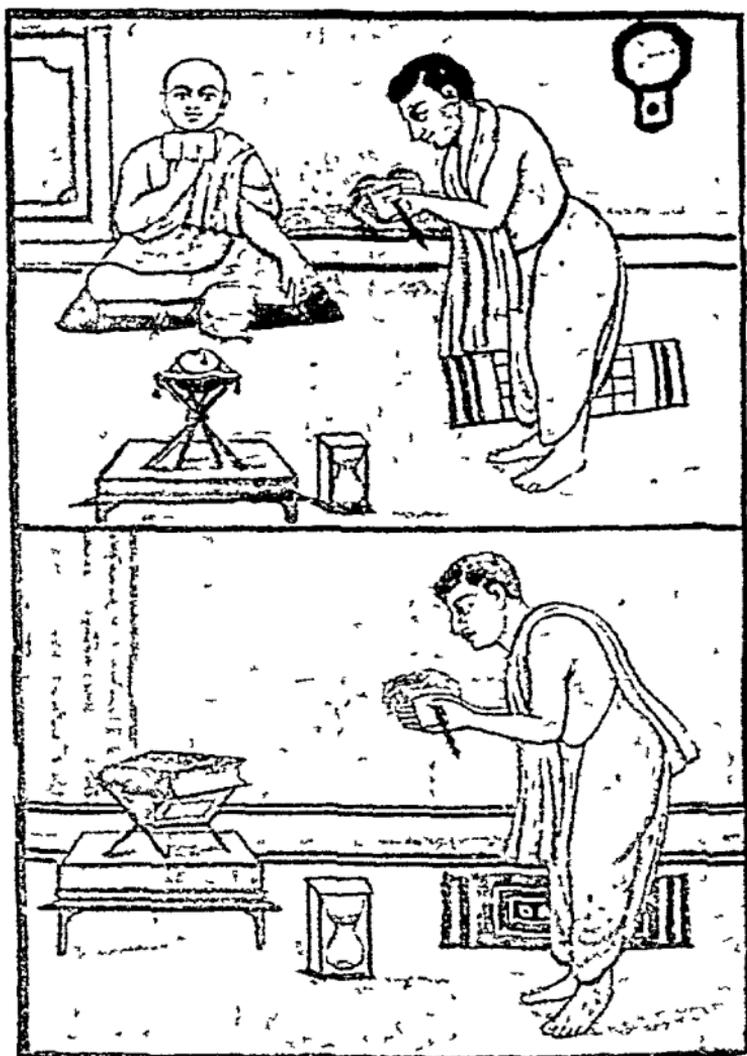
इस आकृति अनुसार खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी' ऐमा बोले तब गुरु 'करेमि भंते' उच्चरावे गुरु न होवे तो स्वयं उच्चरे (पृष्ठ-७७)

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? 'इच्छं' ॥

(खड़े होकर तीन नवकार गिने पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावो" (ऐसा बोल कर तीन बार "करेमि भंते" उच्चरे।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ (यह तीन बार कहना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? । 'इच्छं' । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंगपणग - दग - मट्टीमक्कडासंताणा - संकमणे ; जे

मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरि-हंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि॥

काउस्सग्ग करने की विधि—

इस आकृति अनुसार खड़े होकर अथवा बैठ करके काउस्सग्ग करें।

(पृष्ठ—७६)

(यहाँ पर एक लोगस्सका या चार नवकारका काउस्सग्ग करना, पार कर पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्म-लयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ॥

(अब नीचे बैठ कर मुँहपत्ति पडिलेहन करें और दो बार वांदणा दें ! यदि चउविहार उपवास हो तो मुँहपत्ति नहीं पडिलेहना और वाँदणा भी नहीं देना, परन्तु तिविहार उपवास हो तो मुँहपत्ति पडिलेहे, वांदणा नहीं दें ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसा-यणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालि-आए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,

वांदणा देने की विधि—

स्थापनाचार्य के सामने इस प्रकार वांदणा देवें।

(पृष्ठ—८०)

आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । "इच्छाकारि भगवन् ! पसाउ करी पच्चक्खाण करूँजी"।

(अब यथासक्ति पच्चक्खाण करना ।)

(१) चउविहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं, वोसिरामि ।

(२) दुविहार का [1]पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, दुविहं पि आहारं असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागा-रेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरामि ।

(एकासणा आयंबिल तिविहार उपवास आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना—)

---

[1] खरतरगच्छ की परम्परा मे दुविहार के पच्चक्खाण में कच्चे पानी के सिवाय और कुछ भी पीने की छूट नहीं है, और रात्रि में तिविहार के पच्चक्खाण भी नहीं होते ।

(३) पाणहार का पच्चक्खाण—

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि, अन्नत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वस-माहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ।

(नियम चितारने वाले देशाव० का पच्चक्खाण करे ।)

(४) देसावगासिय पच्चक्खाण—

देसावगासियं भोग - परिभोगं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, *सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि*

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सिज्झाय संदिस्साउं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सिज्झाय करूं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(कह कर खडे खडे आठ नवकार गिन कर पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणो संदिसाऊं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणो ठाउं ? 'इच्छं' ।

(अब आसन बिछा कर बैठ जाय और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोल कर वस्त्र ग्रहण करें ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पंगुरणं संदिसाउं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पंगुरणं पडिग्गहूं ? 'इच्छं' ।

(पीछे दो घडी [४८ मि०] स्वाध्याय करें या प्रतिक्रमण करें ।)

इति सन्ध्याकालीन - सामायिक विधिः ॥

चैत्यवंदन करने की विधि—

इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुँ ? 'इच्छं' ऐसा बोलकर 'जयतिहुअण' का चैत्यवंदन करें।

(पृष्ठ—८५)

दैवसिक - प्रतिक्रमण - विधि ।

(पहले विधिपूर्वक सामायिक लेकर तीस खमासमण देना—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं,

(बायाँ घुटना खड़ा कर जय तिहुअण का चैत्यवन्दन करें ।)

जय तिहुअण वरकप्परुक्ख ! जय जिण-धन्नंतरि !, जय तिहुअण कल्लाणकोस ! दुरि-अकरिकेसरि ! । तिहुअणजण-अविलंघिआण ! भुवणत्तयसामिअ !, कुणसु सुहाइ जिणेस ! पास थंभणयपुरट्ठिअ ! ॥१॥ तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्तइ, धण्ण - सुवण्ण - हिरण्णपुण्ण जण भुंजइ रज्जइ । पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास ! पसाइण, इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख ! सुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परि-जुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण खएण

खुराण नर सल्लिय सूलिण । तुह जिण ! सरण-रसायणेण लहु हुंति पुणराणव, जय धन्नंतरी ! पास ! मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जा-जोइस - मंत - तंत - सिद्धीउ अपयत्तिण । भुवण-ऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण । तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ । तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास ! निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपउत्तइ मंत - तंत - जंताइ विसुत्तइ ॥ चरथिरगरल-गहुग्ग - खग्ग - रिउवग्गवि गंजइ । दुत्थिअ-सत्थ- अणत्थ - घत्थ नित्थारइ दय करि । दुरियइ हरउ स पास देउ दुरियकरिकेसरि ॥५॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय, जय समत्थ परमत्थ-जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण ! भवियह भीम भवुत्थु भव अवणिंताणंतगुण ! तुज्झ-तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं; आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं; बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(अब खड़े होकर बोलना)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुव-सग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-लेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहि-ओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भग-वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुइ कहना—)

मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ।
सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी सुमाय ॥ मृग

नायक लंछन, सात हाथ तनु मान । दिन दिन सुखदायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय - वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउसग्ग करके दूसरी थुई कहे)

सुर नरवर किन्नर, वंदि पद अरविंद ।
कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥
भवियणने तारे, प्रवहण सम निशदिश ।
चौवीसे जिनवर, प्रणमुं विसवा वीस ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम - तिमिर - पडल- विद्धंसणस्स सुरगण-नरिंद-महियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण - पुक्खल- विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्न-किन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए, मेहाए, धिईए धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ५ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहना।)

अरथे करी आगम, भाख्या श्री भगवंत। गणधरने गुंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनन्त॥ सुरगुरु पण महिमा, कही न शके एकन्त। समरू सुखसायर, मन सुद्ध सूत्र सिद्धान्त॥ ३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं॥ ॥ १॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं॥ २॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्ध-

मणस्स । संसार - सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" पद कर चौथी थुई कहना—)

सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष । सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद । जंपे गुणगण इम, श्रीजिनलाभसूरींद ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ कर बाँया घुटना खडा कर बोलना ।)

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिससिहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग-हिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभ-यदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्म-नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर - चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवर - नाण - दंसणधराणं विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंत-मक्खय - मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ - नाम-

धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं।
जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए
काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण
वंदामि॥

(यहाँ चार बार एक एक 'खमासमण' देकर बोलना।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजी
मिश्र'॥ १॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजी
मिश्र'॥ २॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि वर्त्तमान गुरु
मिश्र'॥ ३॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजी
मिश्र'॥ ४॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(३ वंदन आवश्यक)

(अब नीचे बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना और नीचे मुताबिक दो बार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलन्ताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो,

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि।

(अत्र खड़े होकर बोलना।)

(४ प्रतिक्रमण आवश्यक)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो

आलोचना पाठ बोलने की विधि—

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियं आलोउं? इच्छं आलोएमि' इत्यादि पाठ बोलें।

(पृष्ठ—१००)

असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आलोयण पाठ।

आजुणा चार प्रहर दिवसमें मैंने जिन जीवों की विराधना की हो, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दोइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति के चौरासी लाख जीवयोनियों में से किसी जीव का मैंने हनन किया हो, कराया हो अथवा करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे

सब मन वचन और काया से तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नववां लोभ, दसवां राग, ग्यारहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति-अरति, सोलहवां परपरिवाद, सत्रहवां मायामृषा-

१ चोरासी लाख जीवाजोनी वर्णादि मूलभेद, कुलभेद.

सात लाख	पृथ्वीकाय	२०००	३५०	७ लाख
सात लाख	अप्काय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	तेउकाय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	वायुकाय	२०००	३५०	७ ,,
दस लाख	प्र०वनस्पति.	२०००	५००	१० ,,
चौद लाख	सा०वनस्पति.	२०००	७००	१४ ,,
दो लाख	दोइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	तेइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	चउरिन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
चार लाख	देवता	२०००	२००	४ ,,

वाद, अठारहवां मिथ्यात्वशल्य; इन अठारह पाप स्थानक में से किसी का मैंने सेवन किया हो, कराया हो, या करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सब मन, वचन, काया से तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्म की आशातना की हो, पन्द्रह कर्मादानों की आसेवना की, हो, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा की

चार लाख	नारकी	२०००	२००	४ लाख
चार लाख	तिर्यंच पं.	२०००	२००	४ ,,
चौद लाख	मनुष्य	२०००	७००	१४ ,,

प्रथम (५) पांच वर्ण हैं, उन्हें (२) दो गंध से गुणने से १० हुए, उन्हें (५) पांच रस से गुणने से ५० हुए, उन्हें (८) आठ स्पर्श से गुणने से ४०० हुए, उन्हें (५ आकृति) पांच संस्थान से गुणने से २००० हुए, उन्हें (३५० प्र.शांक) तीनसो पचास पृथ्वीकाय के मूल भेद से गुणने के बाद पृथ्वीकाय की कुल (७०००००) सात लाख जीवयोनि होती है। इसी प्रकार अन्य भी समझना। इति चोरासी लाख जीवयोनि भेद।

हो, और जो कोई परनिंदादिक पाप किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सब मन, वचन काया से देवसिक अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणा में आलोउं । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(नीचे बैठ कर दाहिना हाथ चरवले वा आसन पर रख कर सव्वस्स वि बोलना ।)

सव्वस्स वि देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! 'इच्छं' । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब दाहिना गोडा खडा करके 'भगवन् ! वंदित्तु सूत्र भणुं ? 'इच्छं' ऐसा कहे । पीछे तीन नवकार और तीन वार 'करेमि भंते०' इच्छामि ठामि० कह कर वंदित्तु० कहे ।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच-णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ।

वंदित्तु सूत्र बोलने की विधि—

इस आकृत्ति अनुसार दाहिना गोडा खड़ा करके 'वंदित्तु सूत्र' पढ़ें। (पृष्ठ १०५)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग - पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता - चरित्ते; सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदित्तु (श्रावकप्रतिक्रमण) सूत्र ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥

जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्स-

इआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥१०॥ बीए-
अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥
सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥१२॥
तइए अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूड-
तुलकूडमाणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥१४॥
चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे ।
चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं
॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्प-
सत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं
॥ १७ ॥ धण- धन्न - खित्त - वत्थू, रूप्प-सुवन्ने
अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि य,

पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोगपरिभोगे, वीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोलि - दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेवय दंत - लक्ख - रसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सर-दहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग - तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ।२४। ण्हाणुव्वट्टण - वन्नग - विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण - भोग-अइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए

निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ - वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसहविहिवि-वरीए, तइए, सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । काला-इक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव - चरण - करणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ - मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स

॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा - रवेसु सण्णा-कसायदंडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइ-आरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होय वंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससम-ज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलो-इअ निंदिअ य गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि वहुरओ होइ । दुक्खा-णमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा वहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरि-

ह्नामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीअपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ,

निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं; आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ! अणुजाणह मे मिउग्गहं; निसीहि;

अब्भुट्ठिओमि खामने की विधि—

गुरुमहाराज को अथवा स्यापनाचार्य को इस आकृति मुजब घुटने टेक करके और शिर झुका करके अब्भुट्ठिओमि खामे। (पृष्ठ—११३)

अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं; पडिक्क-मामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोव-याराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(इसके बाद स्थापनाचार्यजी को या गुरुमहाराज हों तो उनको घुटने टेक कर शिर झुका कर 'अब्भुट्ठिओ' खमावे)

अब्भुट्ठिओ सूत्र ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठि-ओमि, अब्भितर-देवसिअं खामेउं ? 'इच्छं', खामेमि देवसिअं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं,

भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(फिर दो वांदणा देवे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसफासं, खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,

आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ।

(अब खडे होकर मस्तक में अंजली लगाकर बोलना ।)

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म - निहिअ - निअ - चित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

(५ काउस्सग्ग आवशयक)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ

दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग - पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता - चरित्ते; सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स या आठ नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहना)—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय - वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्म-लयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे "पुक्खरवरदीवड्ढे" कहना।)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥

तम–तिमिर–पडल–विद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदम-हिअस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण–पुक्खल–विसाल–सुहावहस्स। को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥३॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्न-किन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए, मेहाए, धिईए धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ५ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिस-

ग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक 'लोगस्स' का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कहना)—

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं

नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ-दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं; सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एव-माइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं; झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर 'सुअदेवया' की थुई कहना ।)

सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा ।
श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेषश्रुतसम्पदम् ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, इवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कह कर 'खित्तदेवता-' की थुई कहना)—

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः। जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥१॥

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए

सव्वसाहूणं। एसो पंच-नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

(६ पच्चक्खाण आवश्यक)

('अब बैठ कर छठ्ठा आवश्यक की मुहपत्ति पहिलेहना, पीछे दो वंदना देना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं; निसीहि; अहो-कायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइ-

यारो कञ्रो तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं; निसीहि; अहो - कायं काय - संफासं, खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए; माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(पच्चक्खाण न किया हो तो यहां पर कर लेना चाहिये ।)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमो-ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(कह कर बाँया घुटना खड़ा कर पुरुष "नमोऽस्तु वर्द्ध-मानाय" कहे और स्त्रीयें 'संसारदावानल' की तीन थुइ कहे ।)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावाप्त - मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः-क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरतिसंगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥ कषाय - तापार्दित-जन्तु-निर्वृतिं, करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्र - मासोद्भव - वृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली - हरणे समीरम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनाम-सुरदानव-मान-वेन, चूलाविलोल - कमलावलि - मालितानि । संपूरिताभिनतलोक - समीहितानि, कामं नमामि

जिनराज-पदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदपद-वीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा-विरललहरीसंगमा-गाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं; आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदे-सयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्म-वरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदं-सणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं; तिन्नाणं तारयाणं; बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरि-सीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुण-

रे ॥भ०॥९॥ इत्यादिक बहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो । जिन प्रतिमा देखी नित नवलो, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥भ०॥ १० ॥ चिन्तामणि प्रभु पास पसाये, सरधा होजो सवाई । श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशे, श्रीजिनचन्द सवाई रे ॥भ०॥११॥

(ॐ वरकणय - संख - विद्रुम - मरगय - घण-सन्निहं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामर-पूइअं वंदे स्वाहा ॥ १ ॥)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्रीआचार्य जीमिश्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री उपाध्याय-जीमिश्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री सर्वसाधु-जीमिश्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? 'इच्छं', देवसिअ पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना, पश्चात् काउस्सग्ग पार कर प्रगट 'लोगस्स' पढ़ना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्म-लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! खुद्दोपद्दव - उड्डावण - निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना. पश्चात् काउस्सग्ग पार कर प्रकट 'लोगस्स' कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं

नाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं; जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति — सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

भगवन् ! जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं। विसहरविसनिन्नासं; मंगल - कल्लाण-

आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी - दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख - दोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि - कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं; भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गा - णुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

आरुग्गवोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री चोरासी गच्छ शृंगार-हार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार नवकार का काउस्सग्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । श्री चौरासी गच्छ शृङ्गार-हार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्री जिनकुशल-सूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं; जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि; ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार नवकार का काउस्सग्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं

च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग - बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(अब बाँया गोडा ऊँचा करके 'चैत्यवंदन' करे।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं ।

चउक्सायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमु-

सुमूरणू । सरसपिअंगुवन्नुगयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति-कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ । नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउं ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; आइगराणं-तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-

नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर - चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवर - नाण - दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंत-मक्खय - सव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

भगवन् ! जावंत के वि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ ! सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य : ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिणचंद ॥ ५ ॥

जय वीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अथ लघुशान्तिस्तवः ।

शान्तिं शान्ति-निशान्तं, शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य । स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्ति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा - सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामर - सुसमूह - स्वामिक-संपूजिताय निजिताय । भुवनजनपालनो-द्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरि-तौघनाशन - कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय । दुष्ट-ग्रहभूत - पिशाच - शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र - प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते जनहितमिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥ भवतु नमस्ते भगवति ! विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! । अपराजिते ! जगत्यां,

जयतीति जयावहे ! भवति ॥७॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे । साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे ! जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृतिनिर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् । अभय - प्रदाननिरते ! नमोऽस्तु स्वस्ति-प्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे ! नित्यमुद्यते ! देवि ! । सम्यग्दृष्टीनां धृति - रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिन-शासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जन-तानाम् । श्रीसम्पत्कीर्तियशो - वर्द्धनि ! जय-देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधर-दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः । राक्षसरिपुगणमारी,-चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरुकुरु त्वम् ॥ १३ ॥ भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति-तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जननाम् । ओमिति

नमो नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शितमंत्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः । सलिलादिभय-विनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् । स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १६ ॥

(प्रतिक्रमण में दीपक बीजली आदि अग्नि का प्रकाश अपने शरीर पर आगया हो, या वरसाद आदि के पानी की बूँद लग गई हो इत्यादि कोई दोष लगा हो तो, 'इरियावहियं०' तस्स उत्तरी०' 'अन्नत्थ०' कह कर एक 'लोगस्स' का काउस्सग्ग करके, प्रगट 'लोगस्स' कह कर पीछे सामायिक पारें।)

सामायिक पारने की विधि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ।

(ऐसा कहकर मुँहपत्ति की पडिलेहन करें । पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? 'यथा-शक्ति !'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारेमि 'तहत्ति' ।

(कहकर आधा अंग नमा कर 'तीन नवकार' गिने । पीछे शिर नमा कर दाहिना हाथ नीचे स्थापन करके 'भयवं दसण्णभद्दो' बोले ।)

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थुलभद्द वइरो य ।
सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥

साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतय-मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएणं कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसह-संठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोद्धव्वो,सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधिसे करते हुये अविधि आशातना लगी हो, दश मनका, दश वचनका, बारह कायका, इन बत्तीस दूषणों में जो कोई दूषण लगा हो, उन सबका मन, वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

इति देवसिक - प्रतिक्रमणविधिः समाप्तः

शमानुशासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति।
सम्राधसीश्वरनरः स जीयाद्, युगप्रधानो, जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥

॥ इति संध्याकालीन - सामायिक - प्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥

अथ
पाक्षिक - चातुर्मासिक - सांवत्सरिक-प्रतिक्रमण विधिः ।

दिन के अन्तिम प्रहर में पौषधशाला आदि किसी एकान्त स्थान में जाकर, प्रथम सामायिक लेने के लिए उस स्थान का तथा वस्त्र का पडिलेहन करें । पीछे मुनिराज न हों तो उच्च स्थान पर पुस्तक या नवकारवाली आदि रख कर 'तीन नवकार' पढ़ कर स्थापनाजी स्थापन करें । बाद में (पृ० २ में लिखे अनुसार) तीन खमासमण देकर 'इच्छकार भगवन् !०' (सुखपृच्छा) पूछ कर 'अब्भुट्ठिओमि०' खमाकर श्रीगुरु महाराज को या स्थापनाचार्यजी को वंदना करे । पीछे स्थापनाचार्य के सामने उकडु आसन (दोनों पैर पर) बैठ कर, भूमि प्रमार्जन करके बायें ओर आसन रख कर, चरवला मुँहपत्ति हाथ में लेकर (सामायिक लेवे) खमासमण दे—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुँहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कहकर मुँहपत्ति पडिलेहना, पचीस बोल कहकर पीछे—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसावुं ?'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं 'इच्छं' ॥

(हाथ जोड़ मस्तक नमा कर तीन नवकार गिने, पीछे—)

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावो जी" ॥

(ऐसा बोलकर गुरु महाराज न होवे तो स्वयं तीन बार 'करेमि भंते' कहें ।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? 'इच्छं' । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग - पणग - दग - मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया । एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-

संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां पर एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट 'लोगस्स' कहना । —)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल - सिज्जंस - वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ; विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय - वंदिय-महिया;

अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना । तिविहाहार उपवास, आयंबिल, एकासणा आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना ।)

इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी ॥

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

(पाणी बिलकुल न पीना होवे तो चउविहाहार पच्चक्खाण करना ।)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउविहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

(केवल पानी पीना होवे तो दुविहाहारपच्चक्खाण करना ।)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिस्सावुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? 'इच्छं' ॥

(इस प्रकार कहकर आठ नवकार गिनना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे संदिस्सावुं 'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। वेसणे ठाउं ? 'इच्छं' ॥

(अब आसन बिछा कर बैठ जाय और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोल कर वस्त्र ग्रहण करें।)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरणो संदिस्सावुं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरणो पडिग्गहुँ ? 'इच्छं' ।

(अब नीचे लिखे अनुसार प्रतिक्रमण करें । प्रथम तीन खमासमण देकर चैत्यवंदन करें अर्थात् 'जय तिहुअण०' बोले ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं' ।

जय तिहुअणस्तोत्र ॥

जय तिहुअण वरकप्परुक्ख! जय जिण! धन्नंतरि!,
जय तिहुअण-कल्लाण-कोस! दुरिअकरि-केसरि! ।
तिहुअण-जण-अविलंघिआण! भुवणत्तयसामिअ!,
कुणसु सुहाइं जिणेस! पास! थंभणयपुरट्ठिअ! ॥१॥

तइ समरत लहंति झत्ति वर-पुत्त-कलत्तइ,
धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण जण भुंजइ रज्जइ ।

पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास ! पसाइण,
इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख! सुक्खइ कुण मह जिण।२।

जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण,
चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण।
तुह जिण ! सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जय धन्नंतरि!पास! मह वि तुह रोगहरो भव ॥३॥
विज्जा - जोइस - मंत - तंत - सिद्धीउ अपयत्तिण,
भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअण कल्लाण-कोस! तुह पास निरुत्तउ॥४॥
खुद्द पउत्तइ मंत - तंत - जंताइं विसुत्तइ,
चर - थिर - गरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउवग्ग वि गंजइ।
दुत्थिअ-सत्थ अणत्थ - घत्थ नित्थारइ दय करि,
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करि-केसरि ॥ ५ ॥
तुह आणा थंभेइ भीम - दप्पुद्धुर - सुरवर,
रक्खस - जक्ख- फणिंदविंद - चोरानल - जलहर।

जल - थलचारि रउद्द - खुद्द - पसु - जोइणि जोइय,
इय तिहुअण अविलंघि आण जय पास! सुसा-
मिय ॥६॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भर-
निब्भर, रोमं-चंचिय- चारुकाय किन्नर-नर सुरवर।

जसु सेवहि कम कमल जुयल पक्खालिय-कलिमलु,
सो भुवणत्तय सामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥७॥

जय जोइय मण कमल भसल! भयपंजर कुंजर!,
तिहुअण जण आणंद चंद! भुवणत्तय दिणयर!।
जय मइ मेइणि वारिवाह! जय जंतु पियामह!,
थंभणयट्ठिय! पासनाह! नाह त्तण कुण मह ॥८॥

बहुविह वन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहिं,
मुक्ख धम्म कामत्थ काम नर नियनिय सत्थिहिं।

जं ज्झायहि बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ,
सो जोइय मण कमल भसल सुहु पास पवद्धउ॥९॥

भय विब्भल रण झणिर दसण थरहरिय सरीरय,
तरलिय नयण विसुन्न सुन्न गग्गर गिर करुणय।

तइ सहसत्ति सरंत हुंति नर नासिय गुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइ पास!भयपंजर कुंजर! ।१०।

पइं पासि वियसंत नित्त पत्तंत पवित्तिय—
बाह पवाह पवूढ रूढ दुहदाह सुपुलइय ।
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुरनर,
इय तिहुअण आणंदचंद!जय पास!जिणेसर ।११।

तुह कल्लाण - महेसु घंट टंकारव पिल्लिय,
वल्लिर मल्ल महल्ल भत्ति सुरवर गंजुल्लिय ।
हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणे वि महूसव,
इय तिहुअण आणंद चंद जय पास!सुहुब्भव ।१२।
निम्मल केवल किरण नियर विहुरिय तमपहयर !,
दंसिय सयल पयत्थ सत्थ ! वित्थरिय पहाभर !।
कलि कलुसिय जण घूयलोयलोयणह अगोयर!,
तिमि रइ निरु हर पासनाह!भुवणत्तय दिणयर!।१३।

तुह समरण जलवरिस-सित्त माणव मइमेइणि,
अवरावर-सुहु मत्थ बोह कंदल दल रेहिणि।
जायइ फल भर भरिय हरिय दुहदाह अणोवम,
इय मइ मेइणि वारिवाह दिस पास मइं मम ।१४।
कय अविकल कल्लाण वल्लि उल्लुरिय दुहवणु,
दाविय सग्ग-पवग्गमग्ग दुग्गइ गम वारणु।
जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजंतु पियामहु ।१५।
भुवणा रण्ण निवास-दरिय-पर दरिसण देवय,
जोइणि पूयण खित्तवाल खुद्दा सुर पसुवय।
तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंठुलु चिट्ठहि,
इय तिहुअण वण सीह!पास!पावाइं पणासहि ।१६।
फणि फण फार फुरंत रयण कर रंजिय नहयल
फलिणी कंदल दल तमाल नीलुप्पल सामल!।
कमठासुर उवसग्ग वग्ग संसग्ग अगंजिय!,
जय पच्चक्ख!जिणेस!पास!थंभणय पुरट्ठिय! ।।१७।।
मह मणु तरलु पमाणु नेय वायावि विसंठुलु,
नेय तणुरवि अविणय सहावु अलस विह लंघलु।

तुह माहप्पु पमाणु देव ! कारुण्ण पवित्तउ,
इय मइ मा अवहीरि पास! पालिहि विलवंतउ ।१८।
किं किं कप्पिउ न य कलुणु किं किं व न जंपिउ,
किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव ! दीणय मव लंबिउ ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहि दुहत्तिहि,
तह वि न पत्तउ ताणु किं पि पइ पहु ! परिचत्तिहि१६
तुहु सामिउ तुहु मायबप्पु तुहु मित्त पियंकरु,
तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि ताणु तुहु गुरु खेमंकरु ।
हउं दुह भर भारिउ वराउ राउ निब्भग्गह,
लीणउ तुह कम कमल सरणु जिण!पालहि चंगह॥
पइ कि वि किय नीरोय लोय कि वि पाविय सुहसय,
कि वि मइमंत महंत के वि कि वि साहिय सिवपय।
कि वि गंजिय रिउवग्ग के वि जस धवलिय भूयल,
मइ अवहीरहि केण पास ! सरणागय वच्छल!२१
पच्चु वयार निरीह ! नाह निप्फन्न पओयण !,
तुह जिणपास ! परोवयार करणिक्क परायण ! ।
सत्तु मित्त सम चित्त वित्ति! नय निंदय सम मण!,
मा अवहीरि अजुग्गओ वि मइं पास निरंजण! ।२२।

हउ बहुविह दुह तत्त गत्त तुह दुह नासण परु,
हउ सुयणह करुणिक्क ठाणु तुहु निरु करुणायरु।
हउ जिण पास! असामि सालु तुहु तिहुअण सामिय
जं अवहीरहि मइ झखंत इय पास! न सोहिय।२३।

जुग्गाऽजुग्ग विभाग नाह! न हु जोयहि तुह सम,
भुवणुवयार सहाव भाव करुणा रस सत्तम।
समविसमइं किं घणु नियइ भुवि दाह समंतउ,
इय दुहिबंधव! पासनाह! मइ पाल थुणंतउ।२४।

न य दीणह दीणयं मुयवि अन्नु वि कि वि जुग्गय,
जं जोइ वि उवयारु करहि उवयारसमुज्जय!।
दीणह दीणु निहीणु जेण तइ नाहिण चत्तउ,
तो जुग्गउ अहमेव पास पालहि मइं चंगउ॥२५॥

अह अन्नु वि जुग्गय-विसेसु किवि मन्नहि दीणह,
जं पासि वि उवयारु करइ तुहु नाह समग्गह।
सुच्चिय किल कल्लाणु जेण जिण! तुम्ह पसीयह,
किं अन्निण तं चेव देव! मा मइ अवहीरह॥२६॥

तुह पत्थण न हु होइ विहलु जिण जाणउ किं पुण,
हउ दुक्खिय निरु सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमण ।
तं मन्नउ निमिसेण एउ एउ वि जइ लब्भइ,
सच्चं जं भुक्खिय-वसेण किं उंबरु पच्चइ ॥२७॥

तिहुअण सामिय! पासनाह! मइ अप्पु पयासिउ,
किज्जउ जं नियरूव सरिसु न मुणउ बहु जंपिउ।
अन्नु न जिण जग्गि तुह समो वि दक्खिन्नु दयासउ,
जइ अवगन्नसि तुह जि अहह कह होसु हयासउ।२८।

जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलवियउ,
तुवि जाणउ जिणपास तुम्हि हउँ अंगीकरिउ ।
इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु,
रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥२६॥

एह महारिय जत्त देव इहु न्हवण महूसउ,
जं अणलिय गुण गहण तुम्ह मुणिजण अणिसिद्धउ।
एम पसीदसु पासनाह थंमणयपुरट्ठिय !,
इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ अणिंदिय ।३०।

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतय सुहफलय, जय समत्थ - परमत्थ जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु । जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण, भवियह भीम भवुत्थु भव अवणिंताणंतगुण, तुज्झ तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; आइगराणं-तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर - पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्म-सारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवर नाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं; जिणाणं, जाव-याणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं । सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति

सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(अब चरवला मुँहपत्ती लेकर खड़े होकर बोलना)

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुव-सग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहं-

ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर पहली थुई करना।)

द्रें द्रें कि धपमप, धुधुमि धों धों, ध्रसकि धरधपधोरवं। दोंदोंकि दों दों, द्राग्डदि द्राग्डदिकि, द्रमकि द्रण रण द्रेणवं॥ झझिंझूँकि झूँ झूँ झणण रण रण, निजकि निज जन रञ्जनम्। सुर शैल शिखरे, भवतु सुखदं पार्श्व जिनपतिमज्जनम् ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं

नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-
माणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ; विहुयरयमला
पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-
यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय - वंदिय-महिया,
जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-
लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्म-
लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागर-
वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउ-
स्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कार-
वत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्ति-
आए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए,
धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
का उस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-
एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-
ग्गेणं, भमलीए पित्त-मुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं

अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(यहाँ पर एक नवकारका काउस्सग्ग करने के बाद दूसरी थुई कहना—)

कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगडदां, धुधुकि धुटनट पाटवं । गुणगुणण गुणगण, रणकि णें णें, गुणण गुण गण गौरवम् ॥ झझि झें कि झें झें, झणण रण रण, निजकि निज जन सज्जनाः । कलयंति कमला, कलित कल मल, मुकलमीश-महे जिनाः ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहि-यस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स

॥२॥ जाइ-जरामरण- सोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमार्य ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणा, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविरा-

हिश्रो हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ८ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना ।)

ठकि ठें कि ठें ठें, ठर्हि ठर्हिक, ठहि पट्टास्ताड्यते । तललोंकि लोंलों त्रें पि त्रें पिनि, डेंपि डेंपिनि वाद्यते । ॐ ॐ कि ॐ ॐ थोंगि थोंगिनि, धोंगिं धोंगिनि कलरवे । जिनमतमनंतं महिम तनुतां, नमति सुरनर मुच्छवे ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥

चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

चेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुइ कहना ।)

खुंदांकि खुंदां, खुखुड्दि खुंदां, खुखुड्दि दों दों अंबरे । चाचपट चचपट रणकि णें णें, डणण डें डें डंवरे । इह सरग मप धुनि, निधप-

मग रस, ससस ससमुर-सेविता। जिननाट्यरंगे, कुशल मुनिशं, दिशतु शासनदेवता ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ कर बायां घुटना खड़ाकर 'नमोऽत्थुणं' बोलना।)

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं; ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं; धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत - चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं; बुद्धाणं वोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ - नामधेयं ठाणं संप-

त्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(यहां चार बार एक एक 'खमासमण' देकर 'श्री आचार्यजी मिश्र' आदि एक एक पद कहना। जैसे—)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। 'श्री आचार्य जी मिश्र॥'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। 'श्री उपाध्याय जी मिश्र॥'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। वर्त्तमान गुरु···· मिश्र॥'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। श्री सर्वसाधुजी मिश्र॥'

(ऐसे कह कर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रख कर वांया हाथ मुँहपत्ति सहित मुखके आगे रखकर सिर नीचे झुका कर 'सव्वस्स वि' का पाठ बोलना ।)

सव्वस्स वि देवसिअ-दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब खडे होकर बोलना ।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो; अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो; नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते; सुए, समाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं

सिक्खावयाणं; बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं, भमलीए पित्त-मुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

('आजुगा चार प्रहर दिवसमें' का पाठ मन में चिन्तन करे या आठ नवकार का काउस्सग्ग करे, पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहे।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ; विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय - वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना और नीचे मुताबिक दो बार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहिं;

अहोकायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए; आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स *खमासमणो ! पडिक्कमामि*, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि: अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं,

पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खडे होकर बोलना ।)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? देवसिअं आलोउं '? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचरहमणुव्वयाणं, तिण्हं, गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं, वारसविहस्स, सावग-

धम्मस्स; जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आजुणा चार प्रहर दिवस में मैंने जिन जीवों की विराधना की हो, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दो इंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाखमनुष्य, एवं चार गति के चोरासी लाख जीवायोनियोंमें से किसी जीवका मैंने हनन किया हो, कराया हो अथवा करते हुए का अनुमोदन किया हो, ये सब मन वचन और कायासे तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

पहले प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया, नववां लोभ, दशवां राग, ग्याहवां द्वेप, वारहवां कलह, तेरहवां

अभ्याख्यान, चौदहवां पैशून्य, पंद्रहवां रति अरति, सोलहवां पर-परिवाद, सत्तरहवां मायामृषा-वाद, अठारहवां मिथ्यात्व-शल्य, इन अठारह पाप-स्थानक में से किसी का मैंने सेवन किया हो, कराया हो, अथवा करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सब मन, वचन, और कायासे तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देवगुरु धर्म की आशातना की हो । पंद्रह कर्मादानों की आसेवना की हो । राज-कथा, देश-कथा, स्त्री-कथा, भक्त-कथा की हो और जो कोई पाप परनिन्दादि किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सब मन-वचन कायासे देवसिक अतिचार आलोयणा करके पडिक्कमण में आलोउं । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं । तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

(अब नीचे बैठ कर, दाहिना घुटना खड़ा करके 'भगवन् सूत्र भणुं ? इच्छं,' ऐसा कहे। पीछे तीन नवकार और तीन बार 'करेमि भंते' कहे।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिकमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ

उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदित्तु - श्रावक - प्रतिक्रमणसूत्रम् ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग - धम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे

निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभि-ओगे अ निओगे,पडिकमे देवसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिं-गीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिकमे देवसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं. पडिकमे देवसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलग-पाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइ-भारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडि-कमे देवसिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि परि-थूलगअलिअवयणविरईओ। आयरिअप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूड - लेहे अ। बीअ-वयस्सइआरे, पडिकमे देवसिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि थूलग - परदव्व - हरण - विरईओ। आयरिअमप्प-

सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ । कूड-तुलकूड-माणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमण-विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अप्परिग्गहिआ इत्तर, अणंग-विवाह-तिव्व अणुरागे । चउत्थ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धण खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ । उवभोग-परीभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छो-सहिभक्खणया, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥२१॥

इंगाली-वण-साडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत - लक्ख - रस - केस - विस-विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणकम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण - वन्नग, विलेवणे सद्द - रूव - रस-गंधे । वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइय-वितह-कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गल-क्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसहविहिविवरीए, तइए

सिक्खावए निंदे ॥ २६ ॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव। कालाइक्कम-दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहि-एसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणु-कंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण-करण-जुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कम्मे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्नाकसाय-दंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं

उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तंच गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं

तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। देवसिय आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

(यहां [1]पाक्षिक मुहपत्ति पडिलेहना । बाद दो वांदणा देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे [2]पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए,

१ चउमासिकप्रतिक्रमण में 'चउमासी' और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरी' बोलना चाहिये । २ चउमासीप्रतिक्रमण में "चउमासीओ" संवच्छरीप्रतिक्रमण में "संवच्छरो" इस प्रकार बोलना ।

जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब गुरु कहे कि— "पुण्यवंतो देवसिके स्थानके पाक्खिक भणजो, छींक जयणा करजो, मधुर स्वरे पडिकमजो, खांसे तो विशुद्ध खांसजो मांडल माहिं सावचेत रहेजो" इस प्रकार गुरु के कहने बाद सब 'तहत्ति' कहे और खड़े होकर 'अब्भुट्ठिओ' खामे)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भितर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, पन्नरसण्हं दिवसाणं पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं पर पत्तिअं भत्ते, पाणे विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

चउमासी-प्रतिक्रमण में "चउमासिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि चउमासिअं चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसोत्तरसयं राइंदिअसाणं" इस प्रकार बोलना, और संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरिअं खामेउ ? इच्छं. खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं, तिन्निसयसट्ठि राइंदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिए ।

(अब खड़े होकर बोलें—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिअं आलोउं ? इच्छं । आलोएमि । जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तिणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? पक्खिय अतिचार आलोउं ? 'इच्छं' ।

(ऐसा कहकर पक्खिय अतिचार कहे—)

॥ अथ पाक्षिक अतिचार ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य

विरियंमि । आयरणं आयारो, इअ एमो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांचों आचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सव मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचार के आठ अतिचार—काले विणए वहुमाणे, उवहाणे तह य निण्हवणे । वंजण अत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो" ॥२॥ ज्ञान नियमित वक्त में पढ़ा नहीं । अकाल वक्त में पढ़ा । विनय रहित, वहुमान रहित, योगोपधान रहित पढ़ा । ज्ञान जिससे पढ़ा उससे अतिरिक्त को गुरु माना या कहा । देववंदन, गुरुवंदन करते हुए तथा प्रतिक्रमण, सज्झाय पढ़ते या गुणते अशुद्ध अक्षर कहा । कानामात्रा न्यूनाधिक कही, सूत्र असत्य कहा, अर्थ अशुद्ध किया, अथवा सूत्र और अर्थ दोनों असत्य (झूठे) कहे ।

पढ़कर भूला, असज्झाय के समय में थविरावली, प्रतिक्रमण उपदेशमाला आदि सिद्धान्त पढ़ा। अपवित्र स्थान में पढ़ा, या विना साफ किये घृणित (खराब) भूमि पर रखा। ज्ञान के उपकरण पाटी, तखती, पोथी, ठवणी, कवली माला पुस्तक रखने की रील, कागज कलम दवात आदि के पैर लगा, थूक लगा, अथवा थूक से अक्षर मिटाया, ज्ञान के उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, या पास में लिये हुए आहार निहार किया, ज्ञानद्रव्य भक्षण करने वाले की उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्य की सारसंभाल न की, उल्टा नुकसान किया, ज्ञानवंत के ऊपर द्वेष किया, ईर्षा की तथा अवज्ञा आशातना की, किसी को पढ़ने गुणने में विघ्न डाला, अपने जानपने का मान किया। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान, इन पाचों ज्ञानों में श्रद्धा न की। गूँगे तोतले की हँसी की, ज्ञान में कुतर्क की, ज्ञान की विपरीत प्ररूपणा की।

इत्यादि ज्ञानाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

दर्शनाचार के आठ अतिचार– "निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठि अ। उववूह थिरीकरणे वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥३॥ देवगुरुधर्ममें निःशंक न हुआ, एकांत निश्चय न किया। धर्मसंबंधी फलमें संदेह किया। चारित्रवान साधु साध्वी की जुगुप्सा निंदा की। मिथ्यात्वियों की पूजा प्रभावना देखकर मूढदृष्टिपना किया। कुचारित्रीको देखकर चारित्रवाले पर भी अभाव हुआ। संघमें गुणवान् की प्रशंसा न की। धर्म से पतित होते हुए जीव को स्थिर न किया, देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य की हानि होते हुए उपेक्षा की। शक्ति होने पर भले प्रकार सार-संभाल न की। साधर्मी से कलह क्लेश करके कर्म-

बंधन किया। मुखकोश बांधे विना वीतराग देवकी पूजा की। धूपदानी खसकूंची, कलश आदि से प्रतिमाजी को ठवका लगाया, जिनबिंब हाथ से गिरा। श्वासोच्छ्वास लेते आशातना हुई। जिनमंदिर तथा पौषधशालामें थूका, तथा मलश्लेष्म किया, हांसी मश्करी की, कुतूहल किया। जिनमंदिर संबंधी चौरासी आशातनाओं में से और गुरु महाराज संबंधी तेतीस आशातनाओं में से कोई आशातना हुईहो। स्थापनाचार्य हाथ से गिरे हों या उनकी पडिलेहन न की हो, गुरु के वचनको मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्षदिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते या अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

चारित्राचार के आठ अतिचार—"पणिहाण जोगजुत्तो पंचहिं समईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो" ॥४॥ ईर्या-

समिति, भाषासमिति, एषणासमिति आयाण-भंडमत्त-निक्षेपणा-समिति और परिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति ये आठ प्रवचन माता रूप पांच समिति और तीन गुप्ति सामायिक पौषधादिकमें अच्छी तरह पाली नहीं। चारित्राचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

विशेषतः श्रावक धर्मसंबंधी श्रीसम्यक्त्व मूल बारह व्रत, सम्यक्त्व के पांच अतिचार—'शंका कंख विगिच्छा०' शंका श्रीअरिहंत प्रभुके बल अतिशय ज्ञानलक्ष्मी गांभीर्यादिगुण शाश्वती प्रतिमा, चारित्रवान् के चारित्र में तथा जिनेश्वर-देव के वचन में संदेह किया। आकांक्षा—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड़, गूगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नवग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव,

वाली, मातामसानी, आदिक, तथा, देश, नगर, ग्राम, गोत्रके जुदे-जुदे देवादिकों का प्रभाव देख-कर, शरीरमें रोगांतक कष्ट आनेपर इहलोक परलोक के लिये पूजा मानता की। बौद्ध, सांख्या-दिक सन्यासी, भगत, लिंगिये, योगी. फकीर, पीर इत्यादि अन्य दर्शनियों के मंत्र यंत्र के चम-त्कार देखकर परमार्थ जाने विना मोहित हुआ। कुशास्त्र पढ़ा, सुना, श्राद्ध, संवत्सरी, होली, राख-ड़ीपूनम (राखी,) अजा एकम, प्रेतदूज, गौरी तीज, गणेशचौथ, नागपंचमी, स्कंदषष्ठी, झीलणा छठ, शीलसप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनौमी, विजया-दशमी, व्रतएकादशी, वामनद्वादशी, वत्सद्वादशी-धनतेरस, अनंत चौदश, शिवरात्रि, कालीचउदश, अमावस्या, आदित्यवार उत्तरायण याग भोगादि किये कराये, करते को भला माना। पीपल में पानी डाला डलवाया, कुंआ, तलाव, नदी, द्रह, बावड़ी, समुद्र, कुंड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान तथा

दान किया, कराया अनुमोदन किया । ग्रहण, शनिश्चर, माघमास, नवरात्रि का स्नान किया । नवरात्रि व्रत किया । अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये कराये । वितिगिच्छा—धर्मसंबंधी फलमें संदेह किया । जिन-वीतराग अरिहंत भगवान् धर्मके आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातारि इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा न की । इहलोक परलोक संबंधी भोगवांछाके लिए पूजा की । रोग आतंक कष्टके आनेपर क्षीण वचन बोला । मानता मानी । महात्मा महासती के आहार पानी आदिकी निन्दा की । मिथ्यादृष्टिकी पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की । प्रीति की । दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना । मिथ्यात्वको धर्म कहा । इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

पहले स्थूल प्राणातिपात—विरमणव्रतके पांच अतिचार–'वह बंध अविच्छेए०' द्विपद चतुष्पद आदि जीवको क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांधा, अधिक बोझ लादा। निर्लाछन कर्म—नासिका छिदवाई, कर्णछेदन करवाया, खस्सी किया। दाना, घास, पानीकी समय पर सार संभाल न की, लेन देनमें किसीके बदले किसीको भूखा रखा, पास खड़ा होकर मरवाया, कैद करवाया। सड़े हुए धान को बिना शोधे काममें लिया, पिसवाया, धूपमें सुकाया। पानी जयणासे न छाना। ईंधन, लकड़ी, उपले, गोहे आदि बिना देखे वाले। उसमें सर्प, बिच्छू, कानखजूरा, कीड़ी, मकोडी, सरोला, माकड़, जुआ, गिगाड़ा आदि जीवों का नाश हुआ। किसी जीव को दबाया। दुःखी जीवको अच्छी जगह पर न रखा। चींटी (कीड़ी) मकोड़ीके अंडे नाश किये, लीख फोड़ी, दीमक, कीडी मकोडी, घीमेल, कातरा, चूड़ेल, पतंगिया, देडका,

अलसीया, ईअल, फूंदा, डांस, मसा, मगतरां, माखी, टीडी प्रमुख जीवोंका नाश किया। चील्ह, काग, कबूतर, आदिके रहने की जगह का नाश किया। घोंसले तोड़े। चलते फिरते या अन्य काम काज करते निर्दयपना किया। भली प्रकार जीवरक्षा न की। विना छाने पानी से स्नानादि काम काज किया। चारपाई, खटोला, पीढ़ा, पीढ़ी आदि धूपमें रखे। डंडे आदिसे झड़काये। जीवकुल—जीवयुक्त जमीनको लीपी। दलते, कूटते, लीपते या अन्य कुछ काम काज करते जयणा न की। अष्टमी चोदश आदि तिथिका नियम तोड़ा। धूनी करवाई, इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रतके पांच अतिचार—'सहसा-रहस्सदारे०' सहसात्कार—

बिना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आल-कलंक दिया। स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रकट की, अथवा अन्य किसीका मंत्र भेद मर्म प्रकट किया। किसी को दुःखी करने के लिये झूठी सलाह दी। झूठा लेख लिखा, झूठी गवाही दी। अमानत में खयानत की। किसीकी धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी। कन्या गौ भूमि संबंधी लेन देनमें लड़ते झगड़ते वादविवाद में मोटा झूठ बोला। हाथ पैर आदिकी गाली दी। मर्म वचन बोला, इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार—'तेनाहडप्पओगे०' घर बाहिर खेत खलामें बिना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा आज्ञा बिना अपने काममें ली, चोरीकी

वस्तु ली, चोरको सहायता दी। राज्य-विरुद्ध कर्म किया। अच्छी बुरी, सजीव निर्जीव, नई पुरानी वस्तुका भेल संभेल किया। जकातकी चोरी की, लेते देते तराजू की डंडी चढ़ाई। अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुएं अधिक लिया, रिश्वत खाई। विश्वासघात किया, ठगाई की, हिसाव किताव में किसी को धोखा दिया। माता पिता पुत्र मित्र स्त्री आदिकों के साथ ठगाई कर किसी को दिया, अथवा पूंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इन्कार किया। पडी चीज उठाई। इत्यादि तीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

चौथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमणव्रत के पांच अतिचार—'अप्परिगहिया इत्तर०' परस्त्री गमन किया, अविवाहिता कुमारी विधवा

वेश्यादिक से गमन किया । अनंगक्रीड़ा की, काम आदि की विशेष जागृति की, अभिलाषा से सराग वचन कहा । अष्टमी, चौदश आदि पर्व तिथिका नियम तोड़ा । स्त्रीके अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की । कुविकल्प चिंतवन किया । पराये नाते जोड़े । अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार स्वप्नस्वप्नांतर हुआ, कुस्वप्न आया । स्त्री, नट, विट, भांड, वेश्यादिक से हास्य किया । स्वस्त्रीमें संतोष न किया । इत्यादिक स्वदारा संतोष परस्त्रीगमनविरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

पांचवें स्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत के पांच अतिचार 'धण धन्न खित्तवत्थू०' धन धान्य क्षेत्र वास्तु सोना चांदी वर्तन आदि । द्विपद—दास दासी, चतुष्पद—गौ बैल घोडादि नव प्रकार के परिग्रह का नियम न लिया । लेकर बढ़ाया ।

अथवा अधिक देखकर मूर्च्छावश माता पिता पुत्र स्त्री के नाम किया। परिग्रह का परिमाण नहीं किया, करके भुलाया, याद न किया इत्यादि पांचवें स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अनजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

छट्टे दिक्परिमाणव्रत के पांच अतिचार— "गमणस्सउ परिमाणे०' ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि तिर्यग्दिशि जाने आने के नियमित परिमाण उपरांत भूल से गया। नियम तोड़ा, परिमाण उपरांत सांसारिक कार्य के लिए अन्य देश से वस्तु मंगवाई, अपने पास से वहाँ भेजी। नौका जहाज आदि द्वारा व्यापार किया। वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम गया। एक दिशा के परिमाण को कम करके दूसरी दिशा में अधिक गया। इत्यादि छट्टे दिक् परिमाण व्रत सम्बन्धी

जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

सातवें भोगोपभोगव्रतके भोजन आश्रित पांच अतिचार और कर्म आश्रित पंद्रह अतिचार—'संचित्ते पडिबद्धे॰' सचित्त—खान पान की वस्तु नियम से अधिक स्वीकार की । सचित्त से मिली हुई वस्तु खाई । तुच्छ औषधिका भक्षण किया। अपक्व आहार, दुपक्व आहार किया । कोमल इमली, बूट, भुट्टे, फलियाँ आदि वस्तु खाई । "सचित्त[1] दव्व[2] विगई[3] वाणह[4] तंबोल[5] वत्थ[6] कुसुमेसु[7] । वाहण[8] सयण[9] विलेवण[10] बंभ[11] दिसि[12] ण्हाण[13] भत्तेसु[14] ॥१४॥" ये चौदह नियम लिये नहीं । लेकर भुलाये । वड़, पीपल, पिलंखण, कठुंबर, गूलर ये पांच फल । मदिरा मांस, शहद, मक्खन ये चार महाविगई । बरफ ओले, कच्ची मिट्टी, रात्रिभोजन, बहूबीजाफल,

अचार, घोलवड़े द्विदल, वेंगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनंतकाय ये बाईस अभक्ष्य। सूरन, जमीकंद, कच्ची हलदी, सतावरी, कच्चानरकचूर, अदरक, कुँवारपाठा, थोर, गिलोय लहसून, गाजर, गठा-प्याज, गोंगुल, कोमल फल फूल, पत्र, थेगी, हरामोथा, अमृतवेल, मूली, पदवहेड़ा, आलू, कचालू, रतालू, पिंडालू आदि अनन्तकायका भक्षण किया। दिवस अस्त होने पर भोजन किया। सूर्योदय से पहले भोजन किया। तथा कर्मतः पंद्रह कर्मादान—इंगाल-कम्मे, वणकम्मे, साड़ीकम्मे, भाड़ीकम्मे, फोड़ी-कम्मे, ये पांच कर्म। दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज, ये पांच वाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछनकम्मे, दवग्गिदावणिया, सरदहतलावसोसणया, असइ-पोसणया, ये पांच सामान्य, एवं कुल पंद्रह कर्मादान महा आरंभ किये कराये करते को अच्छा समझा। श्वान, बिल्ली आदि पोषे

पाले। महा सावद्य, पापकारी, कठोर काम किया। इत्यादि सातवें भोगोपभोग विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

आठवें अनर्थदंड के पांच अतिचार–'कंदप्पे कुक्कुइ०' कंदर्प—कामाधीन होकर नट विट वेश्या आदि से हास्य, खेल, क्रीड़ा, कुतूहल किया। स्त्री पुरुष के हावभाव रूप शृंगार सम्बन्धी वार्त्ता की। विषयरस पोषक कथा की। स्त्री कथा, देशकथा, भक्तकथा, राजकथा ये चार विकथा की, पराई भांजगढ़ की, किसी की चुगलखोरी की, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। खांडा, कटार, कशि, कुल्हाड़ी, रथ, ऊखल, मूसल, अग्नि, चक्की आदिक वस्तु दाक्षिण्यतावश किसी को मांगी दी। पापोपदेश दिया। अष्टमी चतुर्दशी के दिन दलने पीसने का नियम तोड़ा।

मूर्खता से असंवद्ध वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया। घी, तेल दूध, दही, गुड़, छाछ आदि का भाजन खुला रखा, उसमें जीवादिक का नाश हुआ, बासी मक्खन रखा और तपाया। न्हाते धोते, दाँतन करते, जीव आकुलित मोरी में पानी डाला। झूले में झूला। जुआ खेला। नाटक आदि देखा। ढोर डंगर खरीदवाये। कर्कश वचन कहा, किचकिची ली। ताड़ना तर्जना की। मत्सरता धारण की। श्राप दिया। भैंसा, साँड, मेंढ़ा, मुरगा, कुत्ते आदिक लड़वाये, या इनकी लड़ाई देखी। ऋद्धिमान की ऋद्धि देख ईर्षा की। मिट्टी, नमक, धान, विनोले विना कारण मसले। हरि वनस्पति खूँदी। शस्त्रादिक वनवाये। रागद्वेष के वशसे एकका भला चाहा। एकका बुरा चाहा। मृत्यु की वांछा की। मैना, तोते, कबूतर, बटेर, चकोर आदि पक्षियों को पींजरे में डाला। इत्यादिक आठवें अनर्थदंड विरमण-व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में

सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

नवमें सामायिकव्रत के पांच अतिचार—'तिविहे दुप्पणिहाणे०' सामायिक में संकल्प विकल्प किया। चित्त स्थिर न रखा। सावद्य वचन बोला। प्रमार्जन किये विना शरीर हलाया, इधर उधर किया। शक्ति होने पर भी सामायिक न किया। सामायिक में खुले मुँह बोला। नींद ली। विकथा की। घर सम्बन्धी विचार किया। दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा, सचित्त वस्तु का संघट्टन हुआ। स्त्री तिर्यंच आदि का निरन्तर परस्पर संघट्टन हुआ। मुँहपत्ति संघट्टी। सामायिक अधूरा पारा, विना पारे उठा। इत्यादि नवमें सामायिकव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

दशमें देशावगासिकव्रत के पांच अतिचार- "आणवणे पेसवणे०" आणवणप्पओगे पेसवणप्प-ओगे सद्दाणुवाई रूवाणुवाई वहियापुग्गलपक्खेवे। नियमित भूमिमें बाहर से वस्तु मंगवाई। अपने पास से अन्यत्र भिजवाई। खंखारा आदि शब्द करके, रूप दिखाके या कंकर आदि फेंककर अपना होना मालूम किया। इत्यादि दशमें देशावकाशिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

ग्यारहवें पोषधोपवासव्रतके पांच अतिचार- "संथारुच्चार विहि०" अप्पडिलेहिअ, दुप्पडि-लेहिय सिज्जासंथारए। अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि। पोषध लेकर सोने की जगह बिना पूंजे प्रमार्जे सोया। स्थंडिल आदि की भूमि भले प्रकार शोधी नहीं।

लघुनीति वडीनीति करने या परठने समय "अणुजाणह जस्सुग्गहो" न कहा । परठे वाद तीन वार 'वोसिरे' न कहा । जिन मंदिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए 'निस्सीहि' और वाहिर निकलते 'आवस्सही' तीन वार न कही । वस्त्र आदि उपधिकी पडिलेहणा न की । पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायका संघट्टन हुआ । संथारा पोरिसी पढनी भुलाई । विना संथारे जमीन पर सोया । पोरिसीमें नींद ली, पारना आदिकी चिंता की । समयसर देववंदन न किया । प्रतिक्रमण न किया । पौषध देरीसे लिया और जल्दी पारा, पर्वतिथि को पोसह न लिया । इत्यादि ग्यारहवें पौषधव्रतसंबंधी जो कोई अति-चार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सव मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

बारहवें अतिथि संविभाग व्रत के पांच अतिचार—"सचित्ते निक्खिवणे०" सचित वस्तुके संघट्टे वाला अकल्पनीय आहार पानी साधु साध्वीको दिया। देनेकी इच्छासे सदोष वस्तुको निर्दोष कही। देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कही। न देने की इच्छासे निर्दोष वस्तुको सदोष कही। न देने की इच्छासे अपनी वस्तु को पराई कही। गोचरीके वक्त इधर-उधर हो गया। गोचरी का समय टाला। वेवक्त साधु महाराज को प्रार्थना की। आये हुए गुणवान्‌की भक्ति न की। शक्तिके होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्रको पड़ता देख मदद न की। दीन दुःखी की अनुकंपा न की। इत्यादि बारहवें अतिथि संविभाग व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

संलेषणा के पांच अतिचार—"इहलोए परलोए०" इहलोगासंसप्पओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीविआसंसप्पओगे। मरणासंसप्पओगे। कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभावसे इह लोकसम्बन्धी राजऋद्धिभोगादिकी वांछा की। परलोकमें देवदेवेन्द्र, चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्थामें जीने की इच्छा की। दुःख आनेपर मरने की वांछा की। इत्यादि संलेषणा व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

तपाचार के बारह भेद—छ बाह्य छ अभ्यन्तर। "अणसणमुणो अरिया०" अनशन—शक्ति के होते हुए पर्वतिथि को उपवास आदि तप न किया। ऊनोदरी—दो चार ग्रास कम न खाये। वृत्तिसंक्षेप-द्रव्य-खाने की वस्तुओं का

संक्षेप न किया। रस-विगय त्याग न किया। कायक्लेश लोच आदि कष्ट न किया। संलीनता-अंगोपांग का संकोच न किया। पच्चक्खाण तोड़ा। भोजन करते समय एकासणा आयंबिलप्रमुखमें चौकी, पटडा, अखला आदि हिलता ठीक न किया। पच्चक्खाण पारना भुलाया, बैठते नवकार न पढ़ा। उठते पच्चक्खाण न किया। निवि, आयंबिल उपवास आदि तपमें कच्चा पानी पिया। वमन हुआ। इत्यादि बाह्य तपसम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

अभ्यन्तर तप-"पायच्छित्तं विणओ०" शुद्ध अंतःकरण पूर्वक गुरुमहाराजसे आलोचना न ली। गुरु की दी हुई आलोचना सम्पूर्ण न की। देव गुरु संघ साधर्मिकका विनय न किया। बाल वृद्ध ग्लान तपस्वी आदिकी वेयावच्च न की।

वाचना, पृछना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण ये पांच प्रकारका स्वाध्याय न किया । धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं । आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया । दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त दस वीस लोगस्सका काउस्सग्ग न किया । इत्यादि अभ्यंतरतप संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

वीर्याचार के तीन अतिचार—"अणिगूहिय बल विरिओ०" पढते, गुणते, विनय वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्य में मन वचन काया का बलवीर्य पराक्रम फोरा नहीं । विधि पूर्वक पंचांग खमासमण न दिया । द्वादशावर्त वंदन की विधि भले प्रकार न की । अन्य चित्त निरादर से बैठा देववन्दन प्रतिक्रमण में जल्दी की इत्यादि

वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कड़म् ।

"नाणाई अट्ठ पइवय, सम संलेहण पण पन्नर कम्मेसु । वारस तव विरिअ तिगं, चउव्वीसं सय अइयारा ॥"

"पडिसिद्धाणं करणे"-प्रतिषेध--अभक्ष्य अनंत-काय बहुबीज भक्षण, महारंभ परिग्रहादि किया। देवपूजन आदि षट्कर्म सामायिकादि छः आव-श्यक, विनयादिक अरिहंत की भक्ति, प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं । जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की । अपनी कुमति से उत्सूत्र प्ररूपणा की । तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान पैशुन्य, रति, अरति. परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ये अठारह पापस्थान किये कराये

अनुमोदे, दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया और भी जो कुछ वीतराग की आज्ञा से विरुद्ध किया, कराया या अनुमोदन किया। इन चार प्रकार के अतिचारों में कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कड़म् ।

एवंकारे श्रावक धर्म सम्यक्त्वमूल बारहव्रत संबंधी एकसो चौवीस अतिचारों में से जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कड़म् ॥इति॥

(अब नीचे बैठकर बोलना)

सव्वस्स वि पक्खिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइकंतो ? जत्ता भे, जवणिज्जं च भे? खामेमि, खमासमणो ! पक्खिअं वइकम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि; अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ?

जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ? पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर[1] पक्खिअं खामेउं ? इच्छं,

---

१ चाउमासी–प्रतिक्रमण में "चउमासिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस तरह बोलना, और संवत्सरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरीअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि संवच्छरीअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठि राइंदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये।

खामेमि पक्खिअं, पन्नरसरहं दिवसाणं, पन्नरसरहं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए; जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(यहां पर हरएक मनुष्यसे खमतखामणा करके दो वांदना देना।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,

मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि; अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो मे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कमं; पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

भगवन् ! देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता पक्खिअं पडिक्कमावेह 'इच्छं' ॥

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि; गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां सब लोग काउस्सग्ग में 'पक्खीसूत्र' या 'वंदीत्तुसूत्र' सुने और एक जन खमासमण पूर्वक आदेश मांग कर सूत्र प्रकट कहे ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिसूत्र[1] कड्ढूँ ? 'इच्छं' ॥

---

१ चउमासी प्रतिक्रमणमें 'चउमासीसूत्र कड्ढू' और संवत्सरी प्रतिक्रमणमें 'संवत्सरीसूत्र कड्ढू' ऐसा बोलना चाहिये ।

(ऐसा खमासमणपूर्वक आदेश मांग कर, खड़े होकर प्रकट तीन नवकार कह कर, साधु-मुनिराज हो तो 'पक्खीसूत्र' कहे और यदि साधु मुनिराज न हो तो श्रावक 'वंदित्तुसूत्र' कहे।)

वंदित्तुसूत्र ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू-अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआ-रस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व. तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभि-ओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिं-गीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे

अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलग-पाणाइवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइ-भारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडि-क्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि परि-थूलगअलिअवयणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूड-लेहे अ । बीअ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि, थूलग - परदव्व-हरण - विरईओ । आयरिअमप्प-सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे अ विरुद्ध-गमणे अ । कूड-तुल-कूड-माणे पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्व-यम्मि, निच्चं परदारगमण-विरईओ । आयरि-अमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अप-

रिग्गहिआ इत्तर, अणंग-वीवाह-तिव्व-अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ।१६। इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ । उवभोग परीभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छो-सहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ।।२१।। इंगाली-वण-साडी,-भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य दंत - लक्ख-रस - केस - विस-विसयं ।।२२।। एवं खु जंतपिल्लणकम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजं-

तग - तणकट्ठे मंत - मूल - भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण - वन्नग, विलेवणे सद्द - रूव - रस-गंधे । वत्थासण - आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण - भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइ-अम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्प-णिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामा-इय - वितह - कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गल-क्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसह - विहि - विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि

॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरण-जुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइयस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा - रवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलो-अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ

गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तर-गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्म-स्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइ-आइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मद्दिट्ठी देवा दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे

किचाणमकरणे पडिकमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिअ दुगंछियं सम्मं । तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५०॥

(यह "नमो अरिहंताणं" [illegible] "करेमि भंते" और "इच्छामि पडिक्कमिउं०" [illegible] "वंदित्तुसूत्र" [illegible] ।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवि-

हेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं । जो मे पक्खिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं, गुणव्व-याणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्व-सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ । इच्छामि पडिक्कमिउं सावग-धम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं

च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मि, साव-
ज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे,
पडिकमे पक्खिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं,
चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे
निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभि-
ओगे अ निओगे, पडिकमे पक्खिअं सव्वं ॥५॥
संकाऽऽकंख-विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलि-
गीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं
सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे पयणे अ पयावणे
अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव
तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं गुणव्व-
याणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं,
पडिकमे पक्खिअं सव्वं ॥ ७ ॥ पढमे अणुव्व-
यम्मि, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअ-
मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ६ ॥ वह बंध
छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवय-
स्सइआरे, पडिकमे पक्खिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए

अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ।१२।
तइए अणुव्वयम्मि, थूलग-परदव्व-हरण-विरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे अ विरुद्ध - गमणे अ ।
कूड-तुल-कूड माणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ।१४।
चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमण - विर-
ईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं
॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग-वीवाह-तिव्व-
अणुरागे । चउत्थ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं
सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरि-
अमप्पसत्थम्मि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमा-
यप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्त वत्थू, रुप्प-
सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि य,
पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ
परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।

वुड्ढि सइ्अंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ।१९।
मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले
अ गंध- मल्ले अ । उवभोगपरीभोगे, बीयम्मि
गुणव्वए निंदे । २० । सचित्ते पडिबद्धे, अपोल-
दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया,
पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं । २१ । इंगाली-वण-
साड़ी,-भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव य
दंत - लक्ख-रस - केस-विसविसयं । २२ । एवं खु
जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदह-
तलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा । २३ ।
सत्थग्गिमुसलजंतग - तणकट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे ।
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं
॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण-वन्नग,-विलेवणे सद्द-रूव-
रस-गंधे । वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं
सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहि-
गरण भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइ-
अम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणि-
हाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइय-

वितह-कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥
संथारुच्चारविही पमाय तह चेव भोयणाभोए ।
पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण-करण-जुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सण्णाकसाय-दंडेसु । गुत्तीसु अ समईसु अ, जो अइआरो अ

तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ वंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलो-अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुस-गासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअ-भरुव्व-भार-वहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि वहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा वहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तर-गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्म-स्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए

विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५०॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ! मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! । मूलगुण-उत्तरगुण-अतिचा-रविशुद्धिनिमित्तं काउस्सग्ग करूं ? 'इच्छं' ॥

(अब खड़े होकर बोले ।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि; गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामा-इए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं

जं विराहिश्रं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(१२ बारह[1] लोगस्स का अथवा ४८ अडतालीस नवाकार का काउस्सग्ग करना पश्चात् पारकर प्रगट लोगस्स कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।

---

१ चउमासी प्रतिक्रमणमे (२०) लोगस्स या अस्सी नवकार का काउस्सग्ग करना और संवत्सरी प्रतिक्रमणमे (४०) चालीस लोगस्स और एक नवकार, अथवा एक सो इकसठ नवकार का काउस्सग्ग करना ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अथ बैठकर मुँहपत्ति पडिलेहना और बाद में दो वंदना देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि; अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो ।

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि; अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि

मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! समाप्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतरपक्खिअं[1] खामेउं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह,

१ चउमासी प्रतिक्रमण मे चउमासिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये और संवच्छरीप्रतिक्रमण में "संवच्छरिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं, तिन्निसयसट्ठि राइंदियसाणं" इस तरह बोलना चाहिये।

अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदसह भगवन् ! पक्खिअ खामणा खामुं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कहकर नीचे मुजब चार खामणा देना ।)

१–इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

("पहेला गुरु खामणा खामूं" ऐसा कहकर दहिना हाथ चरवला या आसन पर रख कर मस्तक झुका कर तीन नवकार बोले ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-रियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

२–इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

("दूजा गुरु खामणा खामूं" ऐसा कहकर तीन नवकार बोले ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-

रियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

३-इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि॥

"तीजा गुरु खामणा खामूं" यह सिर झुका तीन नवकार गिने।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

४-इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि॥

("चौथा गुरु खामणा खामूं") यह सिर झुका तीन नवकार गिने।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठि-ओमि, अब्भिंतर देवसिअं खामेउं ? 'इच्छं' खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे ! किलामो, अप्पकीलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ! जवणिज्जं च भे ! खामेमि खमास-

मणो, देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडि-क्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोव-याराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे उग्गहं। निसीहि; अहोकायं, कायसंफासं, खमणिज्जो मे ! किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ! जवणिज्जं च भे ! खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, काय-दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-

इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खड़े होकर हाथ जोड़ कर कहना चाहिए ।)

आयरिअ-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो । सव्वं खमाव-इत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते ! सामाइअं सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवि-हेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ? पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ

अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं

नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स का अथवा आठ नवकार का काउस्सग्ग करना, पश्चात् पार कर प्रगट 'लोगस्स' कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं. एवमाइएहिं. आगारेहिं. अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना; पीछे-)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।

भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंद महियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई-जरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खलविसालसुहावहस्स । को देवदाणवनरिंद-गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ ! णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगण-स्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ ! करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं,

भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकारका काउस्सग्ग करना; पीछे—)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परम्परगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३ ॥
उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टीं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊस-सिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः'' कह कर सुअदेवया की थुई कहना ।)

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भ-समगौरी । कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुत-देवता सौख्यम् ॥ १ ॥

भुवनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं

सेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर भुवनदेवता की थुई कहना ।)

ज्ञानादि - गुण-युतानां, स्वाध्यायध्यान-संयमरतानाम् । विदधातु भुवन - देवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं,

झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः" कह कर क्षेत्रदेवता की थुई कहना।)

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्र-देवता नित्यं, भूयान्नः सुख-दायिनी ॥ ३ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-रियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

(अब बैठकर "छट्ठा आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहुं?" ऐसा कहकर मुँहपत्ति पडिलेहना, बाद में दो वंदना देना।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमा-समणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए पडि-

कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्क-मामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालि-आए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमा-

समणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

"इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

(ऐसा कह कर बायाँ घुटना खड़ा कर पुरुष 'नमोऽस्तु वर्द्ध-मानाय' कहे और स्त्रीवर्ग 'संसारदावानल' की तीन थुई कहे ।)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावाप्त-मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविन्द-राज्या, ज्यायःक्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरतिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजन्तु-निर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावाऽवनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलि - मालितानि । सम्पूरिता-

भिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूरा-भिरामं, जीवाऽहिंसा-विरललहरी-संगमागाहदेहम्। चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं, सारं वीरागम-जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर - पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंध-हत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहि-दयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं; अप्पडि-हयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति-

"सिद्धिगइ" नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जियभयाणं । जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वृद्ध-स्तवन भणुं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कहकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहकर निम्न लिखित 'अजितशांति-स्तवन' कहे ।)

अजितशांति-स्तवनम् ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्व-गयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) । ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवमम‍हप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ (गाहा) । सव्वदुक्ख-प्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥३॥ (सिलोगो) । अजिअ-जिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नामकित्तणं ।

तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥४॥ (मागहिआ)। किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं। अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं॥५॥ (आलिंगणयं)। पुरिसा! जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ (मागहिआ)। अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइअं। अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअंसययमुवणमे ॥७॥ (संगययं)। तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ (सोवाणयं)। सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथिअं, थिरसरिच्छवच्छं मय-

गललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं । हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं, सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥९॥ (वेड्ढओ) । अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं । पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥१०॥ (रासालुद्धओ । कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो । चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुन्दरवई, चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी, छण्णवइगामकोडिसामी आसीज्जो भारहंमि भयवं ! ॥ ११ ॥ (वेड्ढओ) । तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥१२॥ (रासानंदियं) इक्खाग ! विदेहनरीसर ! नरवसहा ! मुणिवसहा !, नवसारयससिसकलाणण !

विगयतमा ! विहुअरया ! । अजिउत्तम ! तेअगुणेहिं महामुणि ! अमिअबला ! विउलकुला !, पणमामि ते भवभयमूरण ! जगसरणा ! मम सरणं ॥ १३ ॥ (चित्तलेहा) देवदाणविंद चंदसूरवंद ! हट्ठतुट्ठजिट्ठपरम,-लट्ठरूव ! धंतरुप्प - पट्ट - सेअ - सुद्ध -निद्धधवल । दंतपंति ! संति ! सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर ! दित्ततेअवंद धेअ ! सव्वलोअभाविअप्पभाव ! णेअ ! पइस मे समाहिं ॥१४॥ (नारायओ) । विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं । तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥१५॥ (कुसुमलया) । सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ (भुअगपरिरिंगिअं) । सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥१७॥ (खिज्जिअयं) । तित्थवरपवत्तयं तमरयरहियं, धीरज-

णथुअच्चिअं चुअकलिकलुमं । संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥१८॥ (ललिअयं) । विणओणयसिरिरइअंजलि-रिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइनर-वइ - थुअमहिअच्चिअं बहुसो । अइरुग्गयसरयदि-वायर-समहिअसप्पभं तवसा, गयणंगणवियरण-समुइअ-चारणवंदिअं सिरसा ॥१९॥ (किस-लय-माला) । असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगण-मंसिअं । देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरि-वंदिअं ॥२०॥ (सुमुहं) । अभयं अणहं, अरयं अरुअं । अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥२१॥ (विज्जुविलसिअं) । आगया वरविमाणदिव्व-कणग - रहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं ।ससंभमो-अरणखुभिअलुलिअचल - कुंडलंगयतिरीडसोहंत-मउलिमाला ॥ २२ ॥ (वेड्ढओ) । जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअ-संभमपिंडिअ - सुट्ठु सुविम्हिअसव्वबलोघा । उत्तम-

कंचणरयणपरूविअ - भासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणय - भत्तिवसागय - पंजलिपेसियसीस - पणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला)। वंदिऊण थोउण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभव-णाइँ तो गया ॥२४॥ (खित्तयं)। तं महामुणि-महं पि पंजली, रागदोसभयमोह-वज्जिअं। देव-दाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तममहातवं नमे ॥२५॥ (खित्तयं)। अंबरंतरविआरणिआहिं, ललि-अहंसवहुगामिणिआहिं। पीणसोणिथणसालिणि-आहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं)। पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं । वरखिंखिणि - नेउर- सतिलय-वलयविभूसणिआहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ (चित्तक्खरा) देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि। अवंगतिल-

यपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्ति-संनिविट्ठवंदणागयाहि हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायओ)। तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं। धुअसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ (नंदिअयं)। थुअवंदिअस्सा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहूहिं पयओ पणमि-अस्सा। जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसा-गयपिंडिअयाहिं। देववरच्छरसाबहुआहिं, सुरवर-रइगुणपंडिअयाहिं ॥३०॥ (भासुरयं)। वंससद्दतं-तितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं। वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहिं। नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलोअ-सव्वसत्त-संतिकारयं, पसंत-सव्वपावदोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ (नारायओ)। छत्तचामरपडागजूअजव मंडिया, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीव

समुद्द मंदरदिसागयसोहिया, सत्थिअवसहसीहरहच-क्कवरंकिया ॥२२॥ (ललिअयं)। सहावलट्ठा सम-प्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ २३ ॥ (वाणवासिआ)। ते तवेण धूअसव्वपावया, सव्वलो-अहिअमूलपावया। संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥ २४ ॥ अपरां-तिका ॥ एवं तव बलविउलं, थुअं मए अजि-असंति-जिणजुअलं। ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ २५ ॥ (गाहा)। तं बहु-गुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अ विसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ पसायं ॥ २६ ॥ (गाहा)। तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं। परिसा वि अ सुह-नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ २७ ॥ (गाहा)। पक्खिअ-चाउम्मासिअ,-संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग-

निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअसंतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विणासंति ॥३९॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ (गाहा) ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए; निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । श्री आचार्यजी मिश्र ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । उपाध्यायजी मिश्र ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुजी मिश्र ।

(अब खडे होकर बोलना चाहिये ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण

संदिसह भगवन् ! देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? 'इच्छं' । देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहा पर चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग कर प्रगट लोगस्स कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे

॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समा-हिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! खुद्दोपद्दव - उड्डावणनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं,

भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं. एवमाइएहिं. आगारेहिं. अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां पर चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस - वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसं पि जिणवरा;

तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? "इच्छं" ॥

श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः । संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणा-पल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो देवो जीरावल्लीशिरोमणिः । पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नतनाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-

सीहाणं, पुरिसवर - पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहि-दयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं; अप्पडि-हयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति "सिद्धिगइ" नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जियभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया-मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंता-मणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ॥ ५ ॥

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ

इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

सिरि-थंभणय - ट्ठिय - पाससामिणो सेस तित्थ-सामीणं । तित्थसमुन्नइकारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसिमहं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुणसुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नइ-निमित्तं ॥ २ ॥ श्रीथंभणपार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

(अब खड़े होकर बोलना चाहिए ।)

वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्ति-आए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां पर चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर-

मरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तीय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। श्रीचौरासिगच्छ शृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूड़ामणि दादा श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं

नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां पर चार नवकार का काउस्सग्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । श्रीचौरासी-गच्छ शृङ्गारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्र-चूडामणि दादा श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-क्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं: अप्पाण वोसिरामि ॥

(यहां पर चार नवकार का काउस्सग्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं

च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिमुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च, ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(अब नीचे बैठकर बांया गोड़ा ऊंचा करके चैत्यवंदन करें।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ॥

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाण-मुसुमूरणु। सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ

पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंतिक- डप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणा लिद्धउ। नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः। श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं. धम्मवर-चाउरंतचक्क-

वट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछ-उमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वा-बाहमपुणरावित्ति, 'सिद्धिगइ' नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ य वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआ-

वासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस,-भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ॥ ५ ॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर 'जय वीअराय' कहना।)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभावओ भयवं !। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

बड़ी शांति

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्,
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ॥
तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-
दारोग्य-श्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥

भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावत-विदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति । ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः सपन्थाः । इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शांतिमुद्घोषयामि । तत्पूजा - यात्रा - स्नात्रादि - महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां

भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथा-स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोकपूज्या-स्त्रिलोकेश्वरास्त्रि-लोकोद्द्योतकराः ॥

ॐ श्रीकेवलज्ञानि - निर्वाणी - सागर-महायश - विमल-सर्वानुभूति-श्रीधर-दत्त-दामोदर-सुतेज-स्वामि-मुनिसुव्रत - सुमति - शिवगति - अस्ताग-नमीश्वर-अनिल-यशोधर-कृतार्थ-जिनेश्वर- शुद्धमति - शिव-कर-स्यन्दन-सम्प्रति इति एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थङ्कराः ॥

ॐ श्रीऋषभ-अजित-संभव- अभिनंदन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ - सुविधि- शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म - शांति - कुन्थु - अर-मल्लि - मुनिसुव्रत - नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमान इति एते वर्त्तमानजिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ - शूरदेव-सुपार्श्व - स्वयंप्रभ - सर्वानुभूति-देवश्रुत-उदय-पेढाल-पोट्टिल- शतकीर्ति-सुव्रत-अमम-निष्कषाय-निष्पुलाक-निर्मम-चित्रगुप्त-

समाधि-संवर-यशोधर-विजय-मल्लि-देव- अनन्तवीर्य-भद्रंकर इति एते भावितीर्थङ्करा जिनाः । शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु ॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्ष कांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥

ॐ श्रीनाभि-जितशत्रु-जितारि-संवर-मेघ - धर-प्रतिष्ठ - महासेन - सुग्रीव-दृढरथ - विष्णु-वसुपूज्य-कृतवर्म-सिंहसेन-भानु-विश्वसेन-सूर- सुदर्शन-कुम्भ-सुमित्र-विजय-समुद्रविजय-अश्वसेन-सिद्धार्थ इति एते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

ॐ श्रीमरुदेवा - विजया - सेना - सिद्धार्था-सुमङ्गला - सुसीमा -पृथिवीमाता - लक्ष्मणा-रामा-नन्दा-विष्णु - जया- श्यामा - सुयशा - सुव्रता - अचिरा-श्री - देवी - प्रभावती - पद्मा - वप्रा - शिवा - वामा-त्रिशला इति एते वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥

ॐ श्रीगोमुख - महायक्ष - त्रिमुख - यक्षनायक-तुम्बरु-कुसुम-मातंग-विजय - अजित - ब्रह्मा - यक्ष-

राज - कुमार - षण्मुख-पाताल-किन्नर-गरुड़-गन्धर्व-यक्षराज - कुबेर - वरुण - भृकुटि-गोमेध-पार्श्व-ब्रह्म-शान्ति इति एते वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

ॐ श्रीचक्रेश्वरी - अजितबला- दुरितारि-काली-महाकाली - श्यामा - शान्ता - भृकुटि - सुतारका-अशोका - मानवी - चण्डा-विदिता-अंकुशा-कन्दर्पा-निर्वाणी - बला - धारिणी - धरणप्रिया - नरदत्ता - गान्धारी - अम्बिका - पद्मावती - सिद्धायिका इति एता वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थङ्करशासनदेव्यः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं धृति - मति - कीर्ति - कांति - बुद्धि-लक्ष्मी - मेधा - विद्या - साधन - प्रवेश - निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेन्द्राः । ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति - वज्रशृंखला - वज्रांकुशा - चक्रेश्वरी - पुरुष-दत्ता - काली - महाकाली - गौरी-गांधारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला - मानवी - वैरोट्या - अछुप्ता - मानसी-महामानसी - एता षोडश - विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातु-

र्णर्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टि-र्भवतु, पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारकबुध-बृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण- कुवेर-वासवादित्य-स्कन्द- विनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोष–कोष्ठागारा नरप-तयश्च भवन्तु स्वाहा । ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन-संवंधी-वंधु-वर्गसहिता नित्यं चामोद-प्रमोदकारिणः । अस्मिंश्च भूमण्डले आयतन-निवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोप-सर्गव्याधि-दुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांति-र्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवा भवंतु । सदा प्रादुर्भूतानि (दुरितानि) पापानि शाम्यन्तु शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा । श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांति–विधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश - मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे

गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिः दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि । सम्पादितहितसम्पन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद,राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिकपुरमुख्यानां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रा - स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालंकृतः चंदनतिलकं विधाय, पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा, शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति

च मङ्गलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥२॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।दोषाःप्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥

दीपक या बीजलीका प्रकाश शरीर पर गिरा हो या कोई दोष लगा हो तो 'इरियावहि' तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कह कर पीछे सामायिक पारे ।]

सामायिक पारने की विधि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहूं ? 'इच्छं' ॥

(यहां पर मुहपत्ति की पडिलेहन करे, पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारूं ? यथाशक्ति। इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारेमि ? तहत्ति।

(माथा भूम नमा कर तीन नवकार पढ़े। पीछे घुटने टेक कर शिर नमाकर नीचे मुजब 'भयवं दसण्णभद्दो' कहे।)

भयवं ! दसण्णभद्दो, सुदंसणो थूलभद्द वइरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवं विहा हुंति ॥१॥ साहूण वंदणेण, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण-माईणं ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय-मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥

सामाइय - पोसहसंठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफल-हेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधि से लिया विधि से किया विधि से करते हुये, अविधि आशातना लगी हो, दश मनका, दश वचनका, बारह काया का इन बत्तीस दुषणों में जो कोई दुषण लगा हो, उन सबका मन वचन काया करके मिच्छामि दुकडं।

इति–पक्खी–प्रतिक्रमण–विधिः समाप्तः ॥

दासानुदासा इव सर्व्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति।
मरुस्थली कल्पतरुः स जीयाद्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥

दादा–गुरु–स्तवन ॥

कुशल गुरुदेवके दर्शन, मेरा दिल होत है परसन।
जगतमें आप समो न कोई, न देखा नयनभर जोइ ॥ १ ॥
बिरुद्ध भूमंडले छाजै, फरसतां पाप सहु भाजे।
पूजतां संपदा पावे, अचिंती लच्मी घर आवे ॥ २ ॥
एके मुखे गुण कहुं केता, मुझे हिये ज्ञान नहीं हेता।
लालचंद की अरज सुन लीजे, चरणकी सेव मोहि दीजै ॥ ३ ॥

अथ छींक-दोषनिवारण-विधिः ॥

पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते समय यदि छींक आ जाय तो याने "पक्खिय मुँहपत्ति पडिलेहु" यहाँ से "पक्खि समाप्त खामणा" पर्यंत के बीच में छींक आ जाय तो नीचे लिखे मुजब दोषनिवारणार्थ तीन काउस्सग्ग करना;
प्रथमवारः—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! 'अपशकुन-दुर्निमित्तउहडा-वण-निमित्तं, करेमि काउस्सग्गं ॥'

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

यहां पर एक नवकार का काउस्सग्ग कर पीछे काउस्सग्ग पार कर प्रगट एक नवकार कहकर बाद में नीचे का श्लोक कहना और डावे पगसे भूमि दबाना—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगति - दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसंपन् नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ १ ॥

दूसरी दफे इच्छामि० अपशकुन० अन्नत्थ०' कहकर दो नवकार का काउस्सग्ग करे, पीछे प्रकट दो नवकार कहना और उन्मृष्ट० बोलना ॥ २ ॥

तीसरी दफे इच्छामि० अपशकुन० 'अन्नत्थ०' कहकर तीन नवकार का काउस्सग्ग कराना, पीछे प्रगट तीन नवकार कहकर बादमें उन्मृष्ट० कहना ॥ ३ ॥ [1]संपूर्ण प्रतिक्रमण करने के बाद दोषनिवारण काउस्सग्ग करके सामायिक पारे ॥ इति छींकदोषनिवारणविधिः ॥

अथ मार्जारीदोष - निवारणविधिः ॥

दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते समय यदि मंडल के बीचमें से बिलाडी उल्लंघन करे तो नीचे लिखे मुजब दोषनिवारणार्थ तीन काउस्सग्ग करना; प्रथमवार—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए

---

१ नवरं पाक्षिकप्रतिक्रमणे क्षुत्करणे पंचदस दिनानि यावत् विशेषतस्तपः कार्यं । एवं चातुर्मासिक-प्रतिक्रमणे क्षुत्करणे चतुरो मासान्, सांवत्सरिक-प्रतिक्रमणे वर्षं यावत् विशेषतस्तपः कार्यं इति सामाचारीशतकम् ॥

निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! "अपशकुन दुर्निमित्त उहडावण निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुकारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर पीछे काउस्सग्ग पार कर प्रगट एक नवकार कहकर बादमें नीचे की गाथा कहना और डावे पग से भूमि दबाना—

जा सा कालीकव्वरी, अखिहिं कक्कडियारि ।
मंडलमांहिं संचरीव, हय पडिहय मआरि ॥

पग से भूमि दबाते समय "हय पडिहय मआरि" ये पद तीन दफे बोलना ॥ २ ॥

दूसरी दफे - अपशकुन० 'अन्नत्थ०' कह कर दो नवकार का काउस्सग्ग करे, पीछे प्रगट दो नवकार कहना, और जा सा काली कब्बरी० गाथा बोलना ॥ २ ॥

तीसरी दफे - अपशकुन० 'अन्नत्थ०' कहकर तीन नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे प्रगट तीन नवकार कहकर बादमें जा सा काली कब्बरी० गाथा कहना ॥ ३ ॥

संपूर्ण प्रतिक्रमण करने के बाद दोषनिवारण काउस्सग्ग करके सामायिक पारे ॥ (विधिप्रपा०)

इति मार्जारीदोषनिवारणविधिः ॥

अथ पच्चक्खाण-सूत्राणि ॥

१. नवकारसहिअं-पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअं मुट्ठि-सहिअं [1]पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं । देसावगासियं भोगोपरिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१. यह पच्चक्खाण उसके लिए है जो प्रतिदिन चौदह नियम स्मरण करता है । सर्वत्र पच्चक्खाण में जहाँ जहाँ 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' पाठ आते हैं, वहाँ वहाँ यदि पच्चक्खाण स्वयं लेता हो तो 'पच्चक्खामि' और वोसिरामि' और दूसरों को पच्चक्खाण कराता हो तो 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' बोले । एवं 'लेवालेवेणं' से पच आगार साधु के लिये हैं, गृहस्थ के लिए नहीं हैं, इसलिए ये पच आगार गृहस्थ न बोले ।

६. एगलठाण-पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं एगट्ठाणं, पच्चक्खाइ, तिविहं चउव्विहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

७. आयंबिल—पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ,

अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागरिआगारेणं आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

८. निव्विगइय—पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, निव्विगइयं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-

समाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाइ तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

९. चउविहार-उपवास-पच्चक्खाणं ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१०. तिविहाहार-उपवास-पच्चक्खाणं ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाणहारपोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं,

दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

११. विगइ - पच्चक्खाणं ।

विगइओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं वोसिरइ ॥

१२. देसावगासिक - पच्चक्खाणं ।

देसावगासियं, भोगं परिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१३. दत्तियं पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं,

---

१ ११-१२ ये दोनों पच्चक्खाण प्रत्येक पच्चक्खाण के अन्तिम पद 'वोसिरइ' के पहले जो चौदह नियम धारता हो तो उच्चरे। जो चौदह नियम नहीं धारता हो तो ये दोनों पच्चक्खाण न उच्चरे।

खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खाइ, तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१४. दिवसचरिम - चउविहार - पच्चक्खाणं ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१५. दिवसचरिम - दुविहार - पच्चक्खाणं ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

१६. पाणहार - पच्चक्खाणं ।

पाणहारं दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वस-माहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

१७. भवचरिम - पच्चक्खाणं ।

भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ[१] ॥

१८. गंठिसहिअ, मुट्ठिसहिअ और अंगुट्ठसहिअ आदि अभिग्रह का पच्चक्खाण ।

गंठिसहिअं मुट्ठिसहिअं वा पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१ इस पच्चक्खाण में पाँचवाँ 'चोलपट्टागारेण' चोलपट्टा का आगार साधु के लिए होता है ।

पच्चक्खाण की आगार संख्या—

दो चेव नमुक्कारे, आगारा छच्च पोरिसिए उ ।
सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणयम्मि अट्ठेव ॥ १ ॥
सत्तेगट्ठाणेसु अ, अट्ठेव य अंबिलम्मि आगारा ।
पंचेव अब्भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥
पंच चउरो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ठ नव य आगारा ।
अप्पावरणे पंच चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥

पच्चक्खाण करने का फल—

पच्चक्खाणमिणं सेविऊण भावेण जिणवरुद्दिट्ठं ।
पत्ता अणंतजीवा सासयसुक्खं अणाबाहं ॥ १ ॥

॥ इति पच्चक्खाणसूत्राणि ॥

अथ पौषध-विधि।

आठ-पहरी पौषधविधि ॥

-∞∞-

पोसह के उपकरण लेकर उपाश्रयमें जावें, वहां पर गुरुमहाराजका सांनिध्य न हो तो सामायिककी विधिके अनुसार स्थापनाचार्यकी स्थापना करके विधिपूर्वक गुरुवंदन करें। पीछे खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं' पढकर, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह मुँहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ऐसा कहकर मुँहपत्तिकी पडिलेहना करे। पश्चात् खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह संदिसाहुं ? 'इच्छं', फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!'पोसह ठाउं ?' 'इच्छं,' कहकर खमासमण देकर खड़े हो जाय और हाथ जोड़कर, आधा अंग नमाकर, तीन नवकार गिने। पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर नीचे लिखा हुआ पोसहका पच्चक्खाण तीन वार बड़े आदमीसे उचारे या स्वयं उच्चार कर ले।

पोसहका पच्चक्खाण ॥

करेमि भंते पोसहं, आहार पोसहं, देसओ सव्वओ वा, सरीरसकार-पोसहं। सव्वओ बंभचेर-पोसहं। सव्वओ अव्वावारपोसहं। सव्वओ चउव्विहे पोसहे। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,

जाव अहोरत्तिं[1] पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

पीछे इच्छं 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक मुँहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं,' कहकर खमासमण देकर मुँहपत्ति पडिलेहन करे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक संदिसाहुं ? इच्छं'। इच्छामि० इच्छा० सामायिक ठाउं ? 'इच्छं' कहकर, खमासमण देकर, खड़े हो, तीन नवकार गिने। पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक दंडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर 'करेमि भंते सामाइयं' का पाठ तीन वार उच्चरे, इसमें 'जाव नियमं' की जगह 'जाव पोसहं,' बोले। (यहां 'इरियावहियं' न बोले) पीछे 'इच्छामि० इच्छा० वेसणो संदिसाहुं ? 'इच्छं,' 'इच्छामि० इच्छा० वेसणो ठाउं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? 'इच्छं,' कहकर खमासमण देकर खड़े-ही खड़े आठ नवकार गिने। पश्चात् शीत आदि परिषह निवारण के लिए वस्त्रकी आवश्यकता हो तो इच्छामि० इच्छा० पंगुरण संदिसाहुं ? 'इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० पंगुरण पडिग्गहुं ? इच्छं' ऐसा कहकर

[1] सिर्फ दिनका पोषध लेना हो तो "जाव दिवसं" दिन-रात का करना हो तो 'जाव अहोरत्तिं' और सिर्फ रातका करना हो तो 'जावसेस दिवसं रत्तिं' कहना चाहिये।

वस्त्र ग्रहण करे। पश्चात् 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं संदिसाहुं ?
'इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं करूं ? इच्छं,'। इस प्रकार
पौषध लेकर राई प्रतिक्रमण पहले नहीं किया हो तो करे, किंतु
इसमें चार थुई के देववन्दन के बाद नमोऽत्थु णं कहकर
खमासमण पूर्वक 'बहुवेलं,' का आदेश लेकर पीछे आचार्यजी
मिश्र इत्यादि कहे। प्रतिक्रमण पूरा होनेके बाद, पडिलेहन,
नीचे लिखी विधिके अनुसार करें॥

पडिलेहन-विधि।

खमासमण देकर 'इरियावहियं०' तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०
कहकर, एक लोगस्सका काउस्सग करके, प्रगट लोगस्स
कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिसाहुं ?
इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं,' कहकर मुह-
पत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन
संदिसाहुं ? 'इच्छं,' इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं ?
इच्छं.' कहकर धोती और कटीसूत्र (कन्दोरा) पडिलेहे।
पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय
करी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं' ऐसा कहकर
स्थापनाचार्य की पडिलेहना 'शुद्धस्वरूप धारे' का पाठ
पूर्वक करके ऊंचे स्थान पर रक्खे। पश्चात् 'इच्छामि० इच्छा०
उपधि मुँहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं ? कहकर मुहपत्ति पडिलेवे।
पश्चात् 'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ?

इच्छं' । इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन करूं ? इच्छं' कहकर कंबल, वस्त्र आदि सब वस्तुएँ पडिलेहे । पश्चात् पौषधशाला की प्रमार्जना करके कचरे को जयणा पूर्वक परठे । पीछे खमासमण देकर ईरियावहियं० तस्स उत्तरी०, अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ! इच्छं,' कहकर एक नवकार गिने । पीछे 'उपदेशमाला' की सज्झाय कहकर फिर एक नवकार गिने ।

उपदेशमाला - सज्झाय ।

जग चूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरितिलओ । एगो लोगाइचो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छर-मुसभजिणो, छम्मासे वद्धमाणजिणचंदो । इह विहरिया निरसणा, जए ज्जए ओवमाणेणं ॥ २ ॥ जइत्ता तिलोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसजणस्स । इय जीयंतकराइं, एस खमा सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ, महइ महावद्ध-माणजिणचंदो । उवसग्गसहस्सेहिं वि, मेरु जहा वाय गुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणओ, पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय हियओ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइओ तं सिरेण इच्छंति । इअ गुरुजणमुहभणियं, कयंजली उडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह

सुरगणाण इंदो, गहगण तारागणाण जह चंदो । जहय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा । जं वा पुरश्रो काउं, विहरंति मुणि तहा सो वि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेइस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को । गंभीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिश्रो ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य । अविकत्थणो अचवलो, पसंतहियो गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा पत्ता अयरामरं पहं दाउं । आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं । तहवि न करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिणदिक्खियस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा । नेच्छइ आसणगहणं, सो विणो सव्व अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खियो साहू । अभिगमण वंदण नमंसणेण विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो । लोए वि पहू पुरिसो, किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रण्णो, तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना सहस्स महियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहवि य सा रायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं । उयरट्ठिएण इक्केण, ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणशु बहुयाण वि, मज्जाओ इह समत्त घरसारो । रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणे वि पुरिसो जहिं नत्थि

॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणावणाहिं, वरमप्पसक्खियं सुकयं । इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिट्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजमपएसु वट्टमाणस्स । किं परियत्तिय वेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं । उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण । सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तो नवि सी-उण्ह वायविज्झडिओ । संवच्छरमणसीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण, सच्छंद-बुद्धि-चरिएण । कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गव्विओ निरवणामो । साहुजणस्स गरहिओ, जणे वि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमार व्व केइ बुज्झंति । देहे खणपरिहाणि, जं किरदेवेहिं से कहियं ॥ २७ ॥ जइताव सत्तम सुर, विमाणवासी वि परिवडंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कह तं भण्णइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लियए । जं च मरणावसाणे, भव संसाराणुबंधि च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुज्झई कोई । जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारओ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ

रायलच्छीए । जीवामकम्म कलिमल, भरिय भगतो पईति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूण वि जीवाणं, सुदुक्करा इति पावचरियाइं । भयवं जा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पाय वडियाए । तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति ॥

इस प्रकार सज्झाय कह कर एक नवकार गिने । पश्चात् गुर्वादिक विद्यमान हो तो विधिपूर्वक उनकी वंदना करे । तदनन्तर पच्चक्खाण करके बहुवेलका आदेश लेवे । पीछे देवदर्शन करनेके लिये जिनमंदिरमें जावे ।

(जिसने पोसह किया हो, वह यदि देवदर्शन न करे तो, दो या पांच उपवासके प्रायश्चित्तका भागी होता है ।)

मंदिरमें इरियावहियं पूर्वक विधिसे चैत्यवंदन करके पच्चक्खाण करे । मंदिर और उपाश्रयसे निकलते समय तीन बार "आवस्सहि" कहे । और प्रवेश करते समय तीन बार "निस्सीहि" कहे । अब उपाश्रय आकर 'इरियावहियं' पडिकमे । पीछे धर्मध्यान करे, पढे गुने या व्याख्यान सुने । लघुनीति और बड़ी नीति परठनी हो तो पहले "अणुजाणह जस्सग्गो" कहे और पीछेसे तीन बार "वोसिरे" कहे । और 'इरियावहियं' पडिकमे । जब पौन पौरसी (प्रहर) दिन बीत जाय तो उग्घाडा पोरसी या बहु पडिपुन्ना पोरसी भणावे । यथा—'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा

पोरसी ? इच्छं' कह कर 'इच्छामि० इच्छा० इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कह कर, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करें। पीछे प्रकट लोगस्स कहकर, 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति संदिसाहुं ? इच्छं,' 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं,'। कह कर मुहपत्ति पडिलेहे। अनन्तर उपधानवाही भोजन-पात्र पडिलेही रखे। पीछे सज्झाय ध्यान करे। जब कालवेला हो तब मंदिर या उपाश्रयमें जाकर नीचे लिखी हुई विधिके अनुसार पांच शक्रस्तवसे देव-वंदन करें।

देव - वंदन - विधि ॥

'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं'। कह कर चैत्यवंदन और नमुत्थु णं० कहे। पश्चात् खमासमण देकर 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट 'लोगस्स' कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं', कह कर चैत्य वंदन करे इसके बाद जं किंचि० नमुत्थु णं कह कर खड़े हो जाय। पश्चात् 'अरिहंतचेइआणं०' 'अन्नत्थ०' कह कर एक नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे 'नमो अरिहंताणं' कहता हुआ काउस्सग्ग पार कर, 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कह कर पहली थुई कहे। इसके बाद लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ०' कह कर एक नवकार का काउस्सग्ग करके

दूसरी थुई कहे । पीछे 'पुक्खरवरदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ०' कह कर एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहे । पश्चात् 'सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ०' कह कर एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कह कर चौथी थुई कहें । अब नीचे बैठकर नमुत्थु णं०' कहे। अनन्तर खड़े होकर फिर अरिहंतचेइयाणं० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर नमोऽर्हत्० कहकर पहली थुई कहे, पश्चात् 'लोगस्स०' 'सव्वलोए०' 'अन्नत्थ०' कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर दूसरी थुई कहे । पीछे 'पुक्खरवरदीवड्ढे०' 'सुअस्स भगवओ०' 'अन्नत्थ' एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहे । पश्चात् 'सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ०' एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कह कर चौथी थुई कहे । अब नीचे बैठकर 'नमुत्थु णं' 'जावंति चेइआइं०' 'जावंत के वि साहू'० 'नमोऽर्हत्०' 'उवसग्गहरं०' या कोई स्तवन कह कर 'जय वीयराय०' कहे पश्चात् 'नमुत्थु णं' कहे ॥ इति ॥

ऊपर मुजब देववंदन करनेके बाद सज्झाय ध्यान करे। जल आदि पीनेकी इच्छा हो तो नीचे लिखी विधिके अनुसार पच्चक्खाण पारकर जल आदिक लेवे।

पच्चक्खाण पारने की विधि ।

खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे । पश्चात् प्रकट 'लोगस्स'

कहकर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खान पारनेको मुहपत्ति पडि-लेहुं ? इच्छं'। कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारूं ?' 'यथाशक्ति' कह-कर, फिर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारेमि ? 'तहत्ति' कहकर मुट्ठि बन्दकर एक नवकार गिने। पीछे जो पच्च-क्खाण किया हो उन पच्चक्खाणका नाम लेकर "पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं" बोल कर एक नव-कार गिने। पश्चात् खमासमण देकर 'इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं' कहकर 'जयउ सामिय० जं किंचि० जावंति चेइआइं० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जय वीयराय०' तक कहे। पीछे क्षणमात्र सज्झाय ध्यान करके पाणी पीवे। तथा उपधानवाही होवे तो पोरसी प्रमुख पच्चक्खाण पारकर आहार करे। पीछे आसन पर बैठा हुआ ही 'दिवसचरिमं' (तिविहार) पच्चक्खे। अनन्तर इरियाव-हियं० कहकर चैत्यवंदन करे। (यह चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तका है) ॥ इति ॥

यदि बहिर्भूमि (स्थंडिल) जाना हो तो आवस्सही कहकर उपयोगपूर्वक निर्जीव भूमीमें या स्थंडिलके पात्रमें जावे। 'अणुजाणह जस्सग्गो' कहकर मलमूत्र परठे। प्राशुक जलसे शुद्ध होकर तीन बार 'वोसिरामि' कह कर मलमूत्र वोसिरावे। पीछे पोसहशालामें 'निस्सीहि बोलते हुए आवे

और खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं०' पडिक्कमे । इसके बाद 'इच्छामि० इच्छा० गमणागमणं आलोऊं ? इच्छं' कहकर गमणागमण इस प्रकार आलोवे—"आवस्सही करी, प्रासुक देशे जई, मंडाला पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रस्रवण वोसरावी, निस्सीहि करी, पोसहशालामें आया । आवंतिहिं जंतेहिं जं खंडियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।" ऐसा कहकर बैठ जाय और शान्तिपूर्वक सज्झाय ध्यान करे । अब चौथे प्रहरमें संध्याकालको पडिलेहन नीचे लिखी विधिसे करे ।

संध्याकालीन-पडिलेहन-विधि ।

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! "बहु पडीपुन्ना पोरसी ?" इच्छं' कहकर, खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे 'इच्छामि०' 'इच्छा०' पडिलेहन करूं ? 'इच्छं' 'इच्छामि०' 'इच्छा० पोसहशाला प्रमार्जुं ? इच्छं' कहकर मुँहपत्ति पडिलेहे । पीछे इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहुं ? 'इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं इच्छं' कह कर आसन, धोती, कटासन आदि पडिलेहे और पोसहशाला से कचरा निकाल कर ईर्यादि देख कर जयणा पूर्वक परठे । पीछे खमासमणपूर्वक 'इरियावहियं' पडिक्कमे । अनन्तर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह

भगवन् ! पसाय करी पडिलेहन पडिलेहावोजी इच्छं' कहकर स्थापनाचार्यजी की 'शुद्धस्वरूप धारे' के पाठ पूर्वक (पृ० २) पडिलेहन करके उच्च स्थानपर रक्खें। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर खमासमण देकर मुँहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं' कहकर एक नवकार गिनकर उपदेशमाला की सज्झाय कहे। बाद एक नवकार गिने। पीछे पच्चक्खान करे। यदि उपधानवाहीने आहार किया हो तो दो वांदणा देकर पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि थंडिला पडिलेहन संदिसाहुं ? 'इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० उपधि थंडिला पडिलेहन करूं ? 'इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बेसणे संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बेसणे ठाउं ? इच्छं', कहकर बैठ जाय और वस्त्र, कंबल, चरवला आदि पडिलेहे। यदि उपवासी हो तो यहां पर, वस्त्रादिकी पडिलेहना कर कटिसूत्र और धोतीकी फिरसे पडिलेहन करे। पीछे उच्चार प्रस्रवणके २४ थंडिलोंको पडिलेहन करे।

चौविस थंडिला पडिलेहण-पाठ ॥

१ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे। २ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे। ३ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे। ४ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे। ५ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे। ६ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे। ७ आगाढे आसन्ने उच्चारे

पासवणे अहियासे। ८ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे। ९ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे। १० आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे। ११ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे। १२ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे। १३ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे। १४ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे। १५ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे। १६ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे। १७ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे। १८ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे। १९ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे। २० अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे। २१ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे। २२ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे। २३ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे। २४ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे। इन चौबीस थंडिलों में से ६ थंडिले शय्या के दो तरफ-याने दाहिने ३ और बांयीं ३ पडिलेहे। ६ थंडिले दरवाजे के भीतर दाहिने ३ और बायीं ३ पडिलेहे। ६ थंडिला दरवाजे के बाहर दोनों तरफ पडिलेहे और ६ थंडिले उच्चार प्रस्रवण की जगह हो वहां पर दोनों तरफ पडिलेहे ॥ इति ॥

अब प्रतिक्रमणका समय हो गया हो तो प्रतिक्रमण करें। प्रतिक्रमणमें 'आजुणा चार प्रहर' पाठ की जगह नीचे लिखा हुआ ठाणेक्रमणे का पाठ बोले।

ठाणेकमणे चंकमणे, आउत्ते, अणाउत्ते, हरियकाय संघट्टे बीयकाय संघट्टे, थावरकाय संघट्टे, छप्पइया संघट्टे, सव्वस्स वि देवसिय, दुच्चितिय, दुब्भासिय, दुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

और खुदोवद्दव का काउस्सग्ग किये बाद 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं०' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं' ऐसा कहकर बैठ जाय और तीन नवकार आदि सज्झाय ध्यान करे। प्रतिक्रमण करनेके बाद गुरु आदि की वैयावच्च करे। प्रहर रात तक सज्झाय ध्यान करे। यदि लघुनीति आदि करना हो तो जयणा पूर्वक थंडिल के स्थान जाकर लघुशंका करे। वापीस आकर 'भगवन् ? बहुपडिपुन्ना पोरसी ?' ऐसा बोलकर खमासमण पूर्वक इरियावहियं० पडिक्कमे। पीछे रात्रि संथारा का समय हो तब नीचे लिखी विधिके अनुसार रात्रि संथारा करे ।

रात्रि - संथारा - विधि ॥

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! "बहुपडिपुण्णा पोरिसी ?" इच्छं' कह कर 'इच्छामि० इच्छा० इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे। पश्चात् प्रगट लोगस्स कहे। अनन्तर 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा मुँहपत्ति पडलेहुं ? इच्छं कहकर मुंहपत्ति पडिलेहे। इसके बाद 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा

संदिसाहु इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा ठाऊं? इच्छं' कहे। फिर 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं? इच्छं' ऐसा कह कर चउक्कसाय० नमोत्थु णं० जावंति चेइयाइं०, जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहरं० जय वीयराय० तक चैत्यवन्दन करे। पश्चात् भूमि प्रमार्जन करके संथारा बीछावे। पीछे शरीर प्रमार्जन करके संथारे पर बैठकर राइसंथारे का नीचे लिखा पाठ पढ़े।

निसीहि निसीहि निसीहि णमो खमासमणाणं गोयमाइणं महामुणिणं।

(इतना पाठ कह कर तीन 'नवकार' और तीन 'करेमि भंते!' कहे। इसके बाद नीचे का पाठ बोले।)

अणुजाणह जिट्ठिज्जा! अणुजाणह परमगुरु गुणगणरयणेहिं मंडिअसरीरा। बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइसंथारए ठामि॥ १॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेणं वामपासेणं। कुक्कुडिपायपसारणं, अंतरं तु पमज्जए भूमिं॥ २॥ संकोइय संडासं, उवट्टंते अ कायपडिलेहा। दव्वाई उवओगं, ऊसास निरुंभणालोए॥ ३॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए।

आहार-मुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसरियं ॥४॥ आसव कसाय - बंधण, कलहा- भक्खाण -परप-रिवाओ। अरइरई पेसुन्नं; मायामोसं च मिच्छ-त्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइं, मुक्खमग्ग-संस-ग्गविग्घ-भूआइं। दुग्गइ-निबंधणाइं, अट्ठारस-पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोइ, नाह-मन्नस्स कस्स वि। एवं अदीणमणसो, अप्पाण-मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ। सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ ८ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा। तम्हा संयोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥९॥ अरिहंतो मह-देवो, जाव-ज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो। जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि शरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलीपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि। अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया। अरिहंता कित्तिअत्ताणं वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धा य मंगलं मज्झ, सिद्धा य मज्झ देवया। सिद्धा य कित्तिअत्ताणं वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया। आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया। उवज्झाया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया। साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि-दग - अगणि - मारुय इक्किक्के सत्त जोणिलक्खाओ। वणपत्तेय-अणंते दस चउदस जोणि-लक्खाओ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारयसुरेसु। तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा य

मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ, मइ खमिअ सव्वह जीवनिकाय । सिद्धहसाख आलोय-णह, मज्झह वैर न भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस्सु, चउदहराज भमंतु । ते मइ सव्व खमाविया, मज्झ वि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति ॥

यह पाठ बोलकर सात नवकार चिंतवन करता हुआ शयन करे, निद्रा न आवे वहां तक शुभ ध्यान करे । पछली रात्रिको उठ कर नवकारमंत्र गिने । पश्चात् खमासमणपूर्वक 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे । पीछे खमासमण देकर "कुसुमिण दुसुमिण" का काउस्सग्ग करे । पोसहवाला "कुसुमिणदुसुमिण" का काउस्सग पहले करे । (पश्चात् चैत्य-वंदन करे) । तदनन्तर राइप्रतिक्रमण करे । इसमें सात लाख की जगह नीचेका पाठ बोले—

संथारा उवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी, छप्पइआ संघट्टणकी, अचक्खु विसयकायकी, सव्वस्स वि राइय

दुचिंतिय दुब्भासिय दुचिट्ठिय इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ! इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

प्रतिक्रमण पूरा होनेके बाद प्रभात की पडिलेहन विधिके अनुसार पडिलेहन करे । पोसहशालामें से कचरा निकालकर इरियावहियं पडिक्कमे । पश्चात् दो खमासमण पूर्वक सज्झाय संदिसाहूं ? सज्झाय करूं ? आदेश मांगकर उपदेशमाला की सज्झाय करे । पीछे पोसह पारे ।

पोसह - पारने की विधि ॥

खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कह कर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारूं ? यथाशक्ति' । 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारेमि ? तहत्ति' कह कर दाहिना हाथ नीचे रखकर तीन नवकार गिने । पीछे खमासमण देकर मुँहपत्ति पडिलेवे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक पारुं ? यथाशक्ति,' फिर इच्छामि० इच्छ० सामायिक पारेमि ? तहत्ति' कहकर खमासमण पूर्वक आधा अंग नमा कर तीन नवकार गिने । पीछे घुटने टेक कर शिर नमा कर दाहिना हाथ नीचे रखकर—

भयवं ! दसण्णभद्दो, सुदंसणो थूलभद्द वइरो य । सफलीकयगिहचाया, साहू एवं विहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेण, नासइ पावं असंकिया भावा । फासुयदाणे निज्जर, अभिग्गहो

नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो । जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय - मसुहं वायाइ भासियं किंचि । असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय - पोसह- संठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि से करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दश मनका, दश वचन का, बारह कायाका, इन बत्तीस दूषणों में जो कोई दूषण लगा हो, उन सबका मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

इस प्रकार पोसह पार कर पोसह के उपगरण लेकर, देव- दर्शन करके घर आकर अतिथिसंविभाग व्रत आचरण करता हुआ आहार करे ।

इति आठ पहरी पौषध विधि ॥

दिन संबंधी चउपहरी-पौसह-विधि ।

आगे जो आठ प्रहर पोषध लेनेकी विधि लिखी है, उसी प्रकार चार प्रहर पोषध लेनेकी विधि है, किन्तु पौसह दंडक उच्चरते समय 'जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि' पाठ है, उस जगह 'जाव दिवसं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोलना चाहिए । इसके बाद पूर्ववत् सामायिक लेवे । यदि प्रतिक्रमण गुरुके साथ न किया हो तो गुरुके पास आकरके पौषध

और सामायिक की पूर्ववत् सब विधि करे। पीछे आलोयण खमासमणादि निमित्ते मुँहपत्ति पडिलेहे और दो वांदना देवे। बादमें 'इच्छा० सं० भ० राइअं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ अइआरो०' इत्यादि पाठ से राइ आलोवे। फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाका० सं० भ० अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं ? इच्छं खामेमि राइअं जं किंचि'० इत्यादि पाठ से राई खामे, अर्थात् विधि-पूर्वक गुरुवंदन करे। पश्चात् गुरु के समक्ष उपवास आदिका पचक्खाण करे। बाद दो खमासमण से बहुवेल संदिसावे। पडिलेहन पहले किया हो तो भी आदेश लेना—'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिसाहुं, ? इच्छं' इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं' कह कर मुँहपत्ति पडिलेहना। पीछे फिर 'इच्छामि० इच्छा० अंग-पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं' इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं ? इच्छं' कहकर मुँहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पमाय करी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं'। बाद 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुँहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कह कर कोई वस्त्र विना पडिलेहण किये रखा हो तो पडिलेहे, नहीं तो फिर सिर्फ आसन पडिलेहे। बाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय संदिसाहुं और सज्झाय करूं कह कर उपदेशमालाकी सज्झाय कहे। और पीछले प्रहर पचक्खाण करने के बाद दो खमासमण पूर्वक उपधि-पडिलेहन संदिसाहुं ? और उपधि-पडिलेहन करूं ?

ऐसा कहकर पडिलेहन करे, परंतु थंडिला पद न कहे और थंडिला पडिलेहे भी नहीं । बाकी सब विधि आठ प्रहर पौषध-विधि की तरह समझना ॥ इति ॥

रात्रि संबंधी चउपहरी पोसह - विधि ।

जिसने दिनका चउपुहरी पोसह लिया हो, उसे यदि रात्रि पोसह का भाव हुआ हो तो वह संध्या का पडिलेहन और पच्चक्खाण करनेके बाद, दो खमासमण पूर्वक पोसह मुँहपत्ति पडिलेहन करे, पश्चात् दो खमासमणपूर्वक पोसह का आदेश मांग कर, तीन नवकार गिन कर तीन बार पोसह दंडक उच्चरे, इसमें 'जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि' पाठ की जगह 'जाव रत्तिं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ उच्चरे । इसके बाद सामायिक मुँहपत्ति पडिहेलन कर जो पहिले विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करे और कारणविशेष दिनका पौषध न कर सके और रात्रिका पौषध लेने की इच्छा हुई हो तो, पहले सब उपगरणका पडिलेहन कर इरियावहियं० पडिक्कमे । पीछे, चउविहार पच्चक्खाण करके दो खमासमणपूर्वक पोसह-मुँहपत्ति पडिलेहे । पश्चात् दो खमासमणपूर्वक पोसह का आदेश मांग कर तीन नवकार गिन कर तीनबार पोसह-दंडक उच्चरे । इसमें संध्यासमय हो तो 'जाव रत्तिं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोले । इसके बाद सामायिक मुँहपत्ति पडिलेहन कर जो पहले विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करे । अंतमें पडिलेहन

का आदेश मांगने के बाद स्थानक शून्यता मिटाने के लिये सिर्फ एक आसन पडिलेहे, परन्तु पहले पडिलेहन न किया हो तो सब उपधि पडिलेहे। और उचार प्रस्रवण के चौवीस थंडिलों की भी पडिलेहन करे, बाकी सारी विधि पहलेकी तरह समझना ॥इति॥

देसावगासिक लेनेकी और पारने की विधि।

देसावगासिक लेने की विधि पोसह लेनेकी विधि के अनुसार है, परन्तु पोसह लेनेके आदेश में देसावगासिक का आदेश लेना चाहिये, जैसे—"देसावगासिक मुँहपत्ति पडिलेहुं ? देसावगासिक संदिस्साहुं ? देसावगासिक ठाऊं ? देसावगासिक दंडक उच्चरावोजी ?" इस प्रकार खमासमणपूर्वक आदेश मांग कर देसावगासिक का पच्चक्खाण तीन बार उच्चरे।

अथ देसावगासिकपाठः।

अहण्णं भंते ! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि। दव्व ओ, खित्तओ, कालओ, भावओ,। दव्वओ णं देसावगासियं, खित्तओणं इत्थ वा, अन्नत्थ वा, कालओ णं जाव धारणा, भावओ णं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अन्नेण केण वि रोगायंकेण वा एस मे परिणामो न परिवडइ ताव अभिग्गहो, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

इस प्रकार देसावगासिकका पच्चक्खाण तीन बार उच्चरे । और इसमें बहुवेल का आदेश लेवे नहीं । देसावगासिक जघन्य से तीन सामायिक और उत्कृष्ट से १५ सामायिक का होता है । देसावगासिक पारने की विधि पोसह पारने की विधिके अनुसार समझना; जैसे मुँहपत्ति पडिलेहन कर "देसावगासिक पारूं ! पारेमि" इत्यादि दो खमासमण पूर्वक आदेश मांग कर पारने का सूत्र "भयवं ! दसण्णभद्दो०" की चौथी गाथामें "सामाइय पोसहसंठियस्स" की जगह 'सामाइय देसावगासियं संठियस्स' इत्यादि पाठ कहे ॥ इति ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि ॥

(१) प्रथमं बृहदजितशान्तिस्तवनं स्मरणम् ।

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं । जय-गुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ॥ ववगयमंगुल भावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ २ (गाहा) ॥ सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) ॥ अजिअजिण ! सुह-प्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नामकित्तणं । तह य धिइ-मइ-प्पव-त्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ (मागहिआ) ॥

किरिया-विहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि-सिद्धि-गयं। अजिअस्स य संति-महा-मुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) ॥ पुरिसा ! जइ दुक्ख-वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख-कारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ (मागहिआ) ॥ अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअमुवरयजर-मरणं, सुर असुर-गरुल, भुयगवइ-पयय-पणिवइअं। अजिअमहमवि अ सुनय-नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज-महिअं सयय-मुवणमे ॥ ७ ॥ (संगययं) ॥ तं च जिणुत्तम-मुत्तम-नित्तम-सत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्तिसमाहि-निहिं । संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं दिसउ ॥८॥ (सोवाणयं) ॥ सावत्थि-पुव्वपत्थिवं च वर-हत्थिमत्थय-पसत्थ-वित्थिन्नसंथिअं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलायमाणवर-गंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथ-वारिहं । हत्थि-हत्थ-बाहुं धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिंजरं, पवर-लक्खणोवचिअसोम-चारु-रूवं, सुइ-सुह-मणाभिराम-परमरमणिज्ज-वरदेव-दुंदुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ॥ ९ ॥ (वेड्ढओ) ॥ अजिअं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं भवोह-रिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥ १० ॥

(रासालुद्धओ) ॥ कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए महप्पभावो, जो बावत्तरि-पुर-वर सहस्स वरनगर निगम-जणवय-वई, बत्तीसा-राय-वर - सहस्साणुयाय - मग्गो । चउदसवर - रयण - नव - महानिहि-चउसट्ठि - सहस्स - पवर - जुवईण सुंदर-वई, चुलसी - हय गय-रह - सयसहस्स - सामी, छन्नवइ - गाम -कोडिसामी आसि जो भारहंमि भयवं ! ॥ ११ ॥ (वेड्ढओ) ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे भयवं ! ॥ ११ ॥ (रासानंदियं) ॥ इक्खाग ! विदेह - नरीसर ! नर-वसहा ! मुणि-वसहा ! नव - सारयससि - सकलाणण ! विगय-तमा ! विहुअ - रया ! अजिउत्तम ! तेअगुणेहिं महा-मुणि ! अमिय - बला ? विउल - कुला ! पणमामि ते भव-भय - मूरण ! जग - सरणा ! मम - सरणं ॥ १३ ॥ (चित्त-लेहा) ॥ देव - दाणविंद - चंद - सूर - वंद ! हट्ठ - तुट्ठ - जिट्ठ-परम, लट्ठ - रूव ! धंत - रूप्प पट्ट - सेअ सुद्ध - निद्ध - धवल, दंत-पंति ! संति ! सत्ति - कित्ति - मुत्ति जुत्ति - गुत्ति - पवर !, दित्त-तेअ ! वंदधेअ सव्वलोअ - भाविअप्पभाव - णेअ ! पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (नारायओ) ॥ विमल - ससि - कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर - सूर - कराइरे - अतेअं । तिअसवइगणाइरेअ रूवं, धरणिधर - प्पवरा - इरेअ - सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तव संजमे अ

अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ (भुअगपरिरंगिअं) सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं) ॥ तित्थ-वर-पवत्तयं तमरयरहिअं, धीर-जण-थुअच्चिअं चुअकलि-कलुसं । संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं) ॥ विणओणय-सिरि-रइअंजलि-रिसि-गण-संथुअं थिमिअं, विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चिअं बहुसो । अइरुग्गय-सरय-दिवायर समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणंगण-वियरण-समुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किसलयमाला) ॥ असुर-गरुल-परिवंदिअं, किन्नरोरगणमंसिअं । देव-कोडि-सय-संथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं) ॥ आगया वरविमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं-हुलिअं । ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय चल-कुण्डलंगय-तिरीड-सोहंत-मउलि-माला ॥ २२ ॥ (वेड्ढओ) ॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा, वेर-विउत्ता, भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-संभम-पिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा । उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा, गाय-समोणयभत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिय-सीसपणामा ॥ २३ ॥ (रय-

णमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो, पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणि महंपि पंजलि, राग - दोस - भय - मोह - वज्जिअं । देव - दाणव - नरिंद-वंदिअं, संति मुत्तमं - महातवं नमे ॥ २५ ॥ (खित्तयं) ॥ अंबरंतर-वियारणिआहिं, ललिअ-हंस - वहूगामिणिआहिं । पीण - सोणि-थण - सालिणिआहिं, सकल - कमल - दल-लोअणिआहिं ॥२६॥ (दीवयं) ॥ पीण - निरंतर-थण भर - विणमिअ-गाय-लयाहिं, मणि - कंचण - पसि-ढिल - मेहल-सोहिअ - सोणि - तडाहिं । वर-खिंखिणि - नेउर - सतिलय-वलय - विभूसणिआहिं, रइकर - चउर-मणोहर - सुंदर - दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ (चित्तक्खरा) ॥ देव-सुंदरीहिं पाय-वंदिआहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणपगारएहिं, केहिं केहिं वि । अ-वंग-तिलय - पत्त - लेह—नामएहिं चिल्लएहिं संगयं - गयाहिं, भत्ति-सन्नि-विट्ठ-वंदणा गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥ (नाराअ ओ) ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ - मोहं । धुअ-सव्व किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं) ॥ थुअ-वंदिअस्सा रिसि - गणदेव - गणे हिं, तो देव - वहुहिं पयओ पण-मिअस्सा । जस्स जगुत्तम-सासणअस्सा, भत्ति-वसागय-पिंडि-अआहिं । देव - वरच्छरसा वहुआहिं,-सुर - वर - रइ - गुण - पंडि-अआहिं ॥ ३० ॥ (भासुरयं) ॥ वंस-सद्-तंति - ताल-मेलिए,

तिउ-क्खगभिराम - सह मीसए कए अ, सुइ - समाणणे अ सुद्ध-सज्ज - गीअ - पायजाल घंटिआहिं, वलय - मेहला - कलावनेउरा-भिराम सह - मीसए कए य देव - नट्टिआहिं हाव - भाव-विब्भम-प्पगारएहिं, नच्चिऊण-अंग हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय-सव्व सत्त-संति - कारयं, पसंत - सव्व-पाव - दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ (नाराअओ) ॥ छत्त-चामर पडाग-जूअ-जव-मंडिआ, झय-वर-मगर-तुरय - सिरिवच्छ - सुलंछणा । दीवसमुद्द - मंदर - दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह - सीह-रह चक्क-वरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिअयं) ॥ सहाव-लट्ठा-सम-प्पइट्ठा, अदोस-दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुअ- सव्व पावया, सव्व लोअहिअ मूल-पावया । संथुआ अजिअ - संति - पायया, हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरांतिका) ॥ एवं - तव - बल-विउलं, थुअं मए अजिय संति जिण - जुअलं । ववगयकम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥ ३६ ॥ (गाहा) ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनन्दिं । परिसा विअ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ (गाहा) ॥ पक्खिअअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स-भणिअव्वो । सो अव्वो

सयल-पुहवि रज्जं छड्डिउं आसमज्जं । तवमिव पढलग्गं जे जिणा मुत्तिमग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण - ससि-वयणाहिं फुल्ल - नेत्तुप्पलाहिं, थण - भर नमिराहिं मुट्ठि-गिज्झोदराहिं । ललिअ-भुअलयाहिं पीण - सोणि त्थलाहिं, सइ-सुर - रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥१४॥ अरिस - किडिभ-कुट्ठ-गंठि-कासाइसार-क्खय- जर - वण-लूआ - साससोसोदराणि । नह - मुह - दसणच्छी - कुच्छिकन्नाइरोगे, मह जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु-दुह - तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवरदुग-थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं । पढह सुणह सज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्धं जेण घाएह सिग्धं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअसत्तुपुत्त ! सिरि - अजिअ - जिणेसर !, तह अइरा-विससेण-तणय ! पंचम-चक्कीसर ! । तित्थंकर ! सोलसम ! संति ! जिण - वल्लह - संथुअ !, कुरु मंगल मम हरसु दुरियमखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥

इति द्वितीयं स्मरणम् ।

---

(३) तृतीयं नमिऊणनामकं स्मरणम् ।

नमिऊण पणय-सुर-गण-चूडामणि - किरणरंजिअं मुणिणो । चलण-जुअलं महाभय,-पणासणं संथवं वुच्छं ॥१॥ सडियकर-चरण - नह - मुह-निबुड्ड-नासा विवन्नलावण्णा । कुट्ठमहारोगा-

नल-फुलिंग - निद्दड्ढ- सव्वंगा ॥२॥ ते तुह चलणा-राहण-सलिलं-जलि-सेअ-वुड्ढिअ-च्छाया । वण - दव - दड्ढागिरि-पायवव्व पत्ता पुणो लच्छि ॥ ३ ॥ दुव्वाय-खुभिय - जलनिहि, उब्भडकल्लोल-भीसणारावे । संभंत - भय-विसंठुल,- निज्जामय-मुक्कवावारे ॥४॥ अविदलिय - जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पासजिण-चलण-जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर-पव णुद्ध य - वणदव - जालावलि - मिलिय-सयल-दुमगहणे । डज्झंत-मुद्धमय - वहु-भीसण - रव-भीसणम्मि वणे ॥६॥ जगगुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय-सयल - तिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत - भोगभीसण,-फुरिआरुण-नयण- तरल - जीहालं । उग्ग - भुअंगं नव,-जलय-सत्थहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडसरिसं,-दूर - परि - च्छूढ-विसमविस-वेगा । तुह नामक्खर - फुड - सिद्ध - मंत - गुरुआ नरा-लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंदसद्-दूल - सद्दभी-मासु । भय-विहलवुन्न-कायर-उल्लूरिअ-पंहिअ-सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह ! पणाम - मत्त - वावारा । ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआ-नल-नयणं, दूर-वियारिय-मुहं महाकायं । नह-कुलिस - घायविअ-लिअ - गइंद - कुंभ - त्थलाभोअं ॥१२॥ पणय - ससंभम-पत्थिव,-नह-मणिमाणिक्क-पडिअ - पडिमस्स । तुह वयण - पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल-दंतमुसलं, दीह-

कल्लोल-वुड्डिउच्छाहं । मह-पिंग-नयण-जुअलं, ससलिल-नव-जलहराऽऽरावं ॥ १४ ॥ भीमं महा-गइंदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति । जे तुम्ह चलण-जुअलं, मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख-खग्गाभिघाय-पविद्ध-उद्धुय-कबंधे । कुंत-विणिभिन्नकरि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धुररिउ-नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पावपसमिण ! पासजिण ! तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग-जल-जलण-विसहर-चोरारि-मइंदगय-रण-भयाइं । पास-जिणनाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं । भविय-जणाणंदयरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥१९॥ राय-भयजक्ख-रक्खस,-कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख पीडासु । संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माण-तुंगस्स । पासो पावं पसमेउ, सयल-भुवणयच्चिय-चलणो ॥२१॥

इति तृतीयं स्मरणम्

---

(४) चतुर्थं गणधरदेवस्तुतिरूपं स्मरणम् ।

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व-सत्त-संताण-सुहजणयं ॥ १ ॥ नासिय-सयल-किलेसा, निहय-कुलेस्सा-पसत्थ-सुह-लेस्सा । सिरिवद्ध-

माणतित्थस्स, मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्मबीया बीया परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा । सिद्धा तिजय - पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता, पंच - पयारं सया पयासंता आयरिआ तह तित्थं, निहय - कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्म - सुअ - वायगा वायगा य सि-अवाय-वायगा वाए । पवयण - पडणीय - कयऽवणंतु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ निव्वाण-साहणुज्जय-साहूणं जणिय - सव्व - साहज्जा । तित्थप्पभावगा ते, हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं, निव्वाण - फलं च चरणमवि हवइ । तित्थस्स दंसणं तं, मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छम्मो सुअधम्मो, समग्ग भव्वंगि वग्ग - कय - सम्मो । गुण - सुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ - भव्व सत्त - सिव - सम्मो । नीसेस- किलेसहरो, हवउ सया सयलसंघस्स ॥९॥ गुण-गण-गुरुणो गुरुणो, सिव - सुह- मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरी-वद्धमाण-पहु - पयडिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय-पडिवक्खा जक्खा, गोमुह-मायंग-गयमुह पमुक्खा । सिरि बंभसंतिसहिआ, कय-नय - रक्खा सिवं दिंतु ॥११॥ अंबा पडिहयडिंबा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स । चक्केसरि-वइरुट्टा, संति सुरी दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा- देवीउ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं । अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअसुयदेवयाइ समं ॥ १३ ॥ जिण - सासण - कयरक्खा, जक्खा

चउव्वीस - सामिश - मुगादि । सुहभावा संताइं तित्थस्स सया पयानन्तु ॥ १४ ॥ जिणपवयणम्मि निरया, निरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे । वेयावच्चकरावि अ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिण - समय - सिद्ध-समग्ग - वहिय भव्वाण जणिय साहज्जा । गीयरई गीयजसा, सपरिवारे सिवं दिसउ ॥ १६ ॥ गिह - गुत्त - खित्त - जल - थल-वण-पव्वयवासी देव देवीओ । जिणसासण - ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥१७॥ दस-दिसि पाला-स-क्खित्तपालया नवग्गहा सनक्खत्ता । जोइणि-राहु - ग्गह - काल-पास-कुलि-अद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सह काल-कंटएहिं, सविट्ठि - वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसन्तु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ - वाणमंतर, जोइस-वेमाणिआ य जे देवा । धरणिंद - सक्कसहिआ, दलंतु दुरियाइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणा-सिय-तमोहं । तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्ध-माणस्स ॥ २१ ॥ जो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्जवि सासणं जए जयइ । सिद्धि - पह-सासणं - कुपह-नासणं - सव्व-भय-महणं ॥ २२ ॥ सिरि - उसभसेण - पमुहा, हय-भयनिवहा दिसन्तु तित्थस्स । सव्व जिणाणं गणहारिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥२३॥ सिरि-वद्धमाण - तित्थाहिवेण, तित्थं समप्पियं जस्स । सम्मं सुहम्म - सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसंतु सयल-संघस्स । इयर-सुरा वि हु

मम्मं, जिण गणहर-कहिय-कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ निसंकं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए। जिणदत्ताणाय ठिओ सो, सुनिट्ठिय-अट्ठो सुही होइ ॥ २६ ॥

इति चतुर्थं स्मरणम्।

(५) पञ्चमं गुरुपारतन्त्र्यनामकं स्मरणम्।

मयरहियं गुण-गुण-रयण,-सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरु-जण-पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा पणट्ठ-संदेहा। पणयंगि-वग्गदा-विअसुह-संदोहा सुगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा, समत्थपरतित्थ-जणियसंखोहा। पडिभग्ग-लोह-जोहा, दंसिअ-सुमहत्थसत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ-सत्थ-वाहा, हय-दुहदाहा सिवंब-तरु साहा। संपाविअ-सुह-लाहा, खीरोदहिव्व अगाहा ॥४॥ सुगुण-जण-जणिय-पुज्जा, सज्जो निर-वज्ज-गहिय-पव्वज्जा। सिवसुह-साहणसज्जा,-भव-गुरु-गिरिचूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जसुहम्म-प्पमुहा, गुण-गण-निवहा सुरिंद-विहियमहा। ताण निसंकं नामं, न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ-जिण-देवो, देवायरिओ दुरंत-भवहारी। सिरि-नेमिचंद-सूरि उज्जोयण सूरिणो सुगुरू ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाणसूरि, पयडीकयसूरि-मंत-माहप्पो। पडिहयकसाय-पसरो, सरय-ससंकुव्व सुहजणओ ॥ ८ ॥ सुह-सील-चोर-चप्परण-पच्चलो निच्चलो जिणमयम्मि।

जुगपवर-सुद्ध - सिद्धंत - जाणओ पणयसुगुण-जणो ॥९॥ पुरओ दुल्लह-महिय,-ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्का वियारि-ऊणं, सीहेण व दव्वलिंगि-गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय-निसि विष्फुरंत - सच्छन्द - सूरि-मय - तिमिरं । सूरेण व सूरि-जिणे-सरेण हय-महिअदोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंत-सुहमुत्ती । पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद-जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ - नवंग-सुत्तत्थ - रयणकोसो पणासिअ-पओसो । भव - भीअ - भविअजण-मण, कय - संतोसो विगय-दोसो ॥ १३ ॥ जुग - पवरागम-सार - प्परूवणा - करण बन्धुरो धणिअं । सिरी - अभयदेव - सूरि, मुणि - पवरो परम - पस-मधरो ॥ १४ ॥ कय - सावय - संतासो, हरिव्व सारंग - भग्ग-सन्देहो । गयसमय - दप्पदलणो, आसाइय - पवर - कव्वरसो ॥ १५ ॥ भीम भव-काणणम्मि अ, दंसिअ-गुरु-वयण-रयण-संदोहो । नीसेस सत्त-गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणुओगप्पहाण - संचरणो । असम-मयराय-महणो, उड्ढमुहो सहइ जस्स करो ॥ १७ ॥ दंसिअ-निम्मलनिच्चल,-दंत-गणोगणिअ - सावओत्थ-भओ । गुरु-गिरि-गरुओ सरहुव्व सूरि जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुगपवरागम-पीऊ-सपाणपीणिय-मणा कया भव्वा । जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिय - पवरपवयण - सिरोमणी वूढ-दुव्वह खमो य । जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण तायकरो

॥ २० ॥ सच्चरिआणमहीणं, सुगुरूणं पारतंतमुव्वहइ । जयइ जिणदत्त-सूरि, सिरि-निलओ पणयमुणि-तिलओ ॥ २१ ॥

इति पञ्चमं स्मरणम् ।

(६) षष्ठं 'सिग्घमवहरउ' नामकं स्मरणम् ।

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण-वीराणाणुगामिसंघस्स । सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा । सिरि वद्ध-माण-जिण-तित्थ-सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुरा जे, जिण-वेयावच्च-कारिणो संति । अवहरिय-विग्घ संघा, हवंतु ते संघ-संतिकरा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणयट्ठिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीणं । निद्दलिय-दुरिय-विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पडिहयपडिवक्ख पक्ख लक्खा ते । कय सगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्त सिव सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्कापमुहा, जिण सासण देवया य जिण पणया । सिद्धाइया समेया, हवंतु संघस्स विग्घ हरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सच्चउर पुरट्ठिओ वद्धमाण जिण भत्तो । सिरि बंभसंति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्त गिह गुत्त संताण देस देवाहिदेवया ताओ । निव्वुइ पुर पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के-

सरि चक्कधरा, विहि पहरिउच्छिग्ग कंधरा धणियं । सिव सरणि लग्ग संघस्स, सव्वहा हरउ दिव्वाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सुसंवेण । जिणचंदोऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहू मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो सोमरू व्व हय तिमिरो । जिणचंदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए. ऽभयदेवपहुत्त दायगे वंदे । जिणचंदजिणेसर वद्धमाण तित्थस्स वुड्ढि कए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मणंति कुणंति जे य कारिंति । मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ ते वि ॥ १३ ॥ जिणदत्त गुणे नाणाइणो, सया जे धरिंति धरिंति । दंसिअ सिअवाय पए, नमामि साहम्मिआ ते वि १४ ॥

इति षष्ठं स्मरणम् ।

---

(७) सप्तमं उवसग्गहर-नामकं स्मरणम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविस निन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु फलो होइ । नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे. चिंतामणि कप्प

पायवल्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इय संथुओ महायस !, भत्ति-ब्भर निब्भरेण हिअएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥ ५ ॥

इति सप्तमं स्मरणम् ।

श्रीभक्तामर - स्तोत्रम् ।

(वसन्ततिलका-छन्दः ।)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,-मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमो - वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिन - पाद-युगं युगादा,-वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मय - तत्त्व - बोधा, - दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय - चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२ ॥ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनापि विबु-धार्चित - पादपीठ !, स्तोतुं समुद्यत - मतिर्विगतत्रपोऽहम् । बालं विहाय जल - संस्थितमिन्दु - बिम्ब, - मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु- प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? । कल्पान्त-कालपवनोद्धतनक्र - चक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजा-भ्याम् ? ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश !, कर्तुं

स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्म - वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज- शिशोः परिपालनार्थम् ? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास - धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् । यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चाम्र-चूतकलिका - निकरैक - हेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव-संतति-सन्निबद्धं, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम् । आक्रान्त-लोकमलि - नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु - भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद, - मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनी - दलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूद - बिन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवन-मस्त - समस्त - दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र - किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन - भूषण ! भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म - समं करोति ? ॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि - कर - द्युतिदुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जल-निधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥ यैः शान्तराग - रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक - ललामभूत ! । तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥ वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग - नेत्र - हारि, निःशेषनिर्जित-

जगत् - त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु - पलाश - कल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि - र्नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम् । कल्पान्त-कालमरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ? ॥ १५ ॥ निर्धूम - वर्त्तिरपवर्जित - तैलपूरः,कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोदरनिरुद्ध - महा - प्रभावः, सूर्यातिशायि - महिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारं, गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प - कान्ति, विद्योतयज्जग - दपूर्वशशाङ्क-बिम्बम् ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा ?, युष्मन्मुखेन्दु - दलितेषु तमस्सु नाथ ! । निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल - भार - नम्रैः ? ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच - शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु

हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि
शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र - रश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति
स्फुरदंशु - जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य - वर्णममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य
जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः
॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वर-
मनन्तमनङ्गकेतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरू-
पममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित !
बुद्धि - बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय - शंकरत्वात् । धाताऽसि
धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषो-
त्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !, तुभ्यं
नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र ?
यदि नाम गुणैरशेषै - स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रयजात - गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदा-
चिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक - तरु - संश्रितमुन्मयूख,-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरण - मस्त-
तमो - वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणि - मयूखशिखा - विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः

कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशु - लता - वितानं, तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् । उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर-वारिधार-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥ छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-मुच्चैःस्थितं स्थगित-भानु-करप्रतापम् । मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्जकान्ति-पर्युल्लसन्नखमयूख-शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि ? ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल, मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध - कोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४॥ भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः । बद्धक्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचल - संश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पान्त-काल - पवनोद्धत-वह्नि - कल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नाम - कीर्तन - जलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिल - कण्ठ - नीलं, क्रोधोद्धतं

फणिनमुत्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रम - युगेन निरस्त-शङ्क-स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरङ्ग-गज-गर्जित - भीम - नाद, - माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् । उद्यद्दिवाकर - मयूख - शिखाऽपविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्र- भिन्न—गज—शोणित-वारिवाह,-वेगावतार - तरणातुर - योध-भीमे । युद्धे जयं विजित-दुर्ज्जयजेय-पक्षा,-स्त्वत्पाद - पङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण - नक्रचक्र - पाठीन-पीठ- भयदोल्बण-वाडवाग्नौ । रङ्ग - त्तरंग - शिखर - स्थित-यानपात्रा,-स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत - भीषण-जलोदर-भार-भुग्ना', शोच्यां दशामुपगताश्च्युत — जीविताशाः । त्व-त्पाद - पङ्कजरजोऽमृत - दिग्ध - देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद - कण्ठमुरु - शृङ्खलवेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड - कोटि - निघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत - बन्ध - भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त - द्विपेन्द्रमृगराज - दवानलाहि - संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणै-र्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

इति श्रीभक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ।

(वसन्ततिलका-छन्दः ।)

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,–भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रि-पद्मम् । संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु, - पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतो,–स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ।
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप,–मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ? । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ? ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्त-वान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,–न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजना-न्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग, - मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः

सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून,-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना,स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्म-चौराः । प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरोऽपि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप,-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य,दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति । तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः

॥१६॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः । पानीय-मप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विष-विकारमपाकरोति ? ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते विविधवर्ण-विपर्ययेण ? ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहो ऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव, विष्वक् पतत्य विरला सुरपुष्प-वृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्ग-भाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्ध-भावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वलहेमरत्न, - सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्त-मुच्चै,-श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन,

मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुव मभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन । माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो-विभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना,-मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् । पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो ! यदसि कर्म–विपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! । अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा-दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सो-

ऽस्याऽभवन्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवना-
धिप ! ये त्रिसन्ध्य,-माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ! भुवि
जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !, मन्ये
न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव
पादयुगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह
जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशा-
यानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो !
सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि माम-
नर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि
महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि
भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात् क्रियाः
प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजन-
वत्सल ! हे शरण्य !, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ! । भक्त्या
नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि
॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य,-मासाद्य सादितरि-
पुप्रथितावदानम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,-वध्योऽस्मि
चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिता-
खिलवस्तुसार !, संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! । त्रायस्व
देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः

॥४१॥ यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि सन्ततिमञ्चितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! "भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि" ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः । त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो ! रच-यन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्र — प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति ॥

श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचिता ग्रहशान्तिः ।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् । ग्रहशान्तिं प्रव-क्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥१ ॥ जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै, - नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्य मार्त्तण्ड,—श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपूज्ये भूमिपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा । वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाऽजितसुपार्श्वा,-श्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्चेषु गीष्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्वरः । नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीड्यन्ति खेचराः । तदा सम्पूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥

नवग्रहपूजा।

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्करः। शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ १ ॥ इति श्रीसूर्यपूजा ॥ चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिपः। प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु जयं ध्रुवम् ॥ २ ॥ इति श्रीचन्द्रपूजा ॥ सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्तिं जयश्रियम्। रक्षां कुरु धरासूनो, अशुभोऽपि शुभो भव ॥ ३ ॥ इति श्रीभौमपूजा ॥ विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा। महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भूयाः सदा बुधः ॥ ४ ॥ इति श्रीबुधपूजा ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वाश्चाभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमः ॥ ५ ॥ एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभः शुभो भव। शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चितः ॥ ६ ॥ इति श्रीगुरुपूजा ॥ पुष्पदन्तजिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चितः। प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ७ ॥ इति श्रीशुक्रपूजा ॥ श्रीसुव्रतजिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्याङ्गसंभवः। प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ८ ॥ इति श्रीशनैश्चरपूजा ॥ श्रीनेमिनाथतीर्थेश,-नामतः सिंहिकासुतः। प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ९ ॥ इति श्रीराहुपूजा ॥ राहोः सप्तमराशिस्थ,-कारणे दृश्यमंबरे। श्रीमल्लिपार्श्वयोर्नाम्ना, केतोः शान्तिं जयश्रियम् ॥ १० ॥ इति श्रीकेतुपूजा ॥ इति भगिन्या स्वस्वग्रहशुभाशुभनिवेशजिनग्रहपूजा कार्या, तेन सर्वपापापाः शान्तिर्भवति। अथ सर्वेषां वा महाग्रामेश्वरश्रीवाणामयं विधिः ॥

नव-कोष्टकमालेख्यं, मंडलं चतुरस्रकम्। ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या वक्ष्यमाणाः क्रमेण तु ॥ ११ ॥ मध्ये हि भास्करः स्थाप्यः पूर्वदक्षिणतः शशी। दक्षिणस्यां धरासूनु-र्बुधः पूर्वोत्तरेण च ॥ १२ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः, पूर्वस्यां भृगुनन्दनः। पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ १३ ॥ पश्चिमोत्तरतः केतु-रिति स्थाप्याः क्रमाद् ग्रहाः। पट्टे स्थालेऽथ वाऽऽग्नेय्यां, ईशान्यां तु सदा बुधैः ॥ १४ ॥ आर्या ॥ आदित्यसोममङ्गल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः। केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपति-पुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥ १५ ॥ इति भणित्वा पंचवर्णकुसुमाञ्जलिक्षेपश्च जिनपूजा च कार्या। पुष्पगन्धादिभिर्धूपै र्नैवेद्यैः फलसंयुतैः। वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ १६ ॥ जिननामकृतो-च्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः। पूजिता संस्तुता भक्त्या, ग्रहाः सन्तु सुखावहाः ॥ १७ ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्ति-हेतवे। नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ १८ ॥ एवं यथानामकृताभिषेकै - रालेपनैर्धूपनपूजनैश्च। फलैश्च नैवेद्यवरैर्जि-नानां, नाम्ना ग्रहेन्द्रा वरदा भवन्तु ॥ १९ ॥ साधुभ्यो दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये। चतुर्विधस्य सङ्घस्य, बहुमानेन पूजनम् ॥ २० ॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पञ्चमः श्रुतकेवली। विद्या-प्रवादतः पूर्वात्, ग्रहशान्तिरुदीरिता ॥ २१ ॥ इति ॥

अथ नवग्रह-पूजा-जाप-विधिः ॥

कस्मिन् ग्रहे कस्य जिनस्य कया रीत्या पूजा कार्या तदा-ख्याति । रविपीडायाम् —रक्तपुष्पैः श्रीपद्मप्रभपूजा कार्या, 'ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं' तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । चन्द्रपीडायाम्— चंदनसेवन्त्रपुष्पैः श्रीचन्द्रप्रभपूजा कार्या, 'ॐ ह्रीं नमो आयरि-याणं' तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । भौमपीडायाम्— कुंकुमेन च रक्तपुष्पैः श्रीवासुपूज्यपूजा विधेया, 'ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । बुधपीडायाम्— दुग्धस्नाननैवेद्यफलादिभिः श्रीशान्तिनाथपूजा कर्त्तव्या, 'ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । गुरुपीडायाम् — दधिभोजनजम्बीरादिफलेन च चन्दनादिविलेपनेन श्रीआदिनाथपूजा करणीया,' 'ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं', एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कर्त्तव्यः । शुक्रपीडायाम्— श्वेतपुष्पैश्चन्दनादिना श्रीसुविधिनाथपूजा कार्या, चैत्ये घृतदानं कार्यम् । 'ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । शनैश्चरपीडायाम्— नीलपुष्पैः श्रीमुनिसुव्रतपूजा कार्या, तैल-स्नान-दाने कर्त्तव्ये, 'ॐ ह्रीं नमो लोए सव्व साहूणं,' एतस्य अष्टोत्तर-शतजपः कार्यः । राहुपीडायाम्— नीलपुष्पैः श्रीनेमिनाथपूजा कर-णीया, 'ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । केतुपीडायाम्— दाडिमादिपुष्पैः श्रीपार्श्वनाथपूजा कार्या, 'ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । इति । सर्वग्रह-पीडायाम्— श्रीसूर्य-सोमाङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतवः सर्वे ग्रहा मम सानुग्रहा भवन्तु स्वाहा । 'ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा' एतस्य मंत्रस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः, तेन नवग्रहपीडोपशान्तिः स्यात् ॥ इति नवग्रहपूजाजापविधिः ॥

श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रम् ।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ एष पञ्च-नमस्कारः, सर्वपापक्षयङ्करः । मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः । कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् । मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्या - ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभ-विवर्जितः । देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च । सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षेद्, आग्नेयीं विजितेन्द्रियः । दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैरृतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत्सर्वा-मीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्ह-न्नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ऋषभो मस्तकं रक्षेद्, अजितोऽपि विलोचने । संभवः कर्णयुगलेऽभिनन्दनस्तु नासिके ॥१२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती

रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः। जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभाभिधः ॥ १३ ॥ कण्ठं श्री सुविधी रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः। श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ।१४। अंगुलीर्विमलो रक्षे, – दनन्तोऽसौ स्तनावपि । श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षे,-दरो रोमकटीतटम् । मल्लिरुरुपृष्ठवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ।१६। पादांगुलीर्नमी रक्षेद्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम् । श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकम् ।१७। पृथिवीजलतेजस्क-वाय्वाकाशमयं जगत्। रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ राजद्वारे श्मशाने च, संग्रामे शत्रुसंकटे । व्याघ्रचोराग्निसर्पादि-भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १६ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनी, ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् । तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुखसम्पदः ॥२२॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवासरम् । कमलप्रभराजेन्द्रः, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेत् सकमलप्रभाख्यो, लक्ष्मीं मनोवाञ्छितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः । वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥२५॥ इति ॥

श्रीऋषिमण्डल-स्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्य - मक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् । अग्नि-ज्वालासमं नाद-बिन्दुरेखासमन्वितम् ॥ १ ॥ अग्निज्वाला-समाक्रातं, मनोमलविशोधकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्य, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः । ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेत - दर्हदाद्यष्टकं शुभम् । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितम् ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षेत्तु मस्तकम् । तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥ ७ ॥ पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकाम् । नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेद्, पादान्तमष्टमस्मृतम् ॥ ८ ॥ पूर्वंप्रणवतः सान्तः, सरेफो व्यब्धिपञ्चपान् । सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचैते ज्ञान-दर्शने । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सान्तःसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा ज्ञानदर्शन-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः । जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्ये सङ्गतो मेरुः, कुटलक्षैरलंकृतः । उच्चैरुच्चैस्तरस्तार - स्तारामण्डल-मण्डितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारान्तं, बीजमध्यास्य सर्वगम् ।

नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्यतोज्झितम् । निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम् । तामसं चिरसम्बुद्धं, तैजसं शर्वरीसमम् ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं, परम्परपरापरम् ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् । पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरम् ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसम्बुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुम् । ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकम् ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः । तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र सङ्गताः ॥ २१ ॥ नादश्चन्द्रसमाकारो, बिन्दुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नादस्थितिसमाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितसंलीनौ, पार्श्वमल्ली जिनोत्तमौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थंकराः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥

गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः। सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥३२॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥ ३५ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं,

मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः । ताभिरभ्युद्यतज्योति रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठ-वासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी-गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्या क्लिन्नाऽजिता मदद्रवा ॥४६॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं कीर्तिं धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः, श्रीऋषिमण्डलस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राण-कृतोऽनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ५० ॥ राज्य-भ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम् लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यै-वाष्टमहासिद्धि-र्गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्जपत्रे लिखि-

त्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीति-विनाशकम् ॥ ५४ ॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठवर्त्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववादिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्रिको जापः, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥६१॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गतः स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तुतीनामुत्तमं परम् । पठनात स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥ ६३ ॥ इति ॥

तिजयपहुत्त - नामकस्तोत्रम् ।

तिजय - पहुत्त - पयासय, अट्ठ - महापाडिहेरजुत्ताणं । समयक्खित्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य

असीया, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो । नासेउ सयल - दुरिअं, भविआणं भत्ति - जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा । गह - भूअ - रक्ख - साइणि, - घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलणहरिकरि, - चोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः । आलिहिय - नाम - गब्भं चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह य गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी महजाला, माणवी वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता । माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस - कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरी जिणाण सयं । विविहरयणाइवन्नो - वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीसअइसयजुआ, अट्ठ - महापाडिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम, - मरगयघणसन्निहं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे, स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइवाणवंतर जोइसवासी - विमाणवासी अ । जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम, स्वाहा ॥१२॥ चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं । एगंतराइगह - भूअ, - साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं

मंतं दुवारि पडिलिहिश्रं । दुरिश्रारिविजयवंतं, निब्भंतं निच्च-
मच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥

श्रीजिनदत्तसूरिस्तुतिः

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठंति ॥
मरुस्थलीकल्पतरुः स जीया,-द्युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥
चिंतामणिः कल्पतरुर्वराकः, कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्याः ॥
प्रसीदतः श्रीजिनदत्तसूरेः, सर्वं पदं हस्तिपदे प्रविष्टम् ॥ २ ॥
नो योगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी,
नो वेतालपिशाचराक्षसगणा नो रोगशोकौ भयम् ॥
नो मारी न च विग्रहप्रभृतयः प्रीत्या प्रणन्त्युच्चकैः,
यस्ते श्रीजिनदत्तसूरिगुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥ ३ ॥

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम् ।

(द्रुतविलम्बितं छन्दः ।)

कलमरालविहङ्गमवाहना, सितदुकूलविभूषणभूषिता ।
प्रणतभूमिरुहामृतसारणी, प्रवरदेहविभाभरधारिणी ॥ १ ॥
अमृतपूर्णकमण्डलुधारिणी, त्रिदश - दानव - मानवसेविता ।
भगवती परमेव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाम्बुजम् ॥ २ ॥

जिनपतिप्रथिताखिलवाङ्मयी, गणधराननमण्डपनर्तकी ।
गुरुमुखाम्बुजखेलनहंसिका, विजयते जगति श्रुतदेवता ॥ ३ ॥

अमृतदीधितिबिम्बसमाननां, त्रिजगतीजननिर्मितमाननाम् ।
नवरसामृतवीचिसरस्वतीं, प्रमुदितः प्रणमामि सरस्वतीम् ॥ ४ ॥

विततकेतकपत्रविलोचने, विहितसंसृतिदुष्कृतमोचने ।
धवलपक्षविहङ्गमलाञ्छिते, जय सरस्वती ! पूरितवाञ्छिते ॥ ५ ॥

भवदनुग्रहलेशतरङ्गिता - स्त्वदुचितं प्रवदन्ति विपश्चितः ।
नृपसभासु यतः कमलाबलात्, कुचकलाललनानि वितन्वते ॥६॥

गतधना अपि हि त्वदनुग्रहात्, कलितकोमलवाक्यसुधोर्मयः ।
चकितबालकुरङ्गविलोचना, जनमनांसि हरन्ति तरां नराः ॥ ७ ॥

करसरोरुहखेलनचञ्चला, तव विभाति वरा जपमालिका ।
श्रुतपयोनिधिमध्यविकस्वरो - ज्ज्वलतरङ्गकलाग्रहसाग्रहा ॥८॥

द्विरद-केसरि- मारि - भुजङ्गमा -ऽसहनतस्कर - राज - रुजां भयम् ।
तव गुणावलिगानतरङ्गिणां, न भविनां भवति श्रुतदेवते ॥ ६ ॥

(स्रग्धरावृत्तम् ।)

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूँ ततः श्रीं तदनु हसकल ह्रींमथो ऐं नमोऽन्ते,
लक्षं साक्षाज्जपेद् यः किल शुभविधिना सत्तपा ब्रह्मचारी ।
निर्यान्तीं चन्द्रबिम्बात् कलयति मनसा त्वां जगच्चन्द्रिकाभां,
सोऽत्यर्थं वह्निकुण्डे विहितघृतहुतिः स्याद्दशांशेन विद्वान् ॥१०॥

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्।)

रे रे लक्षण - काव्य - नाटक - कथा - चम्पूसमालोकने,
कायासं वितनोपि बालिश ! मुधा किं नम्रवक्त्राम्बुजः।
भक्त्याऽऽराधय मन्त्रराजमहसा येनाऽनिशं भारतीं,
येन त्वं कवितावितानसविताऽद्वैतः प्रबुद्धायसे ॥ ११ ॥

चञ्चचन्द्रमुखी प्रसिद्धमहिमा स्वच्छन्दराज्यप्रदा-
ऽनायासेन सुरासुरेश्वरगणैरभ्यर्चिता भावतः।
देवी संस्तुतवैभवा मलयजा या पारगाङ्गद्युतिः,
सा मां पातु सरस्वती भगवती त्रैलोक्यसंजीवनी ॥ १२ ॥

(द्रुतविलम्बितं वृत्तम।)

स्तवनमेतदनेकगुणान्वितं, पठति यो भविकः प्रमुदा प्रगे।
स सहसा मधुरैर्वचनामृतै- र्नृपगणानपि रञ्जयति स्फुटम् ॥१३॥

॥ इत्यनुभूतसरस्वतीस्तवनम् ॥

स्तुति - स्तवन - सज्झायादि - संग्रह ॥

द्वितीया स्तुतिः ।

मन शुद्ध वंदो भावे भवियण श्रीसीमंधर रायाजी, पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचन वरणी कायाजी। श्रेयांस नरपति सत्यकि नन्दन वृषभलंछन सुखदायाजी, विजय भली पुखलावइ

विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हुआ होस्ये जेह अनन्ताजी, संप्रति काले पंचविदेहे वरते बीस विख्याताजी । अतिशयवंत अनन्त गुणाकर जगबंधव जगत्राताजी, ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिव सुख शाताजी ॥२॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी, मोह मिथ्यात्व तिमिर भग्नाशन अभिनव सूर समाणीजी । भवोदधि तरणी मोक्ष नीसरणी नयनिक्षेप सोहाणीजी, ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भवि प्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचांगुली माईजी, विघन विडारिणी संपत्ति कारिणी सेवक जन सुखदाईजी । त्रिभुवनमोहिनी अंतरयामिनी जग जस ज्योति सवाईजी, सांनिध्यकारी संघने होज्यो श्रीजिनहर्ष सुहाईजी ॥ ४ ॥ इति द्वितीया स्तुतिः ॥

पंचमी - स्तुतिः ।

पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्यपदवी वश्याय मन्त्रोपमम् । येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारणं, श्रीपंचाननलाञ्छनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादाहराः, पंचाणुव्रतपंचसुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः । कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संयम-पंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधीशेन संग्रन्थितं, पंचज्ञानविचार-सारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी-रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥

पंचनां परमेष्टिनां स्थिरतया श्रीपंचमैत्तश्रियं, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् । सहं पंचजगन्मनोमतिकृतां स्वारत्नपञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका श्राविका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमी स्तुतिः ॥

अष्टमी - स्तुतिः ।

चउवीशे जिनवर प्रणमुं हूँ नितमेव, आठम दिन करीये चंद्राप्रभुजीनी सेव । मूरति मन मोहन जाणे पूनमचंद, दीठे दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजे प्रभुजीना पाय, इन्द्राणी अपच्छरा कर जोड़ी गुण गाय । नंदीसर द्वीपे मिल सुरवरनी कोड, अट्ठाई महोत्सव करतां होडाहोड ॥ २ ॥ शत्रुञ्जय शिखरे जाणी लाभ अपार, चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार । भवियणने तारे देई धरम उपदेश, दूध साकरथी पण वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसह पडिकमणुं करिये व्रत पचक्खाण, आठम तप करतां आठ करमनी हाण । आठ मंगल थाये दिन दिन कोड कल्याण, जिनसुखसूरि कहे शासनदेवी सुजाण ॥ ४ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥

मौनैकादशी स्तुतिः ।

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलम् ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि,

चितां कल्याणानां जपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रश्रेण्या-गमनगमनंभूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयम् । जिनानामप्यायुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, चितां० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कतॄणामिति च विदितं शुद्धसमये । अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयूर्वहृमुदः, ॥चि०॥ ॥ ३ ॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्र-प्रमुदिता-स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः । तेषो यत्कतॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, चितां० ॥ ४ ॥ इति ॥

पार्श्वजिन स्तुति ।

द्रैं द्रैं कि धपमप, धुधुमि धोंधों धस कि धर धप धोरवं ॥ दोंदोंकि दोंदों, दाद्दिदि दाग्डिदिकि, द्रमकि द्रणरण, द्रेणवं ॥ झझिझ्कि झं झं झणणरणरण, निजकि निजजनरंजनम् ॥ सुरशैलशिखरे. भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनम् ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगुड्दां धुधुकि धुटनट पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण, रणकी रोणे, गुणण गुणगण गौरवं ॥ झझिझ्कि झं झं, झणणरणरण, निजकी निजजनसज्जनाः ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकल मीश महे जिना, ॥ २ ॥ ठक्ठिं कि ठुंठुं, ठहिं ठहिक, ठहिपट्टा ताड्यते ॥ तललोंकि लोंलों, श्रेंपि श्रेंपिनि, डेंपिडेंपिनि वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कलरवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां,

नमति सुरनर मुच्छवे ॥३॥ पुंदांकिपुंदां पुपुद्दि पुंदां पुपुद्दि दोंदों अंबरे ॥ चाचपट चचपट, रणकि णेंणें डणण डंडं डंबरं ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, ससस ससं सुर सेवता ॥ जिननाट्यरंगे कुशलमुनिशं, दिसतु शासन देवता ॥

इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृतापार्श्वजिनस्तुतिः ॥

नवपदकी स्तुति ।

निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रसधामी जी ॥ श्रीसिद्ध-चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंग जी, ते मानव श्रीपाल तणी परें पामे सुख सुर संगेजी ॥१॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंताजी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी । ते सघला जिननायक नमियें, जिण ए नीति प्रकाशी जी ॥२॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशे जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसे जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारोजी ॥ ३ ॥ विमल कमलदल लोयण सुन्दर, श्री चक्केसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक भविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ

नायक सद्गुरु, श्रीजिनभक्ति सुखिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पभणे, श्री जिनलाभ सूरिंदाजी ॥४॥ इति ॥ श्रीनवपद स्तुति ॥

श्रीनेमिनाथजीकी स्तुति ।

सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अक्षोभितं, घनसघन-श्याम-शरीर सुन्दर शंखलंच्छनशोभितं ॥ शिवादेविनंदन-त्रिजग-वंदन-भविक-कमलजिनेश्वरं, गिरनारगिरिवरशिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्री आदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघ सुख करू ॥ २ ॥ इग्यारे अंग उपांग बारे दश पयन्ना आणिये, छ च्छेद ग्रंथ पसत्थ अत्था चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिनमत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी भाष्य पैंतालीस आगम ध्याइए ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा भवियण सुखकरू, दुख हरे अंबा लुंब सुन्दर दुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंडण नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघसहुने सदा-मंगल करो अंबा देविये ॥ ४ ॥ इति ॥

दीपमालिस्तुतिः ।

पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रभुहस्त-पालविपुल श्रीशुक्रशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे तूर्यार-

कांते शुभे, स्नातो यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥१॥ यद्भागमनोद्भवव्रतवरज्ञानाप्तराप्तिक्षणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमान्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघ चेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसि च ॥ २ ॥ अर्थान्पूर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध-स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयां चक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्वाञ्छकाराकप्रवचनं चेतश्चमत्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिपतीर्थभावनपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिनचंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनोः, या चक्रेऽवमकष्टहन्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम्॥४॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

श्रीमहावीरस्वामिकी स्तुति ।

बालापणे डाबे पाय चांप्यो, जाणे सहू थर हर मेरु कांप्यो । इसु महावीरतणुं चरित्र, हूँ सांभली जन्म करुं पवित्र ॥१॥ जेणे हण्या हैं लै कर्मआठे, तीखे कुहाड़े जिम खीर काठे । मिली करे चौसठि इंद्र सेवा, ते देव चौवीसे मे नमेवा ॥२॥ मीठो जिसो खीर समुद्र पाणी, मीठी जिसी वीर जिनेंद्रवाणी । जे आदरे मूके मान मेलि, तियांतणी वाधे पुण्यवेलि ॥ ३ ॥ जे पंथी या तीरथ पंथ ध्यावे, ते उत्तरी संकट पार पावे । सिद्धायिका जे मनमांहि आणे, तिहांतणा चिंत्याकाज चढे प्रमाणे ॥ ४ इति ॥

दर्शनाद् दुरितध्वंसी, वन्दनाद् वांछितप्रदः। पूजनाद् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ॥१॥ सकलकुशलवल्ली-पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानम्। भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥१॥

श्रीआदिनाथजी की स्तुति।

भरहेसरकारे भ देवहरे, अट्ठावय पव्वय सोह करे ॥ १ ॥ निअवन्नपमाण सरीर धरं, चउवीसे वंदु तित्थयरे ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणधरा, बहू पंककुवंक कलंकहरा ॥३॥ अरिहंत सभागम देवगणा, विगणंतु अनंत दुहंसगुणा ॥४॥ इति श्रीआदिनाथजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

पर्युषणकी स्तुति।

वलि वलि हुं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजुसण दाख्या धर्मनी सीर। आषाढ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिकमणुं संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥ चउवीसे जिणवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भावे भरिये पुण्य भंडार। वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजुसण महुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनाये वंचाय, श्री कल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय। प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मी वच्छल करिये वारंवार, केई भावना भावे केई तपसी शिलधार। श्रड दीह

पजुसण एम सेवंत आणंद, सुयदेवी सानिध्य कहे जिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इति ॥

नवपद चैत्यवंदन।

श्री अरिहंत उदार कान्ति, अति सुन्दर रूप। सेवो सिद्ध अनन्त शान्त, आतम गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उवज्झाय साधु, शमतारस धाम। जिनभाषित सिद्धान्त शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोधबीज गुण संपदाये, नाण चरण तव शुद्ध। ध्याओ परमानन्द पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनंदकंद, जगमांहि प्रसिद्धो। चिन्तामणि सम जास, जोग बहु पुण्ये लद्धो ॥ ४ ॥ तिहुअण सार अपार एह, महिमा मन धारो। परिहर पर-जंजाल जाल, नित एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्ध-चक्र पद सेवतां, सहजानंद स्वरूप। अमृतमय कल्याणनिधि, प्रकटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इति ॥

श्रीसिद्धगिरिस्तवन।

श्री विमलाचल शिर तिलो, आदीसर अरिहंत। जुगला धरम निवारणो। भयभंजन भगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुझ मन उलट अतिघणो (रे), सो दिन सफल गिणेस। स्वामी श्री रिसहेसरू, जब नयणे निरखेस ॥ २ ॥ श्री० ॥ जंगम तीरथ विहरता, साधुतणे परिवार। आदिजिणंद समोसर्या, पूरव

निनाणुं वार ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अचिरा विजया नंदनो, जगबंधव जगतात। इण गिरि चउमासें रह्या, थिवर कहे ए वात ॥ ४ ॥ श्री० ॥ पामे शिवसुख सामता, गणधर श्री पुंडरीक। पुंडरगिरी तिण कारणे, भगति करो निरभीक ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नमि ने विनमि सहोदरु। विद्याधर बलवंत। सेत्रुंज सिखर समोसर्या, जे मिल्या गुणवंत ॥ ६ ॥ श्री० ॥ थावचा मुनिवर सुकस, सहस २ परिवार। पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ ७ ॥ श्री० ॥ पांडव पांच महावली, सुणी जादव निरवाण। ते सीधा सिद्धाचलें, सुर नर करें रे वखाण ॥ ८ ॥ ॥ श्री० ॥ इम सीधा इण डुंगरें, मुनिवर कोडाकोटी। पाज चढंता मांभरे, ते वंदुं वे कर जोडी ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जे वाघण प्रतिवूभती, ते दरवाजे जोय। गोमुख यक्ष कवड मिली। सानिधकारी होय ॥ १० ॥ श्री० ॥ जे विधिसुं यात्रा करें। सुर नर सेवक तास। राज समुद्र गुण गावतां। अविचल लीलविलास ॥ ११ ॥ श्री० ॥ इति ॥

श्रीऋषभजिनेश्वरस्तवनम्।

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब। विनतडी अवधारो रे ॥ जगना तारू। मुक्त तारो जी कृपानिधि स्वामी ॥ जग जमवाद प्रगट छें ताहरो। अविचल सुख दातारो रे ॥ज०॥ मु०॥ १ ॥ निज गुण भोक्ता पर गुण लोप्ता। आतम सगति जगाया रे ॥ज०॥ अविनासी अविचल अविकारी। शिवगामी जिनराया रे

॥ ज० ॥ २ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी । हुं तुज चरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुम रींझण हेतै ततखिण । नाटक खेल मचायो रे ॥ज०॥ ३ ॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री । तरु साधारण पामी रे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री । वेप धार्यां दुःख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वलि नरक तणी गति । पंचेंद्रिपणो धार्यो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडकमांहि भमतो । अब तो हुं पिण हार्यो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भवनाटक नित प्रति करतो नव नव । हुं तुझ आगलि नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो । निरखी तुझने जाच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या । तो मुझ वंछित दीजै रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भापो । वलि नाटक नवि कीजै रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरी हुं सेवा सारुं । तु दुःखडा नवि कापै रे ॥ज०॥ दाता से ती सुंब भलेरो । वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ मु० ॥ तुझ सरिखा साहिब पिण महारे । जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अवली । दोस न कोई तुमारो रे ॥ज०॥ ॥ ९ ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया करी दीजै । सुध समकित सहिनाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरे । तेहीज गुण मणिखाणी रे ॥ ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै । ज्येष्ठ सुदी सोमवारे रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपदा दिन भेट्या । बीकानेर मझारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति ॥

पर्युषणस्तवनम् ।

पर्व पजुसण पुन्ये पामीआरे । आराधो सुभ भावे सुजाण रे ॥ जिन शासनमां पर्व वखाणीए रे । लोकोत्तर गुणखाण रे ॥ ॥ पर्व० ॥ १ ॥ अट्ठाइ महोच्छव करे नंदीसरे रे । सहु इंद्रादिक मनुहार रे ॥ तिम भाविमाव भलेथी इहां करो रे । जिनपूजन सुखकार रे ॥ पर्व० ॥ २ ॥ पहिले दिन उपवास भलीपरे रे । सांभलो आर्द्रकुमार चरित्र रे ॥ रात्रीजगो करो पुस्तक तणो रे । ज्ञान भक्ति करो पवित्र रे ॥ पर्व० ॥ ३ ॥ दूजे दिन सहु संघ मिले भलो रे । वाजित्र हय गय रथ परिवाररे ॥ पुस्तक उच्छव करी पासमां रे । आणी आपो गुरुकाररे ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ त्रीजे दिन सहु पुस्तक पूजीने रे । सांभलो कल्पसूत्र जिन वाणरे ॥ आश्रव पांच निवारो भविजना रे । पालो जिनवरकेरी आणरे ॥ पर्व० ॥ ५ ॥ चोथे दिन चतुर चित्तमां धरो रे । दिन भक्ति विविध प्रकाररे ॥ पूजा प्रभावना करी शासन तणी रे । शोभा वधारो सुविचाररे ॥ पर्व० ॥ ६ ॥ पांचमे दिवस महोच्छव जन्मनो रे । वरते धवल मंगल सुप्रसिद्धरे । पालणो वीर प्रभुनो गायने रे ॥ जिनवर भक्ति करी जस लीयरे ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ वीर चरित्र सुणो छटे दिन रे । मध्याने पारस नेमी वखाणरे ॥ आंतरा काल सांभली भावसुं रे । पच्छानुपूर्वि करी सुजाण रे ॥पर्व० ॥८॥ दिन सातमे आदि चरित्र वखाणतारे । निसुणो थवीरतणो चरित्ररे ॥ आठमे दिन समाचारी साधुतणी रे । सांभलो भवि

कल्पसूत्र रे ॥ पर्व० ॥ ९ ॥ चैत्य प्रवाडी संघ मीली करो रे। वुठो सुकृतकेरो मेहरे ॥ संवत्सरी पडिक्कमणामें खमावीएरे। छठ अठम करो गुण गेहरे ॥ पर्व० ॥ १० ॥ अमारी पलावी जीव यत्न भणी रे। शासन-उन्नति करो सुविनीतरे। इणपरे पर्व आराधो भविजनारे। कृपाचंद शासननी ए रीतरे ॥ पर्व० ॥ ११ ॥ इति ॥

अष्टापदगिरिस्तवनम्।

मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अट्ठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावडशाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ भरते भरायां भलां देहरां जी, सो भायांरी थुंभ जी ॥ आपे मूरत सेवां करे जी, जाण जोईने ऊभ जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भगीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, रावण नाटक रंग जी ॥ ॥ म० ॥ ४ ॥ देवे न दीधी मुजने पांखडी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, ग्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

शंखेश्वरस्तवनम्।

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥

सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो । एहवु' विरुद छे राज तमारुं, किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवक ने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनु' हवे काम नहीं छे, परतख दरिसण दीजे ॥ धूंवाडे धीजु' नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजे ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसरमंडण साहिब, विनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुभने, भवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ।

प्राण पियारा जी हो पासजी, किम मेलु' फिरतार ॥ जिनेसर साहिब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण भरत मभार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आडो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु न मिले साय ॥ जि० ॥ निग गंदेशा जीहो लाडला; कागल धु' किण हाय ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ २ ॥ रमणा थें में जीहो एकठा, दिनमें दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ अवनो मिलणो जीहो अवसरें, [illegible] संयोग ॥ जि० ॥ तो पण [illegible] जीहो सांभरे, [illegible] वियोग ॥ जि० ॥ प्राण० [illegible] मिलम्यां जिण [illegible] गली, फलशे तो

॥ जि० ॥ चंद मुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

नवपदस्तवन ।

श्री नवपद आराधो, मनवाँछित कारज साधो रे; भवियाँ श्री नवपद आराधो ॥ ए टेर ॥ पद पहिले अरिहंत ध्यावो, जिम अरिहंत पदवी पावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ पद दुजे सिद्ध मनावो, जिम सिद्ध सरूपी होई जावो हो रे ॥ भ० श्री० ॥ सूरि त्रीजे गुणवंता, जगनायक जग जयवंतारे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ चोथे पद उवझाया, जिन मारग आण बताया रे ॥ भ० श्री० ॥ साधु सकल गुणधारी, पद पंचमे जग हितकारी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ दरशण पद छट्ठे वन्दो, जेम कीरती होय चिर नन्दो रे ॥ भ० श्री० ॥ ज्ञान पद सातमे दाख्यो, चारित्र पद आठमे भाख्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ श्रीपाल ने मयणा लीधो, नव में भव कारज सिधो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ नवपद महिमा जाणी, जिन चंद्र हिये मन आणी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ इति ॥

आदिजिनस्तवन ।

(राग तोड़ी)

रिषभकी मेरे मन भक्ति वसी री । मालती मेघ मृगंक मनोहर, मधुकर मोर चकोर जिसी री ॥ रि० ॥ १ ॥ प्रथम नरेश्वर प्रथम भिक्षाचर, प्रथम केवल धर प्रथम रिसो री । प्रथम

तीर्थंकर प्रथम भुवन गुरु, नाभि राय कुल कमल शशि री ॥ रि० ॥२॥ थंश उपर थलिकावली ऊपर, कंचन कमरट रेख बनी री। श्री विमलाचल मंडण स्वामी, समय सुन्दर प्रणमत उलगी री ॥ रि० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीनेमनाथजी का स्तवन।

(राग-अजीतजिनंद सुं प्रीतड़ी)

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश; पूरण दृष्टि निहालीये, चित्त धरीये हो अमची अरदास ॥ प० ॥ १ ॥ सर्व देशघाति सहु, अघाती हो करी घात दयाल। वास कियो शिव मंदिरे, मोहे विसरी हो भमतो जगजाल ॥ प० ॥ २ ॥ जगतारक पदवी लही, तारि-तार्या हो अपराधी अपार; तातें कहो मोहे तारतां, किम कीनी हो इन अवसरे वार ॥ प० ॥ ३ ॥ मोह महा मद छाकथी, हुं छकियो हो नांही सुध लगार; उचित सही इन अवसरे, सेवक नी हो करवी संभाल ॥ प० ॥ ४ ॥ मोह गया जो तारशो, तिनवेला हो कहा तुम उपकार। सुख वेला सज्जन घना, दुख वेला हो विरला संसार ॥ प० ॥ ५ ॥ पण तुम दरशन योग थी; थयो हृदये हो अनुभव प्रकाश। अनुभव अभ्यासी करे, दुखदायी हो सहु कर्म विनाश ॥ प० ॥ ६ ॥ कर्म कलंक निवारी ने, निज रूपे हो रमे रमता राम। लहत अपूरव भावथी, इन रीते हो तुम पद विश्राम ॥ प० ॥ ७ ॥

त्रिकरण योगे विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीनंद । चिदानन्द मन में सदा, तुम आपो हो प्रभुनाथदिनंद ॥ १० ॥ ८ ॥ इति ॥

श्रीदेवजसा जिनस्तवन

(महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं —ए देशी)

देवजसा दरिसण करो, विघटे मोह विभाव लाल रे । प्रकटे शुद्ध स्वभावता, आनन्द लहरी दाव लाल रे ॥ १ ॥ दे० ॥ स्वामि वसो पुष्कर वरे, जंबू भरते दास लाल रे । क्षेत्र विभेद घणो पड्यो, किम पहुंचे उल्लास लाल रे ॥ २ ॥ दे० ॥ होवत जो तनु पांखडी, आवत नाथ हजूर लाल रे । जो होती चित्त आखंडी, देखत नित्य प्रभु नूर लाल रे ॥ ३ ॥ दे० ॥ शासन भक्त जे सुरवरा, विनवुं शीस नमाय लाल रे । कृपा करो मुझ ऊपरे, तो जिनवंदन थाय लाल रे ॥ ४ ॥ दे० ॥ पूछूं पूर्व विराधना, शी कीधी इणें जीव लाल रे । अविरति मोह टले नहीं, दीठे आगम दीव लाल रे ॥ ५ ॥ दे० ॥ आतम शुद्ध स्वभावने, बोधन शोधन काज लालरे ॥ रत्नत्रयी प्राप्ति तणो, हेतु कहो महाराज लालरे ॥ ६ ॥ दे० ॥ तुज सारिखो साहिब मिल्यो, भांजे भवभ्रम टेव लालरे । पुष्टा लंबन प्रभु लहि, कोण करे परसेव लाल रे ॥ ७ ॥ दे० ॥ दीनदयाल कृपालुओ, नाथ भविक आधार लाल रे ॥ देवचंद्र जिन सेवना, परमामृत सुखकार लाल रे ॥ ८ ॥ दे० ॥ इति ॥

श्रीवज्रधरजिनस्तवन ।

(नदी यमुना के तीर—ए देशी)

विहरमान भगवान सुणो मुझ वीनति । जगतारक जगनाथ, अछो त्रिभुवनपति । भासक लोकालोक, तिणे जाणो छती । तो पण वीतक वात, कहूं छु तुझ प्रति ॥ १ ॥ हूं सरूप निज छोड़ि, रम्यो पर पुद्गलें । झील्यो उलट आणी, विषय तृष्णा-जलें । आश्रव बन्ध विभाव, करुं रुचि आपणी । भूल्यो मिथ्या-वास, दोष धु परभणी ॥ २ ॥ अवगुण ढांकण काज, करूं जिनमत क्रिया । न तजुं अवगुण चाल, अनादिनी जे प्रिया । दृष्टिरागनो पोष, तेह समकित गणुं । स्याद्वादनी रीति न देखुं निजपणुं ॥ ३ ॥ मन तनु चपल स्वभाव, वचन एकांतता । वस्तु अनंत स्वभाव, न भासे जे छता । जे लोकोत्तर देव, नमूं लौकिकथी । दुर्लभ सिद्ध स्वभाव, प्रभो तहकीकथी ॥ ४ ॥ महाविदेह मझार के, तारक जिनवरु । श्रीवज्रधर अरिहंत, अनंत गुणाकरु । ते निर्यामक श्रेष्ठ, सही मुझ तारसे । महावैद्य गुणयोग, रोग भव वारशे ॥ ५ ॥ प्रभुमुख भव्य स्वभाव सुणूं जो माहरो । तो पामे प्रमोद, एह चेतन खरो । थाय शिव पद आश राशि सुखवृन्दनी । सहज स्वतंत्र स्वरूप, खाण आणंदनी ॥ ६ ॥ वलग्या जे प्रभु नाम, धाम ते गुणतणा । धारो चेतन राम, एह थिरवासना । देवचन्द्र जिनचन्द्र, हृदय स्थिर थापजो । जिन आणायुत भक्ति शक्ति मुझ आपजो ॥ ७ ॥ इति ॥

श्रीचन्द्राननजिनस्तवन ।

(वीराचंदला ॥ ए–देशी)

चन्द्रानन जिन, सांभलि ए अरदास रे । मुझ सेवक भणी छे प्रभुनो विश्वासो रे ॥ १ ॥ चं० ॥ भरतक्षेत्र मानवपणो रे, लाधो दुःषम काल । जिनपूरवधर विरहथी रे, दुलहो साधन चालो रे ॥ २ ॥ चं० ॥ द्रव्य क्रिया रुचि जीवडा रे, भाव धर्मरुचिहीन । उपदेशक पण तेहवा रे, शुं करे जीव नवीन रे ॥ ३ ॥ चं० ॥ तत्त्वागम जाणने तजी रे, बहुजन सम्मत जेह । मूढ हठी जन आदर्या रे, सुगुरु कहावे तेह रे ॥ ४ ॥ चं० ॥ आणा साध्य विना क्रिया रे, लोके मान्यो रे धर्म । दंसण नाण चरित्तनो रे, मूल न जाण्यो मर्म रे ॥ ५ ॥ चं० ॥ गच्छ कदाग्रह साचवे रे, माने धर्म प्रसिद्ध । आतमगुण अकषायता रे, धर्म न जाणे शुद्ध रे ॥ ६ ॥ चं० ॥ तत्त्वरसिक जन थोडला रे, बहुलो जन संवाद । जानो छो जिनराजजी रे, सघलो एव विवाद रे ॥ ७ ॥ चं० ॥ नाथ चरण वंदनतणो रे, मनमां घणो रे उमंग । पुण्य विना किम पामिये रे, प्रभुसेवानो रंग रे ॥ ८ ॥ चं० ॥ जगतारक प्रभु वंदीए रे, महाविदेह मझार । वस्तुधर्म स्याद्वादता रे, सुनि करिये निर्धार रे ॥ ९ ॥ चं० ॥ तुझ करुणा सहु ऊपरे रे, सरखी छे महाराय । पण अविराधक जीव ने रे, कारण सफलुं थाय रे ॥ १० ॥ चं० ॥ एहवा पण भवि जीवने रे, देव भक्ति आधार । प्रभुसमरणथी पामीये रे, देवचंद्र पद सार रे ॥ ११ ॥ चं० ॥इति ॥

श्री बाहुजिनस्तवन।

(संभवजिन अवधारिये—ए-देशी०)

बाहुजिणंद दयामयी, वर्तमान भगवान ॥ प्रभुजी ॥ महाविदेहे विचरता, केवलज्ञाननिधान ॥ प्र० बा० ॥ १ ॥ द्रव्य थकी छकायने, न हणे जेह लगार ॥ प्र०॥ भावदया परिणामनो, एहीज छे व्यवहार ॥ प्र० बा० ॥ २ ॥ रूप अनुत्तर देवथी, अनंत गुणुं अभिराम ॥ प्र० ॥ जोतां पण जग जंतु ने, न वधे विषय विकार ॥ प्र० बा० ॥ ३ ॥ कर्मउदय जिनराजनो, भविजन धर्मसहाय ॥ प्र० ॥ नामादिक संभारता, मिथ्यादोष विलाय ॥ प्र० बा० ॥ ४ ॥ आतमगुण अविराधना, भावदया भंडार ॥प्र०॥ क्षायिक गुण पर्याय में, नवि पर धर्मप्रचार ॥प्र० बा० ॥५॥ गुण गुण परिणति परिणमे, बाधक भाव विहिन ॥ प्र० ॥ द्रव्य असंगी अन्य नो, शुद्ध अहिंसक पीन ॥ प्र० बा० ॥ ६ ॥ क्षेत्रें सर्व प्रदेश में, नहीं परभाव प्रसंग ॥ प्र० ॥ अतनुं अयोगी भावथी अवगाहना अभंग ॥प्र० बा० ॥ ७॥ उत्पाद व्यय ध्रुव पणें, सहजे परिणति थाय ॥ प्र० ॥ छेदन योजनता नहीं, वस्तु स्वभाव समाय ॥ प्र० बा० ॥ ८ ॥ गुण पर्याय अनंतता, कारक परिणति तेम ॥ प्र० ॥ निज निज परिणति परिणमे, भाव अहिंसक एम ॥ प्र० बा० ॥ ९ ॥ एम अहिंसकता मयी दीठो तूं जिनराज ॥ प्र० ॥ रक्षक निज पर जीवनो, तारण तरण जिहाज ॥ प्र० बा० ॥ १० ॥ परमातम परमेसरु, भावदया

दातार ॥ प्र० ॥ सेवो ध्यावो एहने, देवचन्द सुखकार ॥प्र० वा० ॥ ११ ॥ इति ॥

श्रीसुबाहुजिनस्तवन ।

(ढाल—म्हारो वालो ब्रह्मचारी—ए-देशी

श्री सुबाहुजिन अन्तरयामी, मुझ मननो विसरामी रे ॥ प्रभु अन्तरयामी ॥ आतम धर्म तणो आरामी, परपरिणति निःकामी रे ॥प्र० ॥ १ ॥ केवल ज्ञान अनंत प्रकाशी, भविजन कमल विकाशी रे ॥ प्र० ॥ चिदानन्दघन तत्त्वविलासी, शुद्ध स्वरूप निवासी रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ यद्यपि हुं मोहादिके छलियो, परपरिणति शुं भलियो रे ॥ प्र० ॥ हिवे तुझ सम मुझ साहिब मलियो, तिणें सवि भव भय टलियो रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ध्येय स्वभावें प्रभु अवधारी, दुर्ध्याता परिणति वारी रे ॥ प्र० ॥ भासन वीर्य एकताकारी, ध्यान सहज संभारी रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ध्याता-ध्येय समाधि अभेदे, परपरिणति विच्छेदे रे, ॥ प्र० ॥ ध्याता साधक भाव उच्छेदे, ध्येय सिद्धता वेदे रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ द्रव्य-क्रिया साधन विधि याची, जे जिन आगम वांची रे ॥ प्र० ॥ परिणति वृत्ति विभावें राची, तिणे नवि थाये सांची रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ पण नवि भय जिनराज पसायें, तत्व रसायण पाये रे ॥ प्र० ॥ प्रभु भगते निज चित्त वसाये, भाव रोग मिट जाय रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ जिनवर वचन अमृत अनुसरिये, तत्वरमण

ध्यादरिये रे ॥ प्र० ॥ द्रव्यभाव आश्रव परिहरिये, देवचन्द्रपद वरिये रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति ॥

पार्श्वजिनस्तवन ।

आयो सही अब जाऊँ कहाँशर, शरणागतको शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोही समान मिल्यो नहीं कोइ, ढूंढ फियों धरती सब हेरी ॥ आ० ॥ १ ॥ होय दयाल महा प्रभुजी अब, आन भई तुमसे भेट मेरी ॥ आ० ॥ २ ॥ दास कल्याण करे विनती सुण, पार्श्वनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीअजितजिनस्तवन ।

(राग—आसाऊरी, मारु मन मोह्यु रे श्रीविमलाचलें रे—ए देशी)

पंथडो निहालूं रे बीजा जिन तणो रे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥ जे ते जीत्यारे तेणे हुं जीतिओ रे ॥ पुरुप किस्युं मुझनाम ॥ पंथ० ॥१॥ चर्मनयणे करी मारग जोवतां रे ॥ भूल्यो सयल संसार ॥ जेणे नयणे करी मारग जोइये रे ॥ नयण ते दिव्यविचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुप परंपर अनुभव जोवतां रे ॥ अंधो-अंध पुलाय ॥ वस्तु विचारि रे जो आगमे करी ॥ चरण धरण नहीं ठाम ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे वादपरंपरा रे ॥ पार न पहोचे कोय ॥ अभिमतें वस्तुरे वस्तुगतें कहे रे ॥ ते विरलो जगजोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दीव्यनयणतणो रे ॥ विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे ॥

वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काललब्धि लही पंथ निहालसु रे ॥ ए आस्या अविलंब ॥ ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे ॥ आनंदघन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥

श्री चंद्रप्रभुस्तवन ।

देखण दे रे सखी मुने देखण दे ॥ चंद प्रभु मुखचंद ॥स०॥ उपशमरसनो कंद ॥ स० ॥ गतकलिमलदुःख दंद ॥ स० ॥ १ ॥ सुहमनिगोदे न देखिओ ॥ स० ॥ बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥ पुढवी आउ न लेखिओ ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेस ॥ स० ॥२॥ वनस्पति अति घण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीं दीदार ॥ स० ॥ बि - ति - चउरिंदी जल लिहा ॥ स० ॥ गतिसन्नी पणधार ॥स० ॥ ३ ॥ सुर तिरि निरय निवासमां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥ अपजत्ता प्रति भासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढ़ीयो हाथ ॥ स० ॥ ४ ॥ एम अनेक थल जाणियें ॥ स० ॥ दरिसण विणु जिनदेव ॥ स० ॥ आगम थी मत जाणियें ॥ स० ॥ कीजे निरमल सेव ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ निरमल साधु भगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक होय ॥ स० ॥ किरिया अवंचक तिम सही ॥ स० ॥ फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ स० ॥ मोहनी क्षय जाय ॥ स० ॥ कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदघन प्रभु पाय ॥ स० ॥ ७ ॥ इति० ॥

आदि-जिनस्तवन ।

क्यों न भये हम मोर, विमल गिरि क्यों न भये हम मोर ।

क्यों न भये हम शीतल पानी, सींचत तरुवर छोर । अहनिशि जिनजीके अंग पखालत, तोडत कर्म कठोर ॥ १ ॥ क्यों न भये हम बावन चंदन, और केसरकी छोर । क्यों न भये हम मोगरा मालती, रहते जिनजीके मोर ॥ २ ॥ क्यों न भये हम मृदंग झालरिया, करत मधुर ध्वनि घोर । जिनजीके आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठोर ॥ ३ ॥ जग मंडल साचो ए साचो जिनजी, और न देखा राचत मोर । समय सुन्दर कहे ये प्रभु, सेवो जन्म मरण जरा नहीं और ॥ ४ ॥ इति ॥

आदि-जिनस्तवन ।

आज ऋषभ घर आवे, सो देखो माई ॥ आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सब ही के मन भावे ॥ सो०॥ १ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग वधावे ॥ सो० ॥२ ॥ केई मुक्ताफल थाल विशाला, केई मणि माणक लावें ॥ सो० ॥३॥ श्रीश्रेयांसकुमार दानेश्वर, इक्षुरस दान वैरावे ॥ सो० ॥ ४ ॥ उत्तम दान अधिक अमृतफल साधु कीर्ति गुण गावे ॥सो०॥५॥

महावीरस्वामिस्तवन ।

(कडखानी-देशी)

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी जगतमां एटलुं सुजश लीजे ॥ दास अवगुण भर्यो जाणी पोतातणो । दयानिधि दीन

पर दया कीजे ॥ १ ॥ ता० ॥ राग द्वेष भर्यो मोह वैरी नड्यो । लोकनी रीतमां घणुं ए रातो ॥ क्रोध वश धमधम्यो । शुद्धगुण नवि रम्यो । भम्यो भवमाहे हुं विषय मातो ॥ २ ता० ॥ आदर्यो आचरण लोक उपचारथी । शास्त्र अभ्यास पण कांइ कीधो ॥ शुद्ध श्रद्धान वली आत्म अवलंब विनु । तेहवो कार्य तेणे को न सीधो ॥ ३ ॥ ता० ॥ स्वामि दर्शन समो । निमित्त लही निर्मलो । जो उपदान ए शुचि न थाशे ॥ दोष को वस्तुनो अहवा उद्यम तणो । स्वामि सेवा सही निकट लासे ॥ ४ ॥ ता० ॥ स्वामि गुण ओलखी । स्वामिने जे भजे । दर्शन शुद्धता तेह पामे ॥ ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी । कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ ५ ॥ ता० ॥ जगत वत्सल महावीर जिनवर सुणी । चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो ॥ तारजो बापजी विरुद निज राखवा, दासनी सेवना रखे जोशो ॥ ६ ॥ ता० ॥ विनती मानजो शक्ति ए आपजो । भाव स्याद्वादता शुद्ध भासे ॥ साधि साधक दशा । सिद्धता अनुभवे । देवचन्द्र विमल प्रभुता प्रकाशे ॥ ७ ॥ ता० ॥ इति ॥

पंचमीका बड़ा स्तवन ।

प्रणमुं श्रीगुरुपाय निर्मल ज्ञान उपाय पंचमी तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचन्द, केवलज्ञान दिणंद । त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ ज्ञान वडूं संसार, ज्ञान-मुगति-दातार । ज्ञान दीवो कह्यो ए, साचो

गरहो ए ॥ ३ ॥ ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश। ज्ञान विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥४॥ अधिक आराधक जाण, भगवतीसूत्र प्रमाण। ज्ञानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ५ ॥ ज्ञानी श्वासोच्छ्वास, करम करे जे नाश। नारकीने सही ए, कोड वरस कही ए ॥ ६ ॥ ज्ञान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार। किरिया छ सही ए, पण पाछे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान। सोनाने सूरो ए, शंख दूधे भर्यो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पंचमी अक्षर सार। भगवंत भाखियो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

ढाल २—कालहराकी देशी।

पंचमी तपविधि सांभलो, जिम पामो भव पारोरे। श्री अरिहंत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ पं० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे। इण षट् मासे लीजिये, शुभ दिन सद्गुरु शाखो रे ॥ पं० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरे, गीतारथ गुरु वंदीरे। पोथी पूजो ज्ञाननी, सगति हुवे तो नंदीरे ॥ पं० ॥ ३ ॥ वेकर जोडी मावसुं, गुरुमुख करो उपवासो रे। पंचमी पडिकमणो करी, पढो पंडित गुरु पासो रे ॥ पं० ॥ ॥ ४ ॥ जिण दिन पञ्चमी तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे। पञ्चमीस्तवन भुई कहो, ब्रह्मचारिज पिण पालो रे ॥ पं० ॥ ॥ ५ ॥ पांच मास लघु पञ्चमी, जावजीव उत्कृष्टी रे। पांच वरस पांच मासनी, पञ्चमी करो शुभ दृष्टि रे ॥पं०॥६॥ इति॥

ढाल ३—उल्लालेकी देशी ।

हवे भवियण रे पंचमी ऊजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो । ए अवसर रे आवंता वलि दोहिलो, पुण्य जोगे रे धन पामतां सोहिलो ॥ (उल्लालो)—सोहिलो वलिय धन पामतां पिण धर्मकाज किहां वली, पंचमी दिन गुरु पास आवी किजीये काउस्सग्ग रली । त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देई पुस्तक पूजिये, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा कीजिये ॥ १ ॥ (ढाल)—सिद्धांतनी रे पांच परत वीटांगणां, पांच पूठारे मुखुमल सूत्र प्रमुख तणां । पांच डोरारे लेखण पांच मजीसणा, वासकूंपारे कांबी वारू वतरणा ॥ (उल्लालो)—वतरणा वारू वलि य कमली पांच झिलमिल अतिभली, स्थापनाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पडपाटली । पटक्षत्र पाटी पंच कोथली पंच नवकार-वालियां, इण परे श्रावक करे पंचमी ऊजमणुं उजवालियाँ ॥ २ ॥ (ढाल)—वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजिये, घर सारूरे दान वलि तिहाँ दीजिए । प्रतिमाजीने रे आगल ढोवणुं ढोइए, पूजाना रे जे जे उपगरण जोइये ॥ (उल्लालो)—जोइये उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मंगल थाल दीवो धूपधाणुं सार ए । घनसार केशर अगर सुखड अंगलूहणो दीसए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिसुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ (ढाल)—पंचमीतारे साहम्मी सवे जिमाडियें, रात्रिजोगे रे गीतरसाल गवाडियें । इण करणीरे करता ज्ञान आराधिये, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधिय ॥

(उल्लालो)—साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहिए निरमलो, सुरलोक ने नरलोकमांहे ज्ञानवंत ते आगलो । अनुक्रमे केवलज्ञान पामी शाश्वता सुख जे लहे, जे करे पंचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ (कलश)–एम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्द्धमान जिनेसरो, मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत अतुल बल अलवेसरो । जयवंत श्रीजिनचंद्रसूरिज सकलचंद नमंसियो । वाचनाचारिज समयसुन्दर भगतिभाव प्रशंसियो ॥ ५ ॥ इति ॥

पञ्चमीका लघु स्तवन ।

पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे । पहिलूं ज्ञान ने पीछे किरिया, नहीं कोई ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ १ ॥ नंदीसूत्र में ज्ञान वखाण्यूं, ज्ञानना पंच प्रकार रे । मति श्रुति अवधि अने मनः-पर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २ ॥ मति अट्ठावीस श्रुत चउदे वीश, अवधि छे असंख्य प्रकार रे । दोय भेदे मन मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥पं०॥३॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेस्युं तेज आकाश रे । केवलज्ञान समो नहीं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे । समयसुन्दर कहे हुं पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति ॥

पार्श्वजिनस्तवनम् ।

कमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोडी पास । सेवा सारे

ढाल-पहेली

हारे लाला जंबूद्वीपना भरतमां, मगधदेश महंत रे लाला।
राजगृही नगरी मनोहरुं, श्रेणिक बहु बलवंत रे लाला॥
अष्टमी तिथि मनोहरु॥ टेर॥
हारे लाला चेलणाराणी सुन्दरु, शियलवंती शिरदार रे लाला।
श्रेणिक सुत बुद्धे छलता, नामे अभयकुमार रे लाला॥अ०॥१॥
हारे लाला वर्धमान अष्टमी गहनी, अष्ट साधे गुणनिधान रे लाला।
अष्टमदवाले पन्न छे, प्रगटे समकित निदान रे लाला॥अ०॥२॥
हारे लाला अष्टभय नासे एहथी, अष्टबुद्धि तणो भंडार रे लाला।
अष्ट प्रवचन ए संपजे, चारित्र तणो अणगार रे लाला॥अ०॥३॥
हारे लाला अष्टमी आराधन थकी, अष्टकर्म करे चकचूर रे लाला।
नवनिधि प्रगटे तसु घरे, संपूरण सुख भरपूर रे लाला॥अ०॥४॥
हारे लाला अष्टदृष्टि उपजे एहथी, शिव साधन गुण अंकुर रे लाला।
सिद्धना आठगुण संपजे, शिवकमला रूप स्वरूप रे लाला॥अ०॥५॥

ढाल-बीजी।

जीहो-राजगृही रलियामणि, जीहो-विचरे वीर जिणंद।
जीहो-समवसरण इंद्रे रच्युं, जीहो-सुरासुरनो वृन्द॥
जगत गुरु वंदो वीर जिणंद॥ टेर॥
जीहो-देव रचित सिंहासने, जीहो-बेठा श्रीवर्द्धमान।
जीहो-अष्ट प्रातिहारज शोभता, जीहो-भामंडल झलकंत॥ज०१॥

जीहो-अनंतगुणे जिनराजजी, जीहो-पर उपकारी प्रधान।
जीहो-करुणासिंधु मनोहरू, जीहो-त्रैलोके जग भाण ॥ज०॥ २ ॥
जीहो-चौतीस अतिशत विराजता, जीहो-वाणी गुण पैंतीस।
जीहो-बारह पर्षदा भावसुं, जीहो-भगते नमावे शीश ॥ज०॥३॥
जीहो-मधुर ध्वनी दिये देशना, जीहो-जिम आषाढो रे मेघ।
जीहो-अष्टमी महिमा वरणवे, जीहो-जग बंधु कहे तेम ॥ज०॥४॥

ढाल-त्रीजी।

रूडी ने रलियामणि रे, प्रभु ताहरी देशना रे।
तेतो योजन लगे संभलाय रे, त्रिगडे विराजे जिन दिये देशना रे॥
श्रेणिक वंदे प्रभुना पायरे, अष्टमी महिमा कहो कृपा करी रे।
पूछे गौतम अणगार रे, अष्टमी आराधन फल सिद्धनु रे ॥रूडी० ॥ १ ॥ वीर कहे तपथी महिमा एहनो रे, ऋषभनुं जन्म कल्याण रे। ऋषभ चारित्र होवे निरमलुं रे, अजीतनुं जन्म कल्याण रे ॥ रूडी० ॥ २ ॥ संभव च्यवन त्रीजा जिनेसरू रे, अभिनन्दन निर्वाण रे। सुमति जन्म सुपास च्यवन छेरे, सुविधि नमि नेमि जन्म कल्याण रे ॥ रूडी० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत जन्म अतिगुणनिधि रे, नमुं शिवपद लहिये सार रे। पार्श्वनाथ निर्वाण मनोहरू रे, ए तिथि परम आधार रे ॥ रूडी० ॥ ४ ॥ उत्तम गणधर महिमा साँभलो रे, अष्टमी तिथि परमाण रे। मंगल आठ तणी गुणमालिका रे, तस घर शिव कमला परधान रे ॥ रू० ॥ ५ ॥

ढाल-४थी

आगमगनी निरजुगतिज, भासे महानिशीथ छन्नो रे।
अप्रमरंश दृढ़ वीरजी आराधे, शिव सुख पामे पवित्रो रे॥
ए विधि महिमा वीर प्रकाशे, भविक जीवने भासे रे।
आगम तारुं अविचल राजे, दिन दिन दौलत वाधे रे॥
श्रीजिनराज जगत उपकारी॥ टेर॥ १॥
त्रिशला रे नंदन दोष निकंदन, कर्म शत्रुने जीत्या रे।
तीर्थंकर महंत मनोहरू, दोष अठारेने वरज्या रे॥श्रीजिन०॥२॥
मन मधुकर जिनपद पंकज लीनो, हरखे निरखे प्रभु ध्याऊं।
शिरकमला सुख दियो प्रभुजी, कल्याणंद पद पाऊंरे॥श्रीजिन०३॥
इयअशोक सुरसुमनी वृद्धि, चामर छत्र विराजे रे।
आगन भामंडल जिन दीपे, दुंदुभी अंबर गाजे रे॥श्रीजिन०॥४॥
संभाल सुंदर अतिय मनोहर, जिन प्रासाद घणा सोहे रे।
जिन संख्यानो पार न लहिए, दर्शन करी मन मोहिये रे॥ श्री जिन०॥५॥ संवत अठारह उगण चालीसे वर्षे, आश्विन मास उदारो रे। शुक्लपक्ष पंचमी गुरुवारे, स्तवन रच्युं छे तारो रे।॥ श्रीजिन०॥ ६॥ पंडितदेव सोभागी सुदि, लावणी सौभागी तिस नामे रे। 'वृद्धि लावण्य' लियो सुख संपूरण, श्रीसंघने कोड कल्याणो रे॥ श्रीजिन०॥ ७॥

इति अष्टमी स्तवनम्।

एकादशीका वडा स्तवन ।

समवसरण वेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत । बारे परषदा वैठी जूडी, मिगसिर शुदि इग्यारस वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवलज्ञान । अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥मि०॥२॥ नमिने उपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान । ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणक हुवे तिमहीज । पंचासनी संख्या परगडी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढसौ कल्याणक थाये तेम । कुण तिथि छे ए तिथि जेवडी ॥ मि०॥ ॥ ५ ॥ अनन्त चोवीसी इणपरें गिणो, लाभ अनन्त उपवासा तणो । ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥मि०॥ ६ ॥ मौनपणे रह्यां श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ । मौनतणी प्रवृत्ति इम पडी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसह लीजिये, चौविहार विधिसुं कीजिये । पण परमाद न कीजे घडी ॥ मि० ॥ ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजे उपवास, जावज्जीव पण अधिक उल्हास । ए तिथि मोक्ष तणी पावडी ॥ मि० ॥ ९ ॥ उजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यारे इग्यार । करो काउस्सग गुरु पाये पडी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीये वली, पोथी पूजीये मनरली । मुगतिपुरी कीजे ढूकडी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहिए सर्व । व्रत पचक्खाण करो आखडी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्याशी समे,

कीधुं स्तवन सहु मन गमे। समयसुन्दर कहे करो धावडी ॥ ॥ मि० ॥ १३ ॥ इति ॥

श्रीवीरजिनविनतिरूप-अमावस का स्तवन।

वीर सुणो मोरी विनती, कर जोडी हो कहुं मननी वात। बालकनी परे विनवुं, मोरा स्वामी हो तुमे त्रिभुवन तात ॥वीर०॥ ॥ १ ॥ तुम दरशण विण हुं भम्यो, भवमांहे हो स्वामी समुद्र मझार। दुःख अनंता में सह्यां, ते कहेतां हो किम आवे पार ॥ ॥ वीर० ॥ २ ॥ पर उपकारी तूं प्रभु, दुःख भांजे हो जग दीन-दयाल। तिण तोरे चरणे हुं आवीयो, स्वामी मुजने हो निज नयण निहाल ॥ वीर० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उद्धर्या, ते कीधी हो करुणा मोरा स्वाम। परम भगत हुं ताहरो, तेंने तारो हो नहीं तेहनो काम ॥ वीर० ॥ ४ ॥ शूलपाणी प्रति बूझव्या, जिण कीधा हो तुमने उपसर्ग। डंस दीयो चण्डकोसीये, ते दीधो हो तसु आठमो स्वर्ग ॥वी०॥५॥ गोशालो गुण हीनडो, जीणे बोल्या हो तेरा अवरणवाद। ते बलतो तें राखियो, शीत लेश्या हो मूकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छे इन्द्रजालीयो, इम कहितां हो आयो तम तीर। ते गौतमने तें कीयो, पोतानो हो प्रहुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, जे जमाल्या हो तुझ साथ जमाल। तेहने पिण पनरे भवे, शिवगामी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ ऐमन्तो ऋषि जे रम्यो, जल

मांहे हो बांधी माटीनी पाल। तीरती मूकी काचली, तें तार्यो हो तेहने ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमार ऋषि दुहव्यो, चित्त चूको हो चारित्रथी अपार। एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बारे वरस वेश्या घरे, रह्यो मूकी हो संयमनो भार। नंदिषेण पिण उद्धर्यो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो वसियो वरस चोवीस। ते पण आर्द्रकुमारने, तें तार्यो हो तोरी एह जगीस ॥ वीर० ॥ १२ ॥ राय श्रेणिक राणी चेलणा, रूप देखी हो चित्त चूका जेह। समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधक तेह ॥ वीर० ॥ १३ ॥ व्रत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसह हो नहीं आदर दीख। ते पण श्रेणिक रायने, तें कीधो हो स्वामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उद्धर्या, कहुं तोरा हो केहता अवदात। सार करो हवे माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नवि पले, नहीं तो हुवो हो मुझ दरसण नाण। पिण आधार छे एटलो, एक तोरो हो धरूं निश्चल ध्यान ॥ वी० ॥ १६ ॥ मेह महीतल वरसतो, नवि जोवे हो सम विषमी ठाम। गिरुआ सहिजे गुणकरे, स्वामी सारो हो मोरा वांछित काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामे सुखसंपदा, तुम नामे हो दुःख जावे दूर। तुम नामे वांछित फले, तुम नामे हो मुझ आणंदपूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ (कलश)-इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चौवीसमो, शासनाधीश्वर सिंहलंछन

सेवतां सुरतरु समो । जिणचंद त्रिशलामात नन्दन सकलचंद कलानीलो, वाचनाचारिज समयसुन्दर संथुण्यो त्रिभुवनतिलो ॥ ॥ वी० ॥ १६ ॥ इति ॥

पूर्णिमाका स्तवन ।

श्रीसिद्धाचल मंडण स्वामीरे, जगजीवन अंतरजामीरे । एतो प्रणमुं हुं शिरनामी, जात्रीडा जात्रा नवाणुं करियेरे–एतो करिये तो भवजल तरिये ॥ जा० ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेश्वर रायारे, तिहां पूर्व नवाणु आयारे । प्रभु समवसर्या सुखदाया ॥ जा० ॥ ॥२॥ चैत्री पूनम दिन वखाणुंरे, पांचकोडीसुं पुंडरीक जाणुंरे । जे पाम्या पद निरवाणुं ॥ जा० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख साते रे, बे बे कोडी साधु संघातेरे । एतो पहोंता पद लोकांते ॥ जा० ॥ ४ ॥ काति पूनमें कर्मने तोडीरे, जिहां सिद्धा मुनि दश कोडीरे । ते तो वंदो बे कर जोडी ॥ जा० ॥ ५ ॥ इम भरतसरने पाटेरे, असंख्याता मुनि थीर थाटेरे । पाम्या मुगति रमणी ए वाटे ॥ जा० ॥६॥ दोय सहस मुनि परिवार रे, थावचासुत सुखकाररे । सयपंच सेलग अणगार ॥ जा० ॥ ७ ॥ वली देवकी सुत सुजगीसरे, सिद्धा बहु जादव वंश रे । ते प्रणमुं रे मन हंस ॥ जा० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव एणे गिरि आयारे, सिद्धा नव नारद ऋषि रायारे । वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जा० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंतरे, जिहां साधु सिद्धा

अनन्तरे । इम भापे श्रीभगवंत ॥ जा० ॥ १० ॥ उज्ज्वल गिरि समो नहीं कोयरे, तीरथ सघला में जोयरे । जे फरस्यां पावन होय ॥ जा० ॥११॥ एकल आहारी सचित्त परिहारीरे, पद्चारी ने भूमिसंथारीरे । शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ जा० ॥ १२ ॥ एम छहरी जे नर पालेरे, वहु दान सुपात्रे आलेरे । जनम मरण भय टाले ॥ जा० ॥ १३ ॥ धन धन ते नर ने नारीरे, भेटे विमलाचल एक तारीरे । जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥जा०॥१४॥ श्री जिनचन्द्रसूरि सुपसायेरे, जिनहर्ष हिए हुलसायेरे । इम विमलाचल गुण गाये ॥ जा० ॥ १५ ॥ इति ॥

दादा श्रीजिनदत्तसूरिजीका स्तवन ।

सिरी सुयदेव पसाय करी, गुरु श्रीजिनदत्तसूरि । वंदिसु खर-तर गच्छरयण, सूरि जेम गुणपूरि ॥ १ ॥ संवत इग्यारह वरसइ, वत्त-सई जसु जम्म । वाछिग मंत्रि पिता जणणी, वाहडदेव सुरम्म ॥२॥ इकतालइ जिणवइ गहिय, गुणहत्तरइ जसु पाटि । चइशाखा वदि छट्ठि दिणि, पय पणमी सुरथाटी ॥३॥ अंबड सावइ कर लिहिय, सोवन अक्खर अंब । जुगप्पहाण जगि पयडीयउए, सिरि सोहम-पडिबिंब ॥ ४ ॥ जिणि चउसट्ठि जोगिण जणिय, खित्तपाल वावन्न । साइणि डाइणि विज्जुलिय, पुहवइ नामि न अन्न ॥५॥ सूरिमन्त्र भल करि सहिय, साहियजिण धरणिंद । सावय साविय लक्ख इग, पडिबोहिय जिणचिंब ॥६॥ अरिकरि केसरि दुट्ठदल, चउविह देव निकाय । आण न लोपइ कोइ जगह, जसु पणमइ

नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यार समइ, अजयमेर पुरि ठाणी ।
इग्यारिसि आसाढ सुदि, सग्गिपति सुह झाणि ॥ ८ ॥ श्रीजिन-
वल्लहसूरि पए, श्रीजिणदत्त मुणिंद । विग्घहरण मङ्गल करण,
करउ पुण्य आनंद ॥ ६ ॥ इति ॥

दादा श्री जिनकुशलसूरिजीका स्तवन ॥

रिसभ जिणेसर सो जयो, मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय पय-
कमल, जग सहु पूरइ आस ॥ १ ॥ (चउपइ)–चंदकुलं वर पूनिम
चंद, वंदउ श्री जिनकुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम निवास,
जो समरइ तसु पूरे आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गांम,
धण कण कंचन अति अभिराम । जिहां वसइ जिल्हागर मंत्रि,
जइतसिरि तसु धरणी कलत्रि ॥ ३ ॥ जसु तेरेसइ वीसइ जम्म,
सहतालइ सिर संयम रम्म । पाण सतहत्तरइ जसु पाट, निव्यासिई
तसु सुरगइ वाट ॥ २ ॥ भूमंडल सुरगइ पायाल, अचिराचिर
जुग इण कलिकाल । प्रभु प्रताप नवि मानइ सोय, मइ नवि नयणे
दिठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहइ धन धन्न सुवन्न, पुत्रहीण
पामइ बहु पुत्र । असुखी पामइ सुख संतान, एकमनइ करतां गुरु
ध्यान ॥ ६ ॥ प्रभु स्मरण आपद सहु टलइ, सयल शांति सुख
संपत्ति मिलइ । आधि व्याधि चिंता संताप, ते छंडी नवि मंडइ
व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोप नवि लागे तिहां, प्रभु दरसण उत्कण्ठा
जिहां । सेवंतां सुरतरुनी छांहि, निश्चय दालिद्रा मेटइ बांहि ॥८॥
विसहर विसनर विसहरनाह, भूत प्रेम ग्रह व्यन्तर राह । प्रभु

नामइ जे न करइ पीड, भाजइ भावड भवभय भीड ॥ ६ ॥ रोग सोग सवि नासइ दूर, अन्धकार जिम उगइ सूर । सूरख फीटी पंडित थाय, प्रभु पसाय दुःख दुरिय पुलकाय ॥१०॥ दिन दिन जिनशासन उद्योत, तिहां अच्छइ भवसायर पोत । सो सद्गुरु मइ भेटउ आज, रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ (ढाल)— आज घर आंगण सुरतरु फलियो, चिंतामणि कर कमले मिलियो। उदयो परमाणंद घरे ॥१२॥ आज दिह मइ धन्न गिणियो, जुगपवरागम जो मइ थुणियो । चंद्रगच्छ महिमानी लोए॥ १३ ॥ कांइ करो पृथिवीपति सेवा, कांई मनावो देवी देवा। चिंता आणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवित भणी जइ, श्रीजिनकुशलसूरि समरिजइ । सरइ काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत चउद इक्यासी वरसइ, मुलक वाहणपुरमें मन हरसइ । अजिय जिणेसर वरभवह ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण, विघन हरण सहु पाप निवारण, कोई मत संसो धरो मनइ ॥ १७ ॥ जिम जिम सेवइ सुर नर राया, श्री जिनकुशल मुनिसर पाया । जयसागर उवज्झाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सद्गुरु गुण अभिनंदइ, ऋद्धि समृद्धि सो चिर नंदइ । मनवंछित फल मुझ हुवो ए ॥१९॥इति॥

दादा गुरुका सवईया ॥

बावन वीर किये अपणे वस, चौसठ जोगण पाय लगाई । डाइण साइण व्यंतर खेचर, भूतरु प्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तडक्क कडक्क भटक, अटक रहे जु खटक न काई । कहे धर्मसिंह लंघे

कुण लीह, दीपे जिनदत्त की एह दुहाई ॥ १ ॥ राजे थुंभ ठोर ठोर एसो देव नहीं और, दादो दादो नामतें जगत्र जस गायो है। अपणे ही भाय आय पूजे लख लोक पाय, प्यासनकुं रान मांझ पानी आन पायो है ॥ घाट घाट शत्रु घाट हाट पुरपाटणमें देह गेह नेहसुं कुशल वरतायो है। धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कुशल करे, मानो श्रीजिनकुशल गुरु नाम युं कहायो है ॥२॥इति॥

॥ श्रीपार्श्वजिन स्तवनम् ॥

तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेवा करूं छिन छिनमें ॥तुं०॥१॥ काहूको मन तरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धन में ॥ मेरो मन प्रभु तुमहीनुं राच्यो, ज्युं चातक चित्त घनमें ॥ तुं० ॥२॥ जोगीसर तेरी गति जाणे, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीर्ति गुणसागर तुमही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ निर्वाणकल्याणक स्तवनम् ॥

मारगदेसक मोक्षनो रे, केवलज्ञान निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपकारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे। हिव इण भरतमां, कुण करसे उपगारो रे ॥ ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहुणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहुणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥

॥ ३ ॥ मात विहुणा बाल ज्युं रे, अरहांपरहां अथडाय ॥ वीर विहुणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ? ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण किम रहिवाय रे ? ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सत्थवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यांरे, किम वाधे उस्साहो रे ? ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुततणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण काले सवि जीवने रे, आगमथी आनन्द ॥ ध्यावो सेवो भविजना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुने इण पर-सिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवनम् ॥

श्रावककी करणी ॥

(चौपाई)

श्रावक तूं उठे परभात । चार घड़ी ले पिछली रात ॥ मनमां समरे श्रीनवकार । जिम पामे भवसागर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म । कवण अमारुं छे कुलकर्म ॥ कवण अमारो छे व्यवसाय । एवुं चिन्तवजे मनमांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हियडे धरजे बुद्ध ॥ पडिकमणुं करे रयणीतणुं । पातक आलोए आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ति करे पच्चक्खाण,

सुधी पाले जिनवर आण ॥ भणजे गुणजे स्तवन सज्झाय । जिण हुंति निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे निन चऊदे नेम । पाले दया जीवता सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव । द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ॥ ५ ॥ पोशाले गुरुवन्दन जाय । सुणो वखाण सदा चित लाय ॥ निर्दूषण सूजतो आहार । साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमिवत्सल करजे घणां । सगपण महोटा साहमीतणां ॥ दुःखिया हीणा दीना देख । करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारे देजे दान । महोटासुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी । धर्म न मूकीश एके घडी ॥८॥ वारु शुद्ध करे व्यापार । ओछा अधिकानो परिहार । म भरीश केनी कूडी साख । कूडा जनसुं कथन म भाख ॥९॥ अनन्तकाय कहीये बत्रीस । अभक्ष्य बावीसे विसवावीस ॥ ते भक्षण नवि कीजे किमे । काचां कंवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिभोजनना बहु दोप । जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली । मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास । दूपण घणां कह्यां के तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार । अणगल पीतां दोप अपार ॥ ॥ १२ ॥ जीवाणीना करजे यत्न । पातक छंडी करजे पुण्य ॥ छाणा इंधण चूलो जोय । वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परे वावरजे नीर । अणगल नीर म धोईस चीर ॥ व्रतव्रत सुधं पालजे । अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान । पापतणी परिहरजे खाण ॥ कशुं म लेजे अनरथदंड ।

मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥१५॥ समकित शुद्ध हियडे राखजे । बोल विचारीने भाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंभ । पालो शीयल तजो मन दम्भ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दही । उघाडा मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त । पर उपकार करो शुभचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चौविहार । चारे आहारतणो परिहार ॥ दिवस तणा आलोए पाप । जिम भाजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक साचवे । जिनवर चरण शरण भव भवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय । सागारी अणसण ले सोय ॥ १६ ॥ करे मनोरथ मन एहवा । तीरथ शत्रुञ्जे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार । भेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी छे एह । एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातला । पापतणा छूटे आमला ॥ ॥२१॥ वारु लहिये अमर विमान । अनुक्रमे पामे शिवपुर धाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह । करणी दुःखहरणी छे एह ॥२२ ॥इति॥

॥ श्री तीर्थमालास्तवन ॥

शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगते गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ २ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे । भरते भराव्या बिंब ॥ ती० ॥३॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे । विमल वसइ

वस्तुपाल ॥ ती० ॥ ४ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे । सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ ५ ॥ नयरी चम्पा निरखीये, हिये हरखीये रे । सिद्धा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ६ ॥ पूर्वदिशे पावापुरी, ऋद्धे भरी रे । मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ ७ ॥ जेसलमेर जुहारीये, दुःख वारीयें रे । अरिहंत विंव अनेक ॥ ती० ॥ ८ ॥ वीकानेर ज वंदीयें, चिरनंदियें रे । अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ ९ ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे । फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ १० ॥ अंतरीक अजावरो, अमीभरो रे । जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ ११ ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे । राणपुरे रिसहेस ॥ ती० ॥ १२ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे । श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ १३ ॥ नन्दीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे । रुचक कुण्डले चार चार ॥ ती० ॥ १४ ॥ शाश्वती अशाश्वती प्रतिमा छती रे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥१५॥ तीरथ यात्रा फल तिहां होजो मुझ इहां रे । समयसुन्दर कहे एम ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ श्री सीमंधर-जिन-स्तवन ॥

धन धन खेत्र महाविदेह जी, धन्य पुंडरिकणी गाम, धन्य तिहांनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम । सीमंधर स्वामी कइयें रे, हुं महाविदेहे आवीश, जयवंता जिनवर कइयें रे, हुं तुमने वांदिश ॥ १ ॥ चांदलीया संदेशडो जी,

कहेजो सीमंधर स्वाम । भरतक्षेत्रना मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥ सी० ॥ २ ॥ समवसरण देवे रच्युं तिहां, चोंसठ इंद्र नरेश । सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर छत्र धरेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहुंलीजी, मोतीनां चोक पूरेश । ललिललि लीये लुंछणांजी, जिनवर दीये उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एहवे समें में सांभल्युंजी, हवे करवा पच्चक्खाण । पोथी ठवणी तिहां कनेजी, अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायनें वाहला घोडलाजी, वेपारीने वाहला छे दाम । अमने वाहला सीमंधर स्वामी, जेम सीताने श्रीराम ॥ सी० ॥ ६ ॥ नहि मांगुं प्रभु राजरीद्धिजी, नहि मांगुं गरथ भंडार । हुं मांगुं प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ देवे न दीधी पांखडीजी, केम करी आवुं हजूर, मुजरो मारो मानजोजी प्रह ऊगमते सुर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समयसुन्दरनी विनतीजी, मानजो वारंवार । बे कर जोडी विनवुंजी विनतडी अवधार ॥ सी० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्री गौतमस्वामीजी का रास ॥

वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कय वासो, पणमवि पभणिसुं सामीसाल, गोयम गुरु रासो । मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त,

खोणी तल मंडण, मगध देस सेणिय नरेस, रिऊ दल बल खंडण। धरवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्द्रभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो। विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय, तेजहिं तारा चन्द्र सूरि, आकाश ममाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरमें मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या संचिय। अहवा निश्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गङ्ग, तिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो, पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो। करिय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥

वस्तु—जंबूदीव जंबूदीव भरहवासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥

भास—चरम जिणेसर केवलनाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामति छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन बैठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि विरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसमरसभर वर वरसंता, जोजन वाणि वखाण करंता । जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंतसमोहिय जलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता । पेक्खवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर करंडक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहता । तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपे तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले । मो आगल कोइ जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दिजे ॥ १५ ॥

वस्तु—वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न, पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसार-तारण, तिहिं देवइ निम्महिय समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिणवर जग उज्जोय करै,

तेजहि कर दिनकार, सिंहासण सामी ठव्यो हुओ सुजय जयकार ॥ १६ ॥

भास—तो चढियो घण मान गजे, इन्द्रभूइ भूयदेव तो, हुंकारो करी संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो। जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो। दह दिसि देखे विबुध वधू, आवंति सुररम्भ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जंतुगण, प्राति-हारिज आठ तो। सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो, चित्त चमक्किय चिंतवे ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिय रूप विसाल तो, एह असंभव संभवे ए, साचो ए इंद्रजाल तो। तो बोलावइ त्रिजगतगुरु, इंद्रभूइ नामेण तो, श्रीमुख संसय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १६ ॥ मान मेलि मद ठेलि करी, भगतेहिं नाम्यो सीस तो, पंचसयांसु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो। बंधव संजम सुणिवि करी, अगनिभूइ आवेय तो, नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो। तो उपदेसे भुवन गुरु संयम शुं व्रत बार तो। विहुं उपवासे पारणो ए, आपणपे विहरंत तो, गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥

काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब। पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर-सामीनो जीव, तिर्यकजृंभक देव तिहां, प्रतिबोध्या पुंडरिक, कंडरिक अध्ययन भणी। वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे। पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे। साचा गुरु संयोग, कवल ते केवलरूप हुआ ॥ २९ ॥ पन्नसयां जिण-नाह, समवसरण प्राकारत्रय। पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जाणे जणवि पीयूष, गाजंतो घन मेघ जिम। जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥

वस्तु—इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे नाण संपन्न, पन्नरह सय परिवरिय। हरिय दुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहनाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव। छेही जाइ आपण सही, होस्यां तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥

भास—सामियो ए वीर जिणन्द, पुनमचन्द जिम उल्लसिय, विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस बहुत्तर संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय, आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो

ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे, आपणो ए तिसला देवि, नंदन पुहतो परमपए। वलतो ए देव आकाश, पेखिवि जाएयो जिण समे ए, तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए॥ ३३॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कनासुं टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलुं ए कीधलुं सामि जाण्युं केवल मांग से ए, चिन्तव्युं ए बालक जेम, अहवा केड़े लागसे ए॥ ३४॥ हुं किम ए वीर जिणंद, भगतिहिं भोले भोलव्यो ए, आपणो ए अविहड नेह, नाह न संपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न हेजें लालियो ए, तिण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए॥ ३५॥ आवतुं ए जे उल्लट्ट, रहितुं रागे साहियो ए। केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए। तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भवियण भव जिम निस्तरे ए॥ ३६॥

वस्तु—पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासे संवसिय, तीस वरस संजम विभूसिय, सिरी केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुण नीलो, होसे सिवपुर ठाउ॥ ३७॥

भास—जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमवने परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि। जिम गंगाजल

लहिरयाँ लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु वर कणय वतंसा, जिम महुयर राजीव वने । जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केलि वनें ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो । पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुर तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमिपति भुयबल चमके, जिम जिनमन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछित काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरो ए ॥ ॥४२॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमती सोभा संभवे ए। देवह धुरि अरिहंत नमीजें, विनय पहु उवझाय थुणीजें, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसताँ काँई करीजे, देसदेसांतर काँई भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह उठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहाँ घरे ॥ ४४ ॥ चउदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहि मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि

वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण, दीखियो ए । विनयवंत विद्या भण्डार, तसु गुण पृथ्वी न लब्भइ पार, वड जिम शाखा विस्तरो ए । गोयम सामीनो रास भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४६॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए । तिहाँ बेसी गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेशी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

॥ समाप्त ॥

॥ श्रीशत्रुञ्जयरास ॥

दोहा—श्री ऋषभेसर पाय नमी, आणी मन आणंद । रास भणुं रलियामणो शत्रुंजयनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत चार सत्तोतरे, हुवा धनेसरसूर । तिणे शत्रुंजय महातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीरजिणन्द समोसर्या, शत्रुंजय उपर जेम । इन्द्रादिक आगल कह्यो, शत्रुंजय महातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुंजय तीरथ सरिखो, नहीं छे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु पाताल में, तीरथ सघला जोय ॥ ४ ॥ नामे नवनिधि संपजे, दीठा दुरित पलाय । भेटंताँ भवभय टले, सेवंताँ सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण भारत मझार । सोरठ देश सुहामणो, तिहाँ छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

ढाल पहली-(राग रामगिरि)-शत्रुंजय ने श्रीपुण्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहुं तहलीक । विमलाचलने करूं परणाम, ए शत्रुंजयना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरी ने महागिरी पुण्यरास, श्रीपद पर्वत इन्द्र प्रकास । महातीरथ पूरवे सुखकाम ॥ए०॥ २ ॥ शासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनीलो तिणे कीजे भक्ति । पुष्पदंत महापद्म सुठाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश, पातालमूल अकर्मक तास । सर्व काम कीजे गुणग्राम ॥ए०॥४॥ ए शत्रुंजयना इकवीस नाम, जपेज बैठा आपणे ठाम । शत्रुंजय जात्रानो फल लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ५ ॥

दोहा—शेत्रुञ्जो पहिले आरे, असी जोयण परमाण । पिहुलो मूल ऊंच पण, छब्बीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सित्तर जोयण जाणवो, बीजे आरे विशाल । बीस जोयण ऊंचो कह्यो, पूज वंदन त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे आरे, पिहलो तीरथराय । सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यान धरूं चित्त लाय ॥३॥ पचास जोयण पिहुल पणे, चौथे आरे मझार । ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमे नरनार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम आरे, मूल तणे विस्तार । दो जोयण ऊंचो कह्यो सेत्रुञ्जो तीरथ सार ॥ ॥ ५ ॥ सात हाथ छट्ठे आरे, पिहलो परवत एह, ऊंचो होस्ये सो धनुष्य, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

ढाल दूसरी-(जिनवर सुं मेरो मन लीनो, ए राग)- केवलज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर, अनन्त सिद्धा इण ठाम रे । अनन्त

वली सीझसे इण ठामे, तिण करूं नित प्रणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुञ्जे साधु अनन्ता सिद्धा, सीझसी वलीय अनन्त रे। जिण सेत्रुञ्ज तीरथ नहीं भेट्यो, ते गरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे। रायण रूंख समोसर्या स्वामी, पूरव निनाणु वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुञ्जय गिरी आयरे ॥ पांच कोडीसुं पुण्डरीक सिद्धा, तिण पुण्डरीक नाम कहाय रे ॥से०॥४॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, वे वे कोडी संघात रे। फागण सुदि दशमी दिन सिद्धा, तिण प्रणमुं प्रभात रे ॥से० ॥५॥ चैत्र मास वदि चउदशने दिन, नमी पुत्री चोसट्ठ रे। अणसण करी सेत्रुञ्जय गिरि ऊपर, ए सहु सिद्धा एकट्ठ रे ॥ से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकरकेरा, द्राविड ने वारिखिल्ल रे। काति सुदि पूनम दिन सिद्धा, दश कोडी सुं मुनि सिल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिरि सिद्धा, नव नारद ऋषिराय रे। शांब प्रद्युम्न गया इहां मुगते, आठे करम खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेमि विना तेवीस तीर्थंकर, समोसर्या गिरिशृंग रे। अजित शांति तीर्थंकर बेउ, रह्या चोमासो रंग रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चा सुक साध रे। पांचसे साधु सुं सेलग मुनिवर, सेत्रुञ्जे शिवसुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुञ्जे सिद्धा, भरतेश्वरने पाट रे। राम अने भरतादिक सिद्धा, मुक्ति तणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जाली मयाली

ने उवयाली, प्रमुख साधु कोडी रे । साधु अनन्ता सेत्रुञ्जे सिद्धा, प्रणमुं वेकर जोडी रे ॥ से० ॥ १२ ॥

ढाल तीसरी—(राग चौपाई)—सेत्रुञ्जेना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहु को सुविचार । सुणतां आनन्द अंग न माय, जनम जनमनाँ पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर्या स्वामी हितकारी । भरत गयो वंदणने काज, ए उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा अरिहंत देव, चौसठ इन्द्र करे जसु सेव । तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवर राय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, भरत सुणीने मन गहगह्यो । भरत कहे ते किम पामिये, प्रभु कहे सेत्रुञ्जे जात्रा किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवी पद मुझ, थें आपो हूं अंगज तुझ । इन्द्रे आण्या अक्षतवास, प्रभु आपे संघवी पद तास ॥५॥ इन्द्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा विहुने माल । पहिरावी घर संप्रेडिया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ ऋषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्न तणी दीधी मन रलि । भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देश, भरत तेडायो संघ अशेष । आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम तीर्थंकर जात्रा करी ॥ ८ ॥ संघभक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो सेत्रुंजा भणी । गणधर बाहुबली केवली, मुनिवर कोड़ि साथे लिया वली ॥ ६ ॥ चक्रवर्त्तिनी सघली रिद्धि, भरते

साथे लीधी सिद्धि । हय गय रथ पायक परिवार, तेतो कहेतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहिवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय । संघ आयो सेत्रुञ्जे पास, सहुनी पुगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे नीरख्यो शत्रुञ्जय राय, मणि माणिक्य मोत्यां सुं वधाय । तिण ठामे रही महोच्छव कियो, भरते आणंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुञ्जे ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिक झड पड्यो । केवलज्ञानी पगला तिहां, प्रणम्या रायण रूंख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेन्द्र आणी सुपवित्त । नदी शत्रुञ्जय सोहामणी, भरते दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधर देव तणे उपदेश, इन्द्र वली दीधो आदेश । श्रीआदिनाथ तणो देहरो, भरते करायो गिरि सेहरो ॥ ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग । भरते श्री आदिसरतणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवीनी प्रतिमा भली, माही पूनम थापी रली । ब्राह्मी सुन्दरी प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद । भरत तणो पहिलो उद्धार, सगलो ही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी—(राग - सिन्धुडो - आशावरी)—भरत तणे पाटे आठमे, दण्डवीरज थयो रायोजी । भरत तणी परे संघ कियो, शत्रुञ्जय संघवी कहायोजी ॥१॥ सेत्रुञ्जे उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारोजी । असंख्यात बीजा वली, तेहनो कहुं

अधिकारोजी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो विंब सारोजी। मूलगो विंब भंडारियो, पच्छिम दिशि तिण वारोजी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जेनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारोजी। दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ से०॥४॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जिवारोजी। ईशानेन्द्र करावीयो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चौथा देवलोकनो धणी, माहेन्द्र नाम उदारोजी। तिण सेत्रुञ्जेनो करावीयो, ए चोथो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी। तिण सेत्रुञ्जेनो करावियो, ए पांचमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपति इंद्रनो कियो, ए छट्ठो उद्धारोजी। चक्रवर्ति सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुञ्जेनो अधिकारोजी। व्यंतर इन्द्र करावियो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ चन्द्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चन्द्रशेखर नाम मल्हारोजी। चंद्रजस राय करावियो, ए नवमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १० ॥ शान्तिनाथनी सुणी देशना, शान्तिनाथ सुत सुविचारोजी। चक्रधर राय करावियो, ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जग दीपतो, मुनिसुव्रत स्वामी वारोजी। श्रीरामचन्द्र करावियो, ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १२ ॥ पाँडव कहे अम्हें पापीया, किम छूटाँ मोरी मायोजी। कहे कुन्ती सेत्रुंजातणी, यात्रा कियाँ पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पाँचे पाण्डव संघ करी,

सेत्रुञ्जे भेट्यो अपारोजी । काष्ठ चैत्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१४॥ मम्माणी पाषाणनी, प्रतिमा सुन्दर सरूपोजी । श्रीसेत्रुंजेनो संघ करी, थापी सकल स्वरूपोजी ॥से०॥१५॥ अट्ठोत्तर सो वरसाँ गयाँ, विक्रम नृपथी जिवारोजी । पोरवाड जावड करावियो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥से०॥१६॥ संवत बार तिडोत्तरे, श्रीमाली सुविचारोजी । बाहडदे मुहते करावियो, ए चौदमो उद्धारोजी ॥से०॥१७॥ संवत तेरे इकोत्तरे, देसल हर अधिकारोजी । समरेशाह करावियो, ए पनरमो उद्धारोजी ॥से०॥१८॥ संवत पन्नर सत्यासीये, वैशाख वदि शुभवारोजी । करमे डोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारोजी ॥से०॥ १९ ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरतेछे उद्धारोजी । नित नित कीजे वंदना, पामीजे भव पारोजी ॥से०॥२०॥

दोहा—वली सेत्रुञ्जे महातम कहुं, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी, सेत्रुञ्जे पूजनिक । भगवंतनो वेश वांदतां, लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुञ्जा उपरे, चैत्य करावे जेह । दल परमाण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जा ऊपर देहरो, नवो नीपजावे कोय । जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार । चक्रवर्तिनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुञ्जे, चडीने करे उपवास । नारकी सो सागर समो, करे करमनो नाश ॥ ६ ॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सिद्धा दश

कोड़। ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नांखै छोड ॥ ७ ॥ सहम लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेष। सेत्रुञ्जे साधु पडिलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

ढाल पांचमी-(धन धन अवंती सुकुमालने, ए देशी)-सेत्रुंजे गया पाप छूटीये, लीजें आलोयण एमोजी। तप जप कीजें तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी। चैत्री दिने सेत्रुञ्जे चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तु तणी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध थायो जी। काती सात दिन तप कियां, रतन हरण पाप जायो जी ॥से०॥३॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणे जी। सात दिवस पुरिमड करे, तो छूटे गिरि एणे जी ॥ से० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मूंगीया, जीण चोर्या नरनारी जी। आंबिल करी पूजा करे, त्रण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ धान पाणी रस चोरीया, जे मेटे सिद्ध खेत्रो जी। सेत्रुञ्जे तलहटी साधुने, पडिलाभे शुद्ध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छूटे इण मेलो जी। आदिनाथनी पूजा करे, प्रह उठी बहु वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध थाये एमो जी। अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भैंस घोड़ा मही, गजनो चोरणहारो जी। दीये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरां पारकां, तिहां

लिखे आपणो नामो जी । छूटे छम्मासी तप कियां, सामायिक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारी जी । व्रत भांजे तिणने कह्यो, छम्मासी तप सारी जी ॥ से०॥ ११ ॥ गौ विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी । प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप करी तेहो जी ॥ से० ॥ १२ ॥

ढाल छट्ठी—(कुमार भले आवीयो, ए देशी)—संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार । सेत्रुञ्जे यात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ से० ॥ १ ॥ छह री पालतां चालीये ए, सेत्रुञ्जे केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पहुंचीये ए, संघ मील्या बहु थाट ॥ से ० ॥ २ ॥ ललिय सरोवर पेखीये ए, वलि सतानी वाव ॥ से० ॥ तिहां विसरामो लीजिये ए, वडने चोतरे आवि ॥ से० ॥ ३ ॥ पालीताणे पाजडी ए, चढीए उठी परभात ॥ से० ॥ सेत्रुञ्जे नदीय सोहामणी ए, दूर थकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगुलाजने हडे ए, कलिकुंड नमीये पास ॥ से० ॥ बारीमांहे पेसीये ए, आणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवी टूंक मनोहरु ए, गज चढ़ी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शान्तिनाथ जिन सोलमा ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंश पोरवाड़ परगडो ए, सोमजी शाह मल्हार ॥ से० ॥ रूपजी संघवी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमतीमांहि भला बिंब ॥ से० ॥ पांचे पांडव पूजिये ए,

अद्भुत आदि प्रलंब ॥ से० ॥ ८ ॥ खरतरवसही खांतिसु ए,
विंब जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ चवरी नमुं ए,
टालुं अलग उद्वेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरम दुवारमांहिं नीसरूं ए,
कुगति करूं अति दूर ॥ से० ॥ आवुं आदिनाथ देहरे ए,
करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए,
आदिनाथ भगवंत ॥ से० ॥ देव जुहारुं देहरे ए,
भमतीमांहि भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ सेत्रुञ्जे उपर कीजिये ए,
पांचे ठाम सनात्र ॥ से० ॥ कलश अट्ठोत्तर सो करी ए,
निरमल नीरसुं गात्र ॥से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदिसर आगले ए,
पुंडरीक गणधर ॥ से० ॥ रायण तल पगला नमुं ए,
शान्तिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १३ ॥ रायण तल पगला नमुं ए,
चोमुख प्रतिमा चार ॥ से० ॥ बीजी भूमि विचारवलि ए,
पुण्डरीक गणधार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरजकुण्ड निहालीये ए,
अति भली उलका झोल ॥ से० ॥ चेलणा तलाई सिद्धशिला ए,
अंग फरसु उल्लोल ॥ से० ॥ १५ ॥ आदिपुर पाजें
उतरुं ए, सीद्धवड लहुं विसराम ॥ से० ॥ चैत्य - प्रवाडी
इणपरि करी ए, सीधा वंछित काम ॥ से० ॥ १६ ॥
जात्रा करी सेत्रुञ्जातणी ए, सफल कियो अवतार ॥ से० ॥
कुशल खेमसुं आवियो ए, संघ सहु परिवार ॥ से० ॥ १७ ॥
सेत्रुञ्जारास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहु कोई ॥ से० ॥
घर बेठा भणे भावसुं ए, तसु जात्रा फल होई ॥ से० ॥ १८ ॥

संवत सोल बयासीये ए, सावण वदि सुखकार ॥ से० ॥
रास भण्यो सेत्रुञ्जा तणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥१६॥
गिल्वो गच्छ खरतरतणो ए, श्रीजिनचन्द्रसूरीस ॥ से० ॥
प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना ए, सकलचन्द्र - सुजगीस ॥ से० ॥२०॥
तास शिष्य जग जाणीए ए, समयसुन्दर उवज्झाय ॥ से० ॥
रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥२१॥

॥ इति शत्रुञ्जयरास ॥

॥ श्री गौडीपार्श्वजिन - वृद्धस्तवन ॥

(दूहा)—वाणी ब्रह्मावादिनी, जागे जग विख्यात । पास तणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अहमदावादे पास । गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, मुहुरत एकमंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

(ढाल)—गुणहि विशाला मंगलिक माला, वामानो सुत साचोजी । धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचोजी (गु०) ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरक तणें घर हुंती जी । अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी (गु०) ॥ ५ ॥ जागंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकनें आपै जी । पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक

तुज संतापे जी (गु०) ॥ ६ ॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेवा गोठीने देजे जी । अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसें लेजे जी ॥ गु० ॥ ७ ॥ नहि आपीस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लच्छी घणी घर जास्ये जी ॥ गु० ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुझनें मिलस्यें, सारथवाह जै गोठी जी । निलवट टीलो चोखा चेल्या, वस्तु वहे तसु पोठीजी ॥ गु० ॥ ९ ॥

(दूहा)–मनगु बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण । बीबीनें सुहणा तणो, संभलावै सही नाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, बडा देव है कोय । अब सताव परगट करो, नहीं तरमारै सोय ॥ ११ ॥ पाछली रात परोडीयै, पहेली बांधै पाज । सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्षराज ॥ १२ ॥

(ढाल)–एम कहीं जख आयो राते, सारथवाहने सुहणै जी । पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, ले तो सिर मत धूणे जी, ॥ एम० ॥ १३ ॥ पांचसें टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी । जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारै जी ॥ एम० ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु फलदायक, भाई गोठी सुणजे जो । पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहूंतो जी । पाटण मांहे सारथवाह, हींडै तुरकनो जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक

लिलाडै जी। संकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावै बहु लाडै जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझनें आपुं, पास जिणेसर केरी जी। पांचसें टका जो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहूंतो रंजै जी। केसर चंदन मृग-मद घोली, विधिसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी रुडी रुनी कीधी, तेमांहिं प्रतिमा राखै जी। अनुक्रम आव्या परिकर माहें, श्रीसंघ ने सुर साखै जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उच्छव दिन दिन अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम ठामना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

(दूहा)-इक दिन देखै अवधिसुं, परिकरपुरनो भङ्ग। जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल अटवी उज्जाड। महिमा थास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहां अछे, तुझने मुझने जाणि। संका छोडी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥

(ढाल)-पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक वृषभ जोतरै। परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥ २५ ॥ बारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चाले तेतलै। गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंड़ावुं सही ॥ २६ ॥

आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोई न दीसै पाहाण ।
देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथें विणो ॥ २७ ॥
जल विन श्रीसंघ रहेस्यै किहां, सिलावटो किम आवे इहां ।
चिन्तातुर थयो निद्रा लहै, यक्षराज आवीने कहै ॥ २८ ॥
गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां ।
स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, पाहण तणि उल्लटस्यै खाणि ॥ २९ ॥
श्रीफल सजल तिहां किल जुओ, अमृत जल निसरसी कूओ ।
खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छै नीलो छाण ॥ ३० ॥
सिलावटो सीरोही वसै, कोढ पराभवि-ो किसमिसै ।
तिहां थकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥
गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो । रोग गमीनें पुरूं आस, पास तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहि मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुवा, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलवटो आवै धरमो, जिमें खीर खांड घृत चूरमो । घडै घाट करै कोरणी, लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ थंभ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली । रंगमंडप रलियामणो रचै, जोतां मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मंडे आवास । दिवस विचारी ईंडो घड्यो, ततखिण देवल उपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण बेठा श्रीपास । महिमा मोटी मेरुसमान, एकलमिल वगडे रहैवान

॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, स्तवन मांहि गूंथि सांकली । गोठी तणा गोतरिया अच्छे, यात्रा करीने परणे पछे ॥ ३८ ॥

(दोहा)–विघन विडारन यक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप । प्रीत करे श्री संघने, देखाडे निज रूप ॥ ३९ ॥ मिलश्रो गोडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । सांनिध करे श्री संघने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥

(ढाल)–वरण अढार तणो लहे भोग, विघन नीवारे टाले रोग । पवित्र थई समरंजे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधन ने धरी धननो सुत, आपे अपुत्रीयाने पुत्र । कायरने सूरापण धरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥ ४३ ॥ दोभागिने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पग । ठाम नहीं तेहने द्यें ठाम, मनवंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधारने द्ये आधार भवसागर उतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समर्या सहाय दीये यक्षराज, तेहना मोटा अछे दिवाज । बुद्धिहीण ने बुद्धिप्रकाश, गूंगाने दे वचन-विलास ॥ ४६ ॥ दुःखियाने सुखनो दातार, भयभंजण रंजण अव-तार । बंधन तूटे वेडी तणा, श्रीपार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥

(दूहा)–श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्ति जूथ दूरे टलै, दुर्द्धर सिंह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय

चुकवे, विप अमृत उडकार। विपधरनो विप उतरे, संग्रामे जय जय कार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुःख, दोहग दूर पलाय। परमेसर श्री पासनो, महिमामन्त्र जपाय ॥ ५० ॥

(कडाखानी चाल)-उंजितु उंजितु उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्री पार्श्व अक्षर जपंतें। भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपसमे वार इक्वीस गुणंते (उं०) ॥ ५१ ॥ दुर्द्धर रोग सोगा जरा जंतुने, ताव एकान्तरा दुत्तपंते। गर्भबन्धन वर्ण सर्प विच्छू विपं, चालिका बालमेवा भ्रवंते (उं०) ॥ ५२ ॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोप हुंते। दाढ उंदर-तणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते (उं०) ॥ ५३ ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती, वाट आघाट अटवी अटंतें। लच्मी लोंदु मिलै सुजस वेला उलें, सयल आस्या फलै मन हसंतें (उं०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीडा टलें, उतरें सूल सीसग भणंते। वदत वर प्रीतसूं प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्तै (उं०) ॥ ५५ ॥

(कलश)-तपगच्छनायक सुखदायक श्रीविजयसेन सूरीश्वरो, तसपाट उदयाचले उदयो विजयदेव सुहंकरो। इम थुणयो गोडीपास जिनवर प्रीतिविमल जय करो, भणे गुणे भाविक शुद्ध भावे तस घर मंगल जय करो ॥ ५६ ॥ समाप्त ॥

॥ तावका छंद ॥

ॐनमो आनंदपुर, अजयपाल राजान । माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपानिधान ॥ १ ॥ सात रूप शक्तें हुवो, करवा खेल जगत । नाम धरावी जूजूवा, पसर्यो तुं इत उत ॥२॥ एकांतरो वेलांतरो, तीयो चोथो नाम । सीत उष्ण विषमज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

छंद मोतदाम ।

ए साते तुझ नाम सुरंगा, जपतां पूरे कोडि उमंगा । ते नाम्या जे जालिमजुंगा, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे भूपति सवि रंका, त्रिभुवनमें वाजे तुज डंका । माने नहि तु केहने निशंका, तुं तूटो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडें । दुष्ट धिष्टना कंधर तोडें, नमि चाले तेहने तुं छोडें ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, डाह्याने जिम तिम वहेकावे । पहेलो तुं कडिमांथी आवे, सो सीरख पन सीत न जावे ॥ ७ ॥ ही हीं हुं हुं कार करावें, पांसलियां हाडां करडावें । ऊनाले पण अमल जगावें, तापे पहिरणसां मूतरावे ॥८॥ आसो कार्तिकनां तुज जोरो, हठ्यो न माने धागो दोरो । देश विदेश पडावें सोरो, करे सबल तुं तातो दोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीना हाडां भांजे, पापीने राखे कर पंजे । भगतवच्छल भक्ते जो रंजे, तो सेवकने कोई न गंजे ॥१० ॥

फोड़े तुं इक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा माने हाकं। धमके घुंसड धीमड धाकं, चडतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुण पछाडण नहिं को तो थी, तुज जस बोल्या जाय न कोथी। मोथण विलंब करो ए थोथी, महिर करी अलगा रहो मोथी॥१२॥ भगत धर्णी एवडी कां सेडो, अवल अमीना छांटा रेडो। रात्रो भगतनो ए निवेडो, महाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥ लाजनमो मा अजया राणी, गुरु श्राणा मानो गुणखाणी। घरे मीथाबो कत्या आणी, कहुं छुं नाके लीटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छन्द जे पडसे, तेहने ताव कदि नहिं चडसे। कान्ति कमला देहे नीरोगं, लहेसे नवला लीला भोगं ॥ १५ ॥

कलश।

ॐ नमो धरी आदि बीज, गुरु नाम वदीजे। आनन्दपुर श्ररनीश, अजयपाल आसीजे ॥ अजया जान अठार, वांचई गाते वेटा। जपतां एही ज जाप, भगवतुं न करे भेटा ॥ उतरे अंग पदीय, पल में तारी चपसो मुद्रा। कहे कान्ति रोग नाने कदे गाम्मंत्र गणीये सदा ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ चार शरण ॥

मुजने चार शरणा होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधुजी; केवली धर्म प्रकाशीयो, रत्नत्रय अमुलख लाधोजी ॥मु०॥ १ ॥ चउगति दुःख छेदवा, समरथ शरणां चारोजी; पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेणे

कीधां शरणा तेहोजी ॥ मु० ॥ २ ॥ संसारमांही जीवने, समरथ शरणां चारोजी; गणिसमयसुंदर एम कहे, कल्याण मंगलकारोजी ॥ मु० ॥ ३ ॥ लाख चोराशी जीव खमावीए, मन धरी परम विवेकजी; मिच्छा मि दुक्कडं दीजिये, जिनवचने लहीए टेकजी ॥ ॥ ला० ॥ ४ ॥ सात लाख भु-दग-तेउ-वाउना, दश चौद वनना भेदोजी; षट् विगल सुर तिरी नारकी, चउ चउ चउदे नरना भेदोजी ॥ ला० ॥ ५ ॥ माहरे वैर नहीं छे कोइसुं, सउसुं मित्र संभावोजी; गणिसमयसुन्दर एम कहे, पामीए पुण्य प्रभावो जी ॥ ला० ॥ ६ ॥ पाप अढारे जीव परिहरे, अरिहंत सिद्धनी साखेजी; आलोव्या पाप छुटीए, भगवंत एणी परे भाखेजी ॥ ॥ पा० ॥ ७ ॥ आश्रव कषाय दोय बंधना, वलि कलह अभ्याख्यानजी; रति अरति पैशुन निंदना, माया मोह मिथ्या तजी ॥ पा० ॥ ८ ॥ मन वचन कायाए जे कर्यां, मिच्छा मि दुक्कडं ते होजोजी ; गणिसमयसुन्दर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहोजी ॥ पा० ॥ ९ ॥ धन-धन ते दिन मुज कदि हौस्ये, हुं पामीश संजम सुधोजी; पूर्व ऋषि पंथे चालशुं, गुरुवचन प्रति-बुधोजी ॥ध०॥१०॥ अंतपंत भिक्षा गौचरी, रण वने काउस्सग्ग करशुं जी; समता शत्रु मित्र भावशुं, संवेगे सुधो धरशुं जी ॥ ॥ ध० ॥ ११ ॥ संसारना संकट थकी, हुं छूटीश अवतारो जी; धन धन समयसुन्दर ते घडी, तो पामीश भवनो पारोजी ॥ध०॥ ॥ १२ ॥ इति ॥

आलोयण-स्तवन ।

बे कर जोड़ी विनवुं जी, सुण स्वामी सुविदित । कूड़ कपट मूकी करिजी, वात कहुं आपवीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ टेर ॥ तुं समरथ त्रिभुवन धणीजो, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी. दीठां दुःख अनन्त । भाग संयोगे भेटीयाजी, भयभञ्जण भगवन्त ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणो जी, तेहने कहिये दुःख । परदुःखभञ्जण तूं सुण्योजी, सेवकने द्यो सुक्ख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां जिकाजी, जीव रुले संसार । रूपी लक्ष्मण महासतीजी, एह सुणो अधिकार ॥ कृ० ॥५॥ दूषमकाले दोहिलोजी, सुधो गुरु संयोग । परमारथ पीछे नहींजी, गडरप्रवाही लोग ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणांजी, पाप आलोउं आज । माय बाप आगल बोलतांजी, बालक केही लाज ? ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिनधर्म जिनधर्म सहु कहेजी, थापे अपणी वात । समाचारी जुइ जुइजी, संशय पड्यु मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजाणपणे करीजी, बोल्या उन्सूत्र बोल । रतने काग उड़ावतांजी, हार्यो जन्म निटोल ॥कृ०६॥ भगवन्त भाख्यो ते किहांजी, किहां मुझ करणी एह । गज पाखर खर किम सहेजी, सबल विमासण तेह ॥ कृ० ॥ १० ॥ आप परूप्यो आकरोजी, जाणे लोक महन्त । पिण न करूं परमादीयो जी. मासाहस दृष्टान्त ॥कृ०॥ ११ ॥ काल अनन्ते में लह्याजी,

तीन रतन श्रीकार । पिण परमादे पाडिया जी, किहां जई करूं पुकार ॥ कृ० ॥ १२ ॥ जाणुं उत्कृष्टो करूं जी, उद्यत करूं रे विहार । धीरज जीव धरे नहीजी, पोते बहु संसार ॥ कृ० ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी, न गमे रूडी वात । परनिंदा करतां थकांजी, जावे दिन ने रात ॥ कृ० ॥ ॥ १४ ॥ किरिया करता दोहिलीजी, आलस आणे जीव । धरम पखे धंधे पड्योजी, नरके करस्ये रीव ॥ कृ० ॥ १५ ॥ अणहुंतां गुण को कहेजी, तो हरखुं निशदिन । कोई हितशिक्षा भली कहेजी, तो मन आणुं रीश ॥ कृ० ॥ १६ ॥ वाद भणी विद्या भणीजी, पररञ्जण उपदेश । मन संवेग धर्यो नहींजी, किम संसार तरेश ? ॥ कृ० ॥ १७ ॥ सूत्र-सिद्धान्त वखाणतांजी, सुणतां करमविपाक । खिण एक मनमांहि ऊपजेजी, मुझ मरकट वैराग ॥ ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविध त्रिविध करी ऊचरुंजी, भगवन्त तुम्ह हजूर । वारवार भांजुं वलीजी, छुटक वारो दूर ॥ कृ० ॥ ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतांजी, कीधा आरम्भ कोड़ । जयणा न करी जीवनीजी, देव दयापर छोड़ ॥ कृ० ॥ २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दण्ड । कूड़ कपट बहु केलवीजी, व्रत कीधा शतखंड ॥ कृ० ॥२१ ॥ अणदीधो लीजे तृणोजी, तेही अदत्तादान । ते दूषण लागा घणाजी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कृ० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं जी, राचे रमणी रूप । काम विटंबण सी कहुंजी, ते तूं जाणे स्वरूप

॥ कृ०॥ २३ ॥ माया ममता में पड्योजी, कीधो अधिको लोभ । परिग्रह मेल्यो कारमोजी, न चढ़ी संयम शोभ ॥ कृ० ॥ २४ ॥ लागा मुझने लालचेजी, रात्रिभोजन दोष । में मन मूक्यो माहरोजी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण भव परभव दूहव्याजी, जीव चौराशी लाख । ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडंजी, भगवंत तोरी साख ॥ कृ० २६ ॥ करमादान पनरे कह्यांजी, प्रगट अठारे पाप । जे में कीधां ते सहुजी, बगश २ माई बाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुझ आधार छे एटलोजी, सद्दहणा छे शुद्ध । जिनधर्म मीठो जगतमेंजी, जिम साकर ने दूध ॥ कृ० २८ ॥ ऋषभदेव तूं राजीयोजी, सेत्रुंजगिरि सिणगार । पाप आलोया आपणांजी, कर प्रभु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनोजी, पाप आलोयां जाय । मनसुं मिच्छा मि दुक्कडंजी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणीजी, तूं साहिब तूं देव । आण धरूं सिर ताहरीजी, भव भव ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥ (कलश)-इम चढ़ीय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभिनंदन जिन तणा, कर जोडी आदि जिणंद आगे पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणे, गणि सकलचन्द सुशिष्य वाचक समयसुंदर गणि भणे ॥ कृ० ॥ ३२ ॥ इति ॥

पद्मावती आलोयणा ।

हिवे राणी पद्मावतीजी, जीवराशि खमावे । जाणपणुं जग ते

भलु, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं, अरिहंतनी साख। जे मैं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवी तणां, साते अप्काय। सात लाख तेऊकायना, साते वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधारण। बी ती चउरिंद्रिय जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकासी। चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चउरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण भव परभव सेवियां, जे पाप अढार। त्रिविध २ करी परिहरूं, दुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद। दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥७॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष। मान माया लोभ मैं किया, वली राग ने द्वेष ॥ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्यां, दीना कूडा कलंक। निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी खाधी चोतरे, कीधो थापणमोसो। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे मैं किया, जीवना वध-घात। चिडिमार भवे चिडकलां, मार्या दिन रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर भवे माछलां, झाल्या जलवास। धीवर भील कोली भवे, मृग मार्या पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर। जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे मैं किया, आकरा कर दंड। बंदीवान मराविया,

कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुक्ख । छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख ॥ ते० ॥१५॥ कुंभारने भवे मैं क्रिया, निम्माह पचाव्या । तेली भव तिल पीलीया, पापे पेट भराव्या ॥ते०॥ १६॥ हाली ने भव हल खेडिया, फाड्यां पृथ्वीना पेट । सूड निदाण घणां कियां, दीधां बलद चपेट ॥ ते०॥ १७॥ मालीने भवे रोपियां, नानाविध वृत्त । मूल पत्र फल फूलनां, लाग्या पाप ते लच ॥ ते० ॥ १८ ॥ अवोवाड्याने भवे, भर्या अधिका भार । पोठी उँट कीडा पड्या, दया नारी लगार ॥ते० ॥ १९॥ छीपाने भवे छेतर्या, कीधां रांगणि पास । अग्नि आरंभ किया घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूर पणे रण भूंभता, मार्या माणस वृंद । मदिरा मांस भक्ष्या घणां, खाधा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाणं खणावी धातुनी, पाणी ऊलंच्या । आरंभ किधा अतिघणां, पोते पातक संच्या ॥ ते० ॥ २२ अंगारकर्म किया वली, धरमे दव दीधां । सम लेई वीतरागना, कूडा कोशज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर लिया, गीलोई हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे, मैं जूँ लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ मांडभूंजा तणे भवे, एकेन्द्रीय जीव । ज्वारी चिणा गहुं सेकियां, पाडन्ता रीव ॥ ते० ॥२५॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक। रांधण इंधण आगिना, किया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पंच प्रमाद । इष्ट वियोग पाड्या किया, रोदन विषवाद ॥ ते० ॥२७॥ साधु अने श्रावकतणां, व्रत लेई भांग्यां, मूल अने उत्तरतणा, दूषण मुझ लाग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥

साप विच्छू सिंह चीतरा, शकरा ने शमली। हिंसक जीवतणे भवे, हिंसा कीधी सबली॥ ते०॥ २९॥ सूआवडी दूषण घणां, वली गरभ गलाव्यां। जीवाणी ढोल्यां घणां, शीलव्रत भंजाव्यां॥ ते० ॥ ३०॥ भव अनंत भमतां थकां, कीया कुटुम्ब संबंध। त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिणसुं प्रतिबंध॥ ते० ॥३१॥ इणभव परभव इण परे, कीधां पाप अखत्र। त्रिविध त्रिविध करी वोसिरूं, करूं जन्म पवित्र॥ ते०॥ ३२॥ राग वैराडी जे सुणे, ए त्रीजी ढाल। समयसुन्दर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥३३॥ इति॥

सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानम्॥
भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेवः॥ १॥

राग प्रभाती जे करे प्रह ऊगमते सूर।
भूख्यां भोजन संपजे कुरला करे कपूर॥ १॥
अंगुठे अमृत वसे लब्धि तणो भंडार।
जे गुरु गौतम समरिये मनवंछित दातार॥ २॥
पुण्डरीक गोयम पमुहा गणधर गुण संपन्न।
प्रह ऊठीनें प्रणमतां चवदेसें बावन्न॥ ३॥
खंतिखमं गुणकलियं सुविणीयं सव्वलद्धिसंपन्नं।
वीरस्स पढमसीसं गोयमसामिं नमंसामि॥ ४॥
सर्वारिष्टप्रणाशाय सर्वाभीष्टार्थदायिने।
सर्वलब्धिनिधानाय गौतमस्वामिने नमः॥ ५॥ इति॥

जैनतिथि मन्तव्य ।

पूज्यपाद श्रीमद् हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजकृत तत्त्वतरंगिणी ग्रन्थका तथा श्रीउमास्वामिजी महाराज कृत आचारवल्लभादि ग्रन्थोंका यह फरमान है:—

"तिहि पड़णे पुव्वा तिहि । कायव्वा जुत्त धम्म कज्जेव ॥
चाउद्दसी विलोवे । पुण्णमिअं पक्खिपडिकमणं ॥ १ ॥"

अर्थः—तिथि का क्षय हो तो पूर्व तिथि में धर्म कार्य करना युक्त है, चौंदस का क्षय हो तो पूर्णिमाको पक्खी प्रतिक्रमण करना चाहिये ।

व्याख्याः—तिथि मात्रमें से कोई तिथि का क्षय हो तो उस तिथि सम्बन्धी धर्म कृत्य उसकी पूर्वतिथि में करना योग्य है; परन्तु यदि चतुर्दशीका क्षय हो तो पूर्णिमा या अमावास्यामें पाक्षिक प्रतिक्रमण करना चाहिये, कारण कि समीप में रही हुई पर्व तिथि (पूर्णिमा-अमावस्या) को छोड़ कर अपर्वतिथि में पर्वतिथिका आराधन करना युक्त नहीं है ।

आशंकाः—कदाचित् यहां पर कोई महानुभाव यह प्रश्न करे, कि यदि पर्वतिथिका आराधन अपर्वतिथिमें नहीं करना तो अष्टमी आदि के क्षय होनेपर तत्सम्बंधी धर्मकृत्य सप्तमी आदि को करना कैसे उचित होसकेगा ?

उत्तरः—प्रियसज्जनवरों ! हमको पर्वतिथि का कृत्य पर्वतिथिमें ही इष्ट है ; परन्तु अनन्तर पर्वतिथिका योग न होनेसे पूर्वमें

रही हुई सप्तमी आदिमें ही करना योग्य है; मगर नौमी आदिमें करना उचित नहीं ।

पर्वतिथिका क्षय हो तो समीप में रही हुई पर्व तिथि में तत्संबंधी धर्मकृत्य करना इस ही नियमके अनुसार होता है । सांवत्सरिक पर्वकी चौथका क्षय हो तो पंचमीको सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करना मगर तीज को नहीं, यह व्यान क्षयतिथिसंबंधी हुवा ।

"तिहि वुड्ढीए पुव्वा । गहिया पडिपुन्नभोगसंजुत्ता ॥
इयरा वि माणणिज्जा । परं थोवत्ति न तत्तुल्ला ॥१॥"

तिथिकी वृद्धि हो तो पूर्वतिथिमें धर्मकृत्य करना उचित है, दूसरी तिथि भी पर्वरूप मानी जाती है; परन्तु अल्परूपमें न तु पूर्व सदृश ।

व्याख्याः—पन्द्रह तिथियोंमें कोई तिथि बढ़े तो उस सम्बन्धि धर्मकृत्य पूर्व तिथिमें करना; कारण की समीप की पर्वतिथिको छोड़कर दूरवर्तिनी पर्वतिथिको ग्रहण करना यह तत्त्वदृष्टिसे अमान्य है ।

आशंकाः—कोई महोदय यहां पर ऐसी आशंका करे, कि सूर्योदय तिथि अपनेको मान्य है, फिर दूसरी माननेमें क्या बाधा है ?

उत्तरः—जिज्ञासु महाशयों ! आप स्वयं विचार कर सकते हैं, कि सूर्योदय व अस्त दोनों टाइममें रही हुई पूर्ण तिथि को

छोड़ कर अन्य समयवर्तिनी द्वितीय तिथिको मानना कहांतक ठीक हो सकता है ? पण्डित जन विचारें ।

(विशेष विचार)

मास प्रतिबद्ध जितने पर्व हैं वे सब मासकी वृद्धि में कृष्णपक्ष संबन्धि प्रथम मासमें व शुक्लपक्ष संबन्धि द्वितीय मासमें आराधन करना चाहिये; यह शास्त्रसम्मत व वृद्धपरंपरानुसार मान्य है ।

पर्युषणपर्व दिनप्रतिबद्ध होनेसे आषाढ चौमासीसे पचासवें दिन करना ही शास्त्रसम्मत व युक्तियुक्त है । इति ॥

सूतक-विचार

पुत्र जन्म होनेसे दिन १० दस सूतक । पुत्री जन्म होनेसे दिवस ११ ग्यारह सूतक । जिस स्त्रीके पुत्र पुत्री हो उसके एक महीने तक सूतक । गाय, भैंस घोड़ी सांढ आदि अपने घरमें व्यायें तो दिन एक सूतक । अपने निश्राइमें रहे हुवे दास-दासी के पुत्र पौत्रादिकका जन्म व मरण हो तो दिन ३ तीन सूतक । जितने महीनेका गर्भ गिरे उतने दिनका सूतक ।

मृत्यु होनेसे दिन १२ बारह सूतक । पुत्र होते ही मृत्यु पावे तो दिन १ एक सूतक । परदेश में मृत्यु हो तो दिन १ एक सूतक । गाय-भैंस-घोडा-ऊंट वगैरह का मृतक कलेवर जहां तक बाहर नहीं लेजाय वहां तक सूतक ।

जिसके जन्म-मरणका सूतक हो वे बारह दिन देवपूजा न करें । मृतकके घरका जो मूल खांधिया हो वह १० दस दिन और अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करें ॥

जो मृतकको छुआ हो सो चौबीस प्रहर पडिक्कमण न करे । यदि सदाका अखंड नियम हो तो समता भावसे संवरमें रहे; परन्तु मुखसे नवकार मन्त्रका भी उच्चारण नहीं करे । स्थापना-चार्यजीको हाथ न लगावे ।

जो मृतक को नहीं छुआ हो सो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे—अगर किसीको न छुआ हो तो स्नान से शुद्ध होकर सब करे ।

भेंसके बच्चा हो तब १५ पन्द्रह दिन पीछे दूध पीना कल्पे । गायके बच्चा हो तब १७ सतरा दिन पीछे दूध पीना कल्पे । बकरी के जब बच्चा हो तब ८ आठ दिन पीछे दूध पीना कल्पे ।

ऋतुमती स्त्री चार दिन भांडादिको नहीं छुवे, चार दिन प्रतिक्रमण न करे, पांच दिन देवपूजा न करे ।

रोगादिक के कारण कोई स्त्री को तीन दिन पीछे रक्त बहता दिखे तो असज्झाय नहीं, विवेकपूर्वक पवित्र होकर चार पांच दिन पीछे स्थापना पुस्तक छुवे, जिन दर्शन करे, अग्रपूजा करे, परन्तु अङ्गपूजा न करे, साधुको पडिलाभे ।

ऋतुमती तपस्या करे सो सफल होती है, परन्तु जिनपूजा,

प्रतिक्रमणादि क्रिया सफल नहीं होती, ऐसा 'चर्चरी' ग्रंथ में कहा है।

जिसके घर में जन्म-मरणका सूतक हों वहां १२ बारह दिन साधु आहार पाणी न बहरे-सूतकवाले के घरके जलसे १२ बारह दिन तक देवपूजा न करे— निशीथ सूत्र के सोलहवें उद्देश्य में सूतकवाले का घर दुर्गमनीय कहा है।

गायके मूत्र में २४ प्रहर पीछे, भैंस के मूत्रमें १७ प्रहर पीछे, गाडर गधेड़ी और घोड़ी के मूत्र में ८ प्रहर और नरनारी के मूत्र में अंतर मुहूर्त्त पीछे संमूर्छिम जीव उत्पन्न होते हैं-विशेष ग्रन्थान्तर से जानना।

असज्झाय - विचार।

१ धूंआरी पड़े तहांतक असज्झाय।

२ सर्व दिशाओं में लाल छाया तथा रजअरण्य सम्बन्धी रज उड़े, निरंतर पड़े तो तीन दिन उपरान्त असज्झाय।

३ मेघ वर्षते बुदबुदकर हो तो तीन दिन उपरान्त असज्झाय।

४ छोटे छोटे निरन्तर सात दिन उपरान्त वर्षते न रहे तो अ०।

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलीवृष्टि जहां तक हो वहां तक असज्झाय और जो रुधिरवृष्टि हो तो अहोरात्र अ०।

६ बुदबुदा रहित निरंतर वर्षे तो पांच दिन उपरांत असज्झाय।

७ चैत्र सुदी ५ से पडिवा तक असज्झाय-तेरस चौदस पूनम तीन दिन संध्याकाले, अचित्त रज उड़ावणार्थं, चार लोगस्स का काउसग्ग करे । इसही प्रकार आसोज मास में जानना ।

८ दश दिग् दाह में प्रहर १ एक असज्झाय ।

९ अकाले गाजे तो प्रहर २ दो असज्झाय ।

१० अकाले बीज, उल्कापात हो तो प्रहर एक असज्झाय ।

११ शुक्लपक्षमें संध्याकाल, पड़िवा, बीज और तीजकी असज्झाय परन्तु दशवैकालिक गिन सकते हैं ।

१२ अकाले मेघ वर्षे तो प्रहर १ एक असज्झाय ॥

१३ भूकम्प हो तो प्रहर ८ आठ असज्झाय ।

१४ चन्द्रग्रहणकी जघन्यसे ८ आठ प्रहर और उत्कृष्ट से १२ प्रहर असज्झाय ।

१५ सूर्य ग्रहणकी जघन्यसे १२ प्रहर उत्कृष्टसे १६ प्र० अ० ।

१६ आषाढ चौमासे पडिक्कमण ठाने से लेकर प्रहर १२ अ० ।

१७ कार्तिक चौमासे प्रतिक्रमण पीछे पड़िवातक प्रहर १२ अ० ।

१८ जहां तक परस्पर मल्लादि युद्ध हो वहां तक असज्झाय ।

१९ कलह युद्ध जहांतक हो वहांतक असज्झाय ।

२० उपाश्रयके पास स्त्री पुरुषका जहांतक कलह हो वहांतक अ० ।

२१ फाल्गुन चौमासे रज पडिवाके दिन जहांतक धूलउड़े वहांतक०।

२२ अपराधीको दंडादिसे जहांतक मार पड़े तहांतक असज्झाय ।

२३ परचक्रादिका भय हो और जहांतक न उपशमें तहांतक अ० ।
२४ नगरमें प्रधान पुरुष विहडे तो अहोरात्र असज्झाय ।
२५ उपाश्रयसे सात घरतक कोई पुरुष विहडे(विनाश हो)तो अ०।
२६ उपाश्रयसे सो हाथ पर्यन्त कोई अनाथादि पुरुष मरा हुवा पड़ा हो तो जहांतक मृतक कलेवर न उठावे तहांतक अ० ।
२७-२८ सो हाथ दूरतक मनुष्यका रुधिर पड़नेसे अहोरात्र असज्झाय-इसही प्रकार तिर्यंचका समझना ।
२६ मनुष्यकी अस्थि, दांत, दाढादि पड़ा हुआ हो तो सो हाथ दूर तक सूत्र पढना कल्पे नहीं ।
३० स्त्री को ऋतुधर्म आवे तो दिन ३ असज्झाय ।
३१ सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से स्वातिनक्षत्र पर्यन्त गाज, वीज, मेघ वर्षे तो असज्झाय नहीं ।
३२ पुत्र प्रसवे दिन ७ और पुत्री प्रसवे दिन ८ असज्झाय ।
३३ कालग्रहण विना किये पढना गुणना नहीं, प्रहर १२ अ० ।
३४ वैशाख विदि १ श्रावण विदि १ कार्तिक विदि १ मागसर विदि १ ये चार महा पड़वाकी असज्झाय-सूत्रकी असज्झाय तो प्रहर चारा । विशेष ग्रंथान्तर से जानना । ॥समाप्त॥

वस्तु-काल-विचार ।

चावल प्रहर ८, रात्र प्रहर १२, घेस प्रहर २०; छाश प्रहर २४, दही प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवड़ा प्रहर २४, घोलवड़ा

प्रहर ४, तन्यावड़ा प्रहर ४, पुड़ी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४ तथा ६, बाजरा उष्ण प्रहर १२, जवार उष्ण प्रहर १२, बाजरीकी खीचड़ी प्रहर ८, जवारकी खीचडी प्रहर ८, चावल की खीचडीप्रहर ४ ।

सियाले आटा दिन १०, उन्हाले दिन ८, वरषाले दिन ५, सियाले पक्वान दिन ३०, उन्हाले दिन १५, वरषाले दिन ७, उन्हाले फासुलूण दिन ८, सियाले दिन ५, वरषाले दिन ३, उन्हाले फासु घी दिन ५, सियाले दिन ८, वरषाले दिन ३, उन्हाले उष्ण जल प्रहर ५, सियाले प्रहर ४, वरषाले प्रहर ३, ।

सर्व अनाज की घूघरी पानीमें भिजोई हुई प्रहर ८, पानीका उसेही घूघरी १८ प्रहर, घी तेलकी तली हुई घूघरी २०–२४ प्रहर, बड़ी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४–६, रायता प्रहर ८, घीकी तली (वस्तु) १६ प्रहर ।

इस प्रकार कालसे उपरान्त वस्तु चलित रसवाली हो जाती है, अर्थात् अभक्ष्य हो जाती है ॥ ॥ समाप्त ॥

अथ श्रावकके चौदह नियम ॥

"सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु ।
वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसिण्हाण भत्तेसु ॥"

१ सचित्त–जिसमें जीव-सत्ता हो ऐसे हरा शाक, फल, फूल, कच्चा पानी आदि ।

२ द्रव्य–जितनी चीज मुँह में आवे ऐसी दाल, चावल, रोटी

मिठाई आदिक वस्तुएँ।

३ विगय–सब विगय १० हैं, इनमें से मधु १, मांस २, मक्खन ३, और मदिरा ४ इनका तो सर्वथा त्याग करना चाहिए और षड्रस–घी, तेल, दूध, दही, गुड़ और खांड (शक्कर) इनका तथा घीसे बनाई हुई मिठाई वगैरेह का प्रमाण रखना।

४ उपानह–जूता, मोजा आदि जो चीज पांव में पहनी जाय।

५ तंबोल–पान, सुपारी, इलायची आदि

६ वस्त्र–जो पहनने ओढनेमें आवे ऐसे वस्त्र और आभूषण आदि।

७ कुसुम–जो सुंघनेमें आवे ऐसी फूल, इतर आदि वस्तुएं।

८ वाहन–हाथी, घोड़ा, बैलगाड़ी, मोटर, जहाज आदि किसी प्रकार की सवारी।

९ शयन–शय्या, बिछौना, पलंग, कुरसी आदि।

१० विलेपन–केशर, चन्दन, सुगंध तेल आदि जो चीजें शरीर पर लगाई जावें।

११ ब्रह्मचर्य–परस्त्रीका सर्वथा त्याग और अपनी स्त्रीसे भी सुई डोरे के न्याय से तथा वाह्य विनोद का प्रमाण करना।

१२ दिशा–दिशा और विदिशा में लम्बा-चौड़ा, ऊँचा-नीचा जाने का माप रखना।

१३ स्नान–नहाने और हाथ पैर धोनेका प्रमाण रखना ।

१४ भत्त–अन्न पानी आदि चारों आहारोंमें से अपने लिए जितना चाहिए उसका तोल रखना ।

छह काय ।

१ पृथ्वीकाय–मिट्टी, नमक आदि जो खाने व उपभोग में आवे उसका प्रमाण रखना ।

२ अपकाय–जो पानी नहाने धोने व पीने के काम में आवे उसका वजन रखना ।

३ तेउकाय–चूल्हा, भट्टी चिराग अंगीठी आदिका प्रमाण करना ।

४ वाउकाय–अपने हाथ से व हुक्म से जितने पंखे चलाने में आवे उनकी गिनती रखना ।

५ वनस्पतिकाय–हरा शाक फल आदिका वजन और इतनी जाति के खाने का प्रमाण करना ।

६–त्रसकाय—त्रस जीवों को मन, वचन काया से जानकर कभी नहीं मारना, अजाण का मिच्छा मि दुक्कडं देना ।

तीन कर्म ।

१–असि—तलवार, बंदूक, चाकू, कैंची आदि शस्त्र रखनेकी संख्या रखनी ।

२–मसि—कागज, कमल, दावात आदि का प्रमाण रखना ।

३–कृषि—खेती, बगीचा आदि का प्रमाण करना ।

इन नियमों को पालन करने से जीव पापों के बोझ से हल्का रहता है। यह बिना किसी तकलीफके पापों से बचनेका एक सरल उपाय है। इन नियमोंको प्रतिदिन स्मरण करनेसे आत्मा परम शांति पद प्राप्त करता है।

चौदह नियम चितारने वाले श्रावक-श्राविकागण प्रातः कालमें सूर्योदयके समय, और सायंकालमें सूर्यास्त के समय, शुद्ध भूमिपर बैठकर प्रथम तीन नवकार गिननेके बाद चौदह नियमों का चिन्तवन करें। इति

निंदावारक सज्झाय।

निंदा म करजो कोईनी पारकी रे, निंदामां बोल्यां महापाप रे॥ वयर विरोध बाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे॥ निं०॥ १॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे। परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे॥ निं०॥ २॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे॥ थोडे घणे अवगुण सहु भर्या रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे॥ निं०॥ ३॥ निंदा करे तो थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकवारो थाय रे॥ निं०॥ ४॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक

विचार रे ॥ कृष्णपरे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्रीसीताकी सज्झाय।

झलजलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैर अंगार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीता सती रे लाल ॥ शीतपणे परिमाण रे ॥ सु०॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जले रे लाल, पावक पासे आय रे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुरांगना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुई इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछयो हुवे रे लाल, सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कही पेठी आग में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणे द्रह जलशुं भर्यो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम-वरसा करे रे लाल, एह सती शिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजे उतरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियात सहुको थयां रे लाल, सबले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शील सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जस

जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिनहर्ष सतीतणा रे लाल, नित प्रणमीजे पाय रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

अनाथी ऋषीकी सज्झाय ॥

श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखियो मुनी एकंत ॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥१॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिण में लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥श्रे०॥ ए आंकडी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुझ पिता परिगल धन्न ॥ परिवार पूरें परवर्यो हुं, छुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥२॥ एक दिवस मुझ वेदना, उपनी तै न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन ओरडी, छोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, नहिं कीधीरे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाईया, कीधा कोडी उपाय ॥ बावना चंदन चरचीया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥श्रे०॥५॥ वेदना जो मुझ उपशमे, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदना गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते भणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागनो धरम सारिखो, कोई नहीं रे सुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक [illegible] तिहां [illegible] वांदी पहुंचे रे [illegible] ॥श्रे० ॥ [illegible] अनाथी [illegible]

गावतां, कर्मनी त्रूटे कोडी ॥ गणि समयसुन्दर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोडी ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ इति ॥

श्रीजंबूद्वीप वा पूनम की सज्झाय ॥

जंबूद्वीप सोहामणो रे लाल ॥ लाख जोजन परिमाण रे, सुगुण नर ॥ पूनम शशी सम जाणिये रे लाल, आकार एह पहिचान रे ॥सु०॥॥१॥ वारि जाउं वाणी जिनतणी रे ॥ला०॥ हुं जाउं वार हजार रे ॥ सु० ॥ वीर जिणंद दाखवी रे ॥ ला० ॥ जंबूपन्नती मझाररे ॥सु०॥२॥ नव खेत्रे करी सोभतो रे ॥ला०॥ भरतादिक मनुहार रे ॥सु०॥ कुलगिरि परवत अंतरे रे ॥ला०॥ रह्या मर्यादा धार रे ॥ सु० ॥ वा० ॥३॥ महाविदेह विच राजतो रे ॥ला०॥ मेरु सुदर्शन जाण रे ॥सु०॥ लाख जोजन ऊंचो कह्यो रे ॥ला०॥ गजदंता चार पहिचाण रे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ पद्रह गिरिवर सहुभला रे ॥ला०॥ दोयसें गुण सत्तर एह रे ॥सु०॥ निवे नदी मोटी कही रे ॥ला० ॥ बीजी परिवारनी तेह रे ॥ सु०वा०॥५ ॥ कर्मभूमिमें मुनिवरा रे ॥ला०॥ क्रोड सहस्स नव जाण रे ॥सु०॥ नव कोडी केवली नमुं रे ॥ ला० ॥ उत्कृष्टो परिमाण रे ॥सु०॥ ॥वा०६॥ धर्म ध्याननो जाणिये रे॥ला०॥चोथो भेद अभिराम रे ॥ ॥ सु० ॥ कृपालचंद्र ध्यातां थकां रे ॥ ला० ॥ पामे अविचल धाम रे ॥ सु० वारी० ॥ ७ ॥ इति जंबूद्वीपनी वा पूनमनी सज्झाय संपूर्ण ॥

श्रीसमकितकी सज्झाय ।

समकित नवि लह्यु रे, एतो रुल्यो चतुर्गति मांहे ॥ त्रसथावरकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ॥ तीन काल सामायिक करतां, सुध उपयोग न साध्यो ॥ समकित० ॥ १ ॥ झूठ बोलवाको व्रत लीनो, चोरीको पण त्यागी ॥ व्यवहारादिक मां निपुण भयो पण अंतरदृष्टि न जागी ॥ समकित० ॥ २ ॥ ऊर्ध्वभुजा करी ऊंधो लटके भसमी लगाय धूम गटके ॥ जटाजूट सिर मूंडे जुठो विणसरधा भव भटके ॥ समकित० ॥ ३ ॥ निजपरनारी त्यागज करके ब्रह्मचारी व्रत लीधो ॥ स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नवि सीधो ॥ समकित० ॥ ४ ॥ बाह्य क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्यलिंग धर लीनो ॥ देवचंद्र कहे या विध तो हमें बहुतवार कर लीनो ॥ समकित० ॥ ५ ॥ श्रीसमकितनी सज्झाय संपूर्ण ॥

प्रतिक्रमणकी सज्झाय ।

कर पडिकमणो भावशुं, दोय घडी शुभ ध्यान ॥ लाल रे ॥ परभव जातां जीवने, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पडिकमणुं भावशुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुचरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिनप्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख बरस लगतें वली, एम दिये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो, भलुं

वंदन दोय दोय वार ॥ लालरे० ॥ व्रत संभारो आपणां, ते भव भव कर्म निवार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउस्सग्ग शुभ ध्यानथी, पच्चक्खाण करुं विचार ॥ लाल रे ॥ दोय संध्यायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहियें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निधान ॥ ला० ॥ ६ ॥ ॥कर०॥ इति ॥ प्रतिक्रमण सिज्झाय संपूर्ण ॥

श्रीढंढण ऋषिजी की सज्झाय ।

ढंढण ऋषीजीने वंदणा हुं वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अभिग्रह लीधो एहवो ॥हुं०॥ लेस्युं सुद्ध आहाररे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति उठे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मिले शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ मूल न ले अणसूझतो ॥ हुं० ॥ पंजर कीधो गातरे ॥ हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमिने ॥हुं०॥ मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें ॥ हुं० ॥ मुझने कहो विचार रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखियो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेमि जिणंद रे ॥ हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन जादव कुलचंदरे हुं ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारें मुनिवर मिल्या ॥ हुं० ॥ वांदा कृष्णनरेस रे ॥ हुं० ॥ किनही मिथ्यात्वी ॥ देखने ॥ हुं० ॥ आयो भावविशेष रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोदक छे सुद्धरे ॥ हुं० ॥ मुनिवर

विहरीने पांगुर्या ॥ हुं० ॥ आया प्रभुजीने पामरे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लब्धे मोदक मिल्या ॥ हुं० ॥ कहोने तुमे कृपालरे ॥ हुं० ॥ ॥ लब्धि नहीं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्धि निहालरे ॥हुं०॥७॥ढं०॥ ए लेवा जुगतो नहीं ॥ हुं० ॥ चाल्या परठवा काजरे ॥ हुं० ॥ ईंटनी नाहें जाइनें ॥ हुं० ॥ चूरें करम समाजरे ॥हुं०॥८॥ढं०॥ आणी शुभी भावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाणरे ॥हुं०॥ ढंढणरिषि मुगतें गया ॥हुं०॥ कहे जिनहर्ष सुजाणरे ॥ हुं ॥ ९ ॥ ढं० ॥ इति ॥

अरणकमुनिकी सज्झाय ॥

अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी । तडके दाझे सीसोजी । पाय उभराणे वेलू परजले । तन सुकुमाल मुनीसो जी ॥ १ ॥अ०॥ मुख कमलाणोरे मालती फूलज्युं । उभो गोखने हेठोजी । खरे दुपहरे दीठो एकलो । मोही माननी मीठोजी ॥ २ ॥ ॥ अ० ॥ वयण रंगीलीरे नयणे विंधियो । ऋषी थंभ्यो तिण वारो जी । दासी ने कहे जाय उतावली । ऋषी तेडी घेर आणो जी ॥ ३ ॥ अ० ॥ पावन कीजें रिषि घर आंगणो । वहिरो मोदक सारो जी । नव जीवन रस काया कांइ दहो । सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनीरे चारित्र चूकव्यो । सुख विलसे दिन रातो जी । इक दिन गोखे रमतो सोगटें । तंव दीठी निज मातो जी ॥ ५ ॥ अ० ॥ अरणक अरणक करती माय फिरे । गलियें गलियें मझारो जी । कहिं

किण दीठोरे माहरो अरणलो । पूछे लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतरी तिहांथीरे जननी पाय नम्यो । मनमें लाज्यो तिवारोजी । धिग् धिग् पापी रे माहरा जीवने । एह में अकारज कीधो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धूखंती रे सीला उपरें । अरणक अणसण कीधो जी । समयसुंदर कहै धन ते मुनिवरू । मनवंछित फल लीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति ॥

श्री भरतचक्रवर्त्तिकी सज्झाय ।

भरतजी मनहीमें वैरागी । मनहीमें वैरागी । भरतजी म० ॥टेक॥ सहस बत्तीस मुगटबद्ध राजा, सेवा करै वडभागी । चोसठ सहस अंतेवउर जाके, तोही न हुवा अनुरागी, भरतजी मनहीमें वैरागी ॥ भर० ॥ १ ॥ लाख चोरासी तुरंगम जाके, छन्नुं कोड है पागी । लाख चोरासी गजरथ सोहिये, सुरता धरम सुं लागी ॥ भर० ॥ २ ॥ च्यार कोड मण अन्नज उपड़े, लुंण दश लाख मन लागे । तीन कोड गोकुल नित दूझे, एक कोडी हलसागे ॥ भर० ॥ ३ ॥ सहस बत्तीस देस वडभागी, भए सरबके त्यागी । छन्नुं कोड गांमके अधिपति, तोही न हुवा अनुरागी ॥ भर० ॥ ४ ॥ नव निधि रत्न चउगडा बाजे, मन चिंता सरब लागी । कनक कीरत मुनिवर वंदतहैं, दीजो सुमति में मांगी ॥ भर० ॥ ५ ॥ इति ॥

पद (राग मालकोश ।)

पूरब पुण्य उदय करी चेतन, नीका नरभव पायारे ॥ पू० ॥

आंकणी ॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि, दुर्लभ अधिक बतायारे ॥ दश दृष्टांतें दोहिला नरभव, उत्तराध्ययने गायारे ॥ पू० ॥ १ ॥ अवसर पाय विषय रस राचत, तेतो मूढ कहायारे ॥ काग उडावण काज विप्र जिम, डार मणि पछतायारे ॥ पू० ॥ २ ॥ नदी घोल पाखान न्याय कर, अर्द्धवाट तो आयारे ॥ अर्द्ध सुगम आगल रही तिनकूं, जिन कछु मोह घटायारे ॥ पू० ॥ ३ ॥ चेतन चार गतिमें निश्चें, मोक्षद्वार ए कायारे ॥ करत कामना सुर पण याकी, जिनकूं अनर्गल मायारे ॥ पू० ॥ ४ ॥ रोहण गिरि जिम रतनखाण तिम, गुण सहु यामें समायारे ॥ महिमा मुखथी वरणत जाकी, सुरपति मन शंकायारे ॥ पू० ॥ ५ ॥ कल्पवृक्ष सम संयम केरी, अति शीतल जिहां छायारे ॥ चरण करण गुण धरण महा मुनि, मधुकर मन लोभायारे ॥ पू० ॥ ६ ॥ या तन विण तिहुं काल कहो किन, साचा सुख निपजायारे ॥ अवसर पायन मत चूक चिदानंद, सद्गुरु यूं दरसायारे ॥ पू०॥ ॥ ७ ॥ इति ॥

आप स्वभावकी सज्झाय ।

आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहना ॥ जगतजीव है कर्माधीना, अचरिज कछुअन लीना ॥आ०॥ १ ॥ तुम नही केरा, कोई नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ? ॥ तेरा है सो तेरी पासे, अवर सर्व अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी, तुं अविनाशी, अब है इनकुं विलासी ॥ वपुसंग जब दूर निकासी,

तब तुम शिव का वासी ॥ आ० ३ ॥ राग ने रीसा दो खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूरि करीसा, तब तुम जग का ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आशा सदा निराशा, ए है जगजनपासा ॥ ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहीक काजी, कबहीक पाजी, कबहीक हुवा अपभ्राजी ॥ कबहीक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुद्गल की बाजी ॥ आ० ॥ ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्मकलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

चिंतामणिपार्श्व-छंद ।

आंणी मनशुद्ध आसता, देव जुहारु सास्वता ।
पार्श्वनाथ मनवांछित पूर, 'चिंतामन' म्हारी चिंता चूर ॥१॥
अणयाली तोरी आँखडी, जाणे कमलतणी पाँखडी ।
मुख दीठाँ दुःख जावे दूर— 'चिंतामण' ॥२॥
को केहने को केहने नमे, म्हारा मनमाँ तूही ज गमे ।
सदा जुहारू उगते सूर— 'चिंतामण' ॥३॥
विछड़ीया वाल्हेसर मेल, वैरी दुसमण पाछा ठेल ।
तुं छे म्हारे हाजराहजूर— 'चिंतामण' ॥४॥
एह स्तोत्र जे मनसे धरे, तेहना काज सदाइ सरे
आधि-व्याधि दुःख जावे दूर—'चिंतामण' ॥५॥
मुझ मन लागी तुमसुं प्रीत, दूजो कोय न आवे चित्त ।

कर सुभ तेज प्रताप प्रवूर— 'चिंतामण' ॥६॥
भवभव देज्ये तुम पद सेव, श्री चिंतामण अरिहंत देव ।
समयसुन्दर कहै गुण भरपूर—'चिंतामण' ॥७॥

नाकोडाजी छंद ।

अपने घर बैठा लील करो, निजपुत्र कलत्रसुं प्रेम धरो ।
तुमें देश-दिशांतर काई दोडों, नित नाम जपो श्रीनाकोड़ो ॥१॥
मनवांछित सगलो आस फलें, सिर ऊपर चामर छत्र धरें ।
आगल चालें झिलमिल घोडो—'नित नाम' ॥२॥
भूत-पिरेत-पिचास भली, डाकिण नें साकण जाय टली ।
छल छिद्र न लागे कोई झोडो—'नित नाम' ॥३॥
कंठमाला गल गूंबड सगला, वन उंवर रोग टलें सबला ।
पीडा करें न फुणगल फोडो—'नित नाम' ॥४॥
एकंतर तापसीयो दाहु, औषध विण जाय थई साउ ।
दूःखे नहीं माथो पग गोडों—'नित नाम' ॥५॥
न पडे दुरभिख दुकाल कदा, सुभ वृष्टि सुभीख्य सुकाल सदा ।
ततखिण तुम असुभ करम तोडो–'नित नाम' ॥६॥
तुं जागंतो तीरथ पास पहु, जिहा यात्रा आवे जगत सहु ।
सुजनें भव दुखथकी छोडों— 'नित नाम' ॥७॥
श्री पासप्रभु महेवा नगरे, में भेट्या जिनवर हरख धरे ।
इम समयसुन्दर कहे गुण जोडो—'नित नाम' ॥८॥

अथ प्रभुको पोंखणेका स्तवन

(तर्ज–कव्वाली)

प्रभु को पोंखती भावे, सुहागन नारी हरषावे ।
मनोगत भावना सुन्दर अध्यातम भाव दिखलावे ॥ प्रभु०॥टेक॥
समय श्री आदि जिन स्वामी, लग्न के देवी इन्द्राणी ।
विधि से पोंखती प्रभु को, चला व्यवहार वो आवे ॥ प्रभु०॥१॥
उखल मूसल मथानी त्राक, भुन्सरी पंचमी कहिये ।
शलाका फेंकती चारों, दिशा में भावना भावे ॥ प्रभु० ॥२॥
उखल मुसल के मिलने से, व्रीही से होत है चाँवल ।
गया छिलका मिटा अंकुर, न फिर पैदा कभी थावे ॥प्रभु०॥३॥
अनादी जीव कर्मों के, फँसा है गाढ़ बन्धन में ।
क्रिया अरु ज्ञान मिलने से, निजातम रूप को पावे ॥ प्र० ॥४॥
मथानी घूमती दधि में, प्रगट करती है माखन को ।
भावना शील तप दाने, चिदानन्द रूप उपजावे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥
त्राक से सुत होता है, सुत से अंग है ढकता ।
शुद्ध मन इन्द्रि वस करके, चीरगुण ज्ञान निपजावे ॥ प्रभु० ॥६॥
भुन्सरी धार धोरी हो, जगत खेती बचा लेता ।
धरम धोरी बनी आतम, स्वपर आनन्द प्रकटावे ॥ प्रभु० ॥७॥
शलाका समगति चारों में, फिरता दुःख पाता है ।
फेंकती क्रोध माया मान, लोभ को फिर न जग आवे ॥प्र०॥८॥
आतमाराम जब प्रगटे, आतमाराम है होता ।

आतम लक्ष्मी प्रभु चेतन "वल्लभ" मन हर्ष सहीं मावे ॥प्र०६॥

॥ इति ॥

आदीश्वर भगवान की आरती

अपछरा करती आरती जिन आगे, हाँ रे जिन आगे रे जि०,
हाँ रे एतो अविचल सुखड़ां मांगे, हाँ रे नाभिनंदन पाम ।अ०१।
ता थेइ नाटक नाचती पाय ठनके, हाँ रे दोय चरणे झांझर झनके,
हाँ रे सोमन घुघरी घमके, हाँ रे लेती फुदड़ी वाल ॥ अ०॥२॥
ताल मृदंग ने वाँसली डफ वीणा, हाँ रे रुडा गावँती स्वर झीणा,
हाँ रे मधुर सुरासुर नयणा, हाँ रे ज्योति मुखड़ुँ निहाल ॥अ०३॥
धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया, हाँ रे तोरी कंचन वरणी काया,
हाँ रे में तो पूरव पून्ये पाया, हाँ रे देख्यो तोरो दीदार ॥अ० ४॥
प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हाँ रे प्रभु सेवक छुँ हुँ तारो,
हाँ रे भवोभवना दुःखडा वारो, हाँ रे तुम दीनदयाल ॥अ०॥५॥
सेवक जाणी आपनो चित्त धरजो, हाँ रे मोरी आपदा सघली
हरजो, हाँ रे "मुनिमाणेक" सुखियो करजो, हाँ रे जानी पोतानो
बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥

श्री मंगल चार ।

कीजे मंगल चार, आज घर नाथ पधार्या ।
पहले मंगल प्रभुजी ने पूजुँ, घसी केसर घनसार ॥ आज० ॥
बीजे मंगल अगर उखेवुँ, कंठ धवुँ फूलहार ॥ आज० ॥
त्रीजे मंगल आरती उतारूँ, घंट बजावुँ रणकार ॥ आज० ॥

चोथे मंगल प्रभु गुण गाऊं, नाचुं थइ थइकार ॥ आज० ॥
"रूपचंद" कहे नाथ निरंजन, चरणकमल बलिहार ॥ आज० ॥

॥ इति ॥

कुम्भस्थापन स्तवन ।

आज आपे चालो सजनि, श्री जिन–मन्दिर जइये ।
श्री जिन-मंदिर जइये, वेहनी ठावणा कलशनी करीये रे ॥आज० टेर॥
निर्लंछन घट राते वर्णे, पक्व सुघाटे लीजे ।
तेहना ऊपर आठे मंगल, फरतां चित्र लिखीजे रे ॥आज०॥१॥
तेहना कंठे डाभ समूलो, ऋद्धि वृद्धि संघाते ।
गेवा सूत्रे ताणी बांधे, विधि कारक विधि साथेरे ॥आज०॥२॥
मंत्र सहित स्वास्तिक कुंकुमनो, तेहनी मध्ये कीजे ।
पंच रतन ने पुंगी रूपक, सम चतुरंस ठविजे रे ॥आज०॥ ३ ॥
अठोत्तरशत कूपक जल सूं, महोच्छवनूं जल भेलो ।
"वर्धमान सुरीसर" भाखे, तीर्थ जल बहु मेलो रे ॥आज०॥४॥
ते जल लेई सोहव सुतवंती, नवपद मंत्र संभारे ।
थिर सासें कुंभक करी जलने, पुरे अक्षय धारे रे ॥आज०॥५॥
पीताम्बर बहु मूलूँ ढाकी, फुल माला पहरावो ।
तेनी ऊपर श्रीफल थापो, मंगल गीत गवावो रे ॥आज०॥६॥
सुन्दर सालनो साथियो पूरी, थापो घट शुभ दिवसे ।
चार सरावला जुवारा केरां, थापो चहुँ विदिसे रे ॥आज०॥७॥
जिन पडीमाने जमणी पासे, दीपक युत घट धारो ।

कुम्म चक नक्षत्र मलेजो, तो सवि अशुभ निवारो रे ॥आज०॥८॥
स्नात्र अठोत्तरी बिंब प्रवेशे, बिंब प्रतिष्ठा होवे ।
ए करणीमां मंगलरूपी, कुम्म-स्थापन धुरी जोवेरे ॥आज०॥६॥
दीप अखंड ने धूप त्रिकाले, साते स्मरण गणीये ।
हिंसक जिवने स्त्री ऋतुवंती, तास दृष्टी अवगणीये रे ॥आज०॥१०॥
मल्ली वीर नेमिसर राजुल, तास तवन नवी भणीये ।
उपसर्गादिक भावना टाली, मंगल गीतने थुणिये रे ॥आज०॥११॥
नर नारी ने उल्लसित भावे, तांबूलादिक दीजे ।
ते दीनथी मांटीने दस दिन, लघु स्नात्र नित कीजे रे ॥आज०१२॥
खुशालशाहे हरखे कीधी, पहले दिन यह करणी ।
करीये विधि योगे जिम वरीये, रंग जिम शिवधरणी रे ॥आज०१३॥

॥ इति ॥

॥ अथ मंगल बधावा ॥

हिवे प्रतिष्ठा कारखे ए, पूरव सनमुख भारतो ।
(वेदीका शुभ रचिए पूरव सनमुख भारतो)
दोढ हाथ उन्नत वलीए, पूरित वस्तु उदारतो ॥ वे० ॥ १ ॥
पंच स्वस्तिक श्रीफल ठवे ए, पंच रतन मूर्धीठनो ॥ वे० ॥
अष्ट सुगंध विलेपीयेए, करीये धूप उकिठनो ॥ वे० ॥ २ ॥
बारे आंगुल मां ग्रंथ नहींए, उन्नत सरल उतंगतो ॥ वे० ॥
चउदिदिसि, चउवंसनेए, थापे मन उच्छरंगतो ॥ वे० ॥ ३ ॥

वंसपात्रसां जुवारकाए, चउवंसे सात साततो ॥ वे० ॥
समोसरण ने प्रथम समेए, पीठ रचे सुर सजतो ॥ वे० ॥ ४ ॥
तिम इहां सुभ मुहूरत दिने ए, भूमि सुद्ध महा काजतो ॥ वे० ॥
हिवे जललेवा कारणें ए, थयो उजवाल पून्यवंततो ॥ वे० ॥ ५ ॥

(जल-यात्रा भणीये थयोए, उज्जवाल पून्यवंततो)

हयवर सिणगार्या घणाए, मयगल मद मल पंततो ॥ ज० ॥६॥
देवानंदा जिमवीरनेए, वृषभ रथ कर्या सज्जतो ॥ ज० ॥
पंचम अंगे वर्णव्याए, तिम इहां रथगण गज्जतो ॥ ज० ॥ ७ ॥
भेरी भुंगल सणाइयोंए, ढोल निसान वाजित्रतो ॥ ज० ॥
संघ चतुरविधि बहु मिल्याए, ध्वज लहकंत पवित्रतो ॥ ज० ॥८॥
सुहवगीत मंगल भणेंए, नरनारीना थोकतो ॥ ज० ॥
प्रसन्न करी जलदेवताए, मंत्र स्नात्र श्लोकतो ॥ ज० ॥ ९ ॥
सोल सिणगारे शोभतीए, रूपवंती चउनारितो ॥ ज० ॥
सजल कलश सिरपर ठविए, आवें जिन दरबारतो ॥ ज० ॥ १० ॥
प्रभुने जीमणी दिश ठवीए, देई प्रदक्षिणा मानतो ॥ ज० ॥
संघ सत्कार आडंबरेए, रतनसाह प्रमाणतो ॥ ज० ॥ ११ ॥

॥ यदंघ्रिस्तुति ॥

यदंघ्रिनमनादेव । देहिनः संति सुस्थिताः ।
तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥
सुरपतिनतचरणयुगान् । नाभेयजिनादिजिनपतीन् नौमि ।

यद्वचनपालनपरा । जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥
यदंगि पूंदाऽऽगणाऽग्रतो जिनाः, सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः ।
गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तु मतं नु मुक्तये ॥३ ॥
शक्रः सुरासुरवरैस्सह देवताभिः ।
सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभिः ॥
श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् ।
भव्यान् जनानवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥

॥ इति ॥
॥ सविधि प्रतिक्रमणसूत्र समाप्त ॥

परिशिष्ट

[परसमयतिमिरतरणि]

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम् ।
रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥

भावार्थः—मिथ्या मत अथवा बहिरात्मभाव-रूप अन्धकार को दूर करने के लिये सूर्य-समान, संसाररूप समुद्र के जल से पार करने के लिये नौका-समान और रागरूप पराग को उड़ा कर फेंक देने के लिये वायु-समान; ऐसे श्रीमहावीर भगवान् को मैं नमन करता हूँ ॥ १ ॥

निरुद्धसंसारविहारकारि,-दुरन्तभावारिगणा निकामम् ।
निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥

भावार्थः—संसार-भ्रमण के कारण और बुरे परिणाम को करने वाले ऐसे कषाय आदि भीतरी शत्रुओं को जिन्होंने बिल्कुल नष्ट किया है, वे केवलज्ञानी महापुरुष, तुम्हारे संसार के कारण-भूत मोह-बल को निरन्तर दूर करें ॥ २ ॥

संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ,-संमोहपङ्कहरणामलवारिपूरम् ।
संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३ ॥

भावार्थः—सन्देह पैदा करने वाले एकान्तवाद के शास्त्रों के परिचय से उत्पन्न ऐसा जो भ्रमरूप जटिल कीचड़ उस को दूर करने के लिये निर्मल जल-प्रवाह के सदृश और संसार-समुद्र से पार होने के लिये प्रचण्ड नौका के समान, ऐसे परमसिद्धिदायक महावीर-सिद्धान्त अर्थात् अनेकान्तवाद को मैं नमन करता हूँ॥ ३॥

परिमलभरलोभालीढलोलालिमाला,–
वरकमलनिवासे हारनीहारहासे।
अविरलभवकारागारविच्छित्तिकारं,
कुरु कमलकरे मे मङ्गलं देवि सारम् ॥ ४ ॥

भावार्थः—उत्कट सुगन्ध के लोभ से खींच कर आये हुए जो चपल भौंरे, उन से युक्त ऐसे सुन्दर कमल पर निवास करने-वाली, हार तथा बरफ के सदृश श्वेत, हास्य-युक्त और हाथ में कमल को धारण करने वाली हे देवि! तू अनादिकाल के संसाररूप कैदखाने को तोड़ने वाले सारभूत मंगल को कर॥ ४॥

[सामायिक तथा पौषध पारने की गाथा]

सयवं दसन्नभद्दो, सुदंसणो थूलभद्द वयरो य।
सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥

भावार्थः—श्रीदशार्णभद्र, सुदर्शन, स्थूलभद्र और वज्र-स्वामी, ये चार, ज्ञानवान् महात्मा हुए और इन्हों ने गृहस्थाश्रम के त्याग को चारित्र पालन करके सफल किया। संसार-त्याग को

सफल करने वाले सभी साधु इन्हीं के जैसे होते हैं ॥ १ ॥

साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा।
फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥

भावार्थः—साधुओं को प्रणाम करने से पाप नष्ट होता है, परिणाम शङ्काहीन अर्थात् निश्चित हो जाते हैं तथा अचित्तदान द्वारा कर्म की निर्जरा होने का और ज्ञान आदि आचारसंबन्धी अभिग्रह लेने का अवसर मिलता है ॥ २ ॥

छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो।
जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥

भावार्थः—छद्मस्थ व मूढ जीव कुछ ही बातों को याद कर सकता है, सब को नहीं, इस लिये जो जो पाप कर्म मुझे याद नहीं आता, उस का मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३ ॥

जं जं मणेण चिंतिय,-मसुहं वायाइ भासियं किंचि।
असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥

भावार्थः—मैंने जो जो मन से अशुभ चिन्तन किया, वाणी से अशुभ भाषण किया और काया से अशुभ कार्य किया, वह सब निष्फल हो ॥ ४ ॥

सामाइयपोसहसं,-ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो।
सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥

भावार्थः—सामायिक और पौषध में स्थित जीव का जितना समय व्यतीत होता है, वह सफल है और बाकी का सब समय संसार-वृद्धि का कारण है ॥ ५ ॥

(जय महायस।)

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतियसुफलय,
जय समत्थपरमत्थजाणय जय जय गुरुगारिम गुरु।
जय दुहत्तसत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण,
भवियह भीमभवत्थु भय अवणियाणंतगुण।
तुज्झ तिसंझ नमोत्थु ॥ १ ॥

अर्थ—हे महायशस्विन्! हे महाभाग! हे इष्ट शुभ फल के दायक! हे संपूर्ण तत्त्वों के जानकार! हे प्रधान गौरवशाली गुरो! हे दुःखित-प्राणियों के रक्षक! तेरी जय हो, तेरी जय हो और बार-बार जय हो। हे भव्यों के भयानक संसार को नाश करने के लिये अस्त्र समान! हे अनन्तानन्त गुणों के धारक! भगवन् स्तम्भन पार्श्वनाथ! तुमको तीनों संध्याओं के समय नमस्कार हो ॥ १ ॥

श्रुतदेवता की स्तुति।

सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा।
श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेष-श्रुतसंपदम् ॥ १ ॥

अर्थ—जिनेन्द्र की कही हुई यह श्रुतदेवता, जो सुन्दर सुन्दर

वर्ण वाली है तथा बारह अङ्गों में विभक्त है, मुझे हमेशा सकल शास्त्रों की सम्पत्ति–रहस्य देती रहे ॥ १ ॥

क्षेत्रदेवता की स्तुति ।

यासां क्षेत्रगतास्सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।
जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥

अर्थ—जिनके क्षेत्र में रह कर साधु तथा श्रावक आदि जिन भगवान् की आज्ञा को पालते हैं, वे क्षेत्रदेवता हमारी रक्षा करें ॥ १ ॥

भुवनदेवता की स्तुति ।

चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ।
निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

अर्थ—भुवनवासिनी देवी, पापों का नाश करके चारों सङ्घों के लिये अक्षय सुख दे ॥ २ ॥

सिरिथंभणयट्ठिय पाससामिणो ।

सिरिथंभणयट्ठियपास,-सामिणो सेसतित्थसामीणं ।
तित्थसमुन्नइकारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥
एसमहं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ।
भत्तीए गुणसुट्ठिय,-स्स संघस्स समुन्नइनिमित्तं ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीस्तम्भन तीर्थ में स्थित पार्श्वनाथ, शेषतीर्थों के स्वामी और तीर्थों की उन्नति के कारणभूत सब सुर-असुर, ॥ १ ॥ इन सबके स्मरण-निमित्त तथा गुणवान् श्रीसङ्घ की उन्नति के निमित्त मैं शक्ति के अनुसार भक्तिपूर्वक कायोत्सर्ग करता हूँ ॥ २ ॥

श्रीथंभण पार्श्वनाथ का चैत्य-वन्दन।

श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ,
श्रीपूज्याऽभयदेवसूरिविबुधाधीशैस्समारोपितः।
संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणापल्लवः,
पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥१॥

अर्थ—श्रीसेढी नामक नदी के तीर पर खंभात नामक सुन्दर शहर है, समृद्धिशाली होने के कारण सुमेरु के समान है। उस जगह श्रीअभयदेव सूरिने कल्पवृक्ष के समान पार्श्वनाथ प्रभु को स्थापित किया और जल-सदृश स्तुतियों के द्वारा उस का सेचन अर्थात् उस को अभिषिक्त किया। भगवान् पर जो नागफण का चिन्ह है, वह पल्लव के समान है। मोक्ष-फल को देने वाला वह पार्श्व-कल्पतरु मेरे इष्ट को नित्य पूर्ण करें।

आधिव्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः।
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नतनाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

अर्थ—आधि तथा व्याधि को हरने वाला, जीरावल्ली नामक तीर्थ का नायक और अनेक महान् पुरुषों से पूजित, ऐसा जो

जगत् का नाथ पार्श्वनाथ स्वामी है, वह सब मनुष्यों की संपत्ति का कारण हो ॥ २ ॥

जय तिहुअण स्तोत्र।

जय तिहुअणवरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि,
जय तिहुअणकल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि।
तिहुअणजणअविलंघिआण भुवणत्तयसामिअ,
कुणसु सुहाइ जिणेस पास थंभणयपुरट्ठिअ ॥ १ ॥

अन्वयार्थ—'तिहुअणवरकप्परुक्ख' तीनों लोकों के लिये उत्कृष्ट कल्पवृक्ष के समान 'जिणधन्नंतरि' जिनों में धन्वन्तरि के सदृश 'तिहुअणकल्लाणकोस' तीन लोक के कल्याणों के खजाने दुरिअक्करिकेसरि' पापरूप हाथियों के लिये सिंह के समान तिहुअणजणअविलंघिआण' तीनों लोकों के प्राणी जिस की आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं कर सकते ऐसे 'भुवणत्तयसामिअ' तीनों लोकों के नाथ 'थंभणयपुरट्ठिअ' स्तम्भनपुर में विराजमान 'पास जिणेस' हे पार्श्व जिनेश्वर! 'जय जय जय' तेरी जय हो और वार-वार जय हो, (मेरे लिये) 'सुहाइ कुणसु' सुख करो ॥ १ ॥

भावार्थ—स्तम्भनपुर में विराजमान हे पार्श्व जिनेश्वर! तुम्हारी जय हो और वार-वार जय हो। तुम तीनों लोकों में उत्कृष्ट कल्पवृक्ष के समान हो; जैसे वैद्यों में धन्वन्तरि बड़े भारी वैद्य हैं, उसी तरह तुम भी जिनों—सामान्य केवलियों-में उत्कृष्ट जिन हो; तीनों जगत् को कल्याण-दान के लिये तुम एक खजाने हो;

पापरूप हाथियों का नाश करने के लिये तुम शेर हो, तीनों जगत् में कोई तुम्हारे हुक्म को टाल नहीं सकता और तीनों जगत् के तुम मालिक हो। अतः मेरे लिये सुख करो॥ १॥

तइ समरंत लहंति भत्ति वरपुत्तकलत्तइ,
धण्णसुवण्णहिरण्णपुण्ण जण भुंजइ रज्जइ।
पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास पसाइण,
इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण॥ २॥

अन्वयार्थ—'जण' प्राणी 'तइ' तुम्हारा 'समरंत' स्मरण करते ही 'भत्ति' शीघ्र 'वरपुत्तकलत्तइ' सुन्दर-सुन्दर पुत्र, औरत आदि 'लहंति' पाते हैं, 'धण्णसुवण्णहिरण्णपुण्ण' धान्य, सोना, आभूषणों से भरा हुआ 'रज्जइ' राज्य 'भुंजइ' भोगते हैं, 'पास' हे पार्श्व! 'तुह पसाइण' तुम्हारे प्रसाद से 'असंक्खसुक्ख मुक्ख' अगणित सुख वाली मुक्ति को 'पिक्खइ' देखते हैं, 'इअ' इस लिये 'जिण' हे जिन! (तुम) 'तिहुअणवरकप्परुक्ख' तीनों लोकों के लिये उत्कृष्ट कल्पवृक्ष के समान हो (अतः) 'मह सुक्खइ कुण' मेरे लिये सुख करो॥ २॥

भावार्थ—हे जिन! मनुष्य तुम्हारा स्मरण करने से शीघ्र ही उत्तम-उत्तम पुत्र, औरत वगैरह को प्राप्त करता है और धान्य, सोना, आभूषण आदि संपत्तियों से परिपूर्ण राज्य का भोग करता है। हे पार्श्व! तुम्हारे प्रसाद से मनुष्य अगणित सौख्य वाली मोक्ष का अनुभव करता है। इस लिये आप

'त्रिभुवनवरकल्पवृक्ष' कहलाते हो। अतः मेरे लिये सुख करो॥ २॥

जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण,
चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण।
तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जय धन्नंतरि पास मह वि तुह रोगहरो भव॥ ३॥

अन्वयार्थ—'जिण' हे जिन! 'तुह' तुम्हारे 'सरणरसायणेण, स्मरणरूप रसायन से 'नर' (जो) मनुष्य 'जरजज्जर' ज्वर से जीर्ण हो चुके हों, 'सुकुट्ठिण' गलित कोढ़ से 'परिजुण्णकण्ण' जिन के कान बह निकले हों, 'नट्ठुट्ठ' जिन के होंठ गल गये हों, 'चक्खुक्खीण' जिन की आँखें निस्तेज पड़ गई हों, 'खएण खुण्ण' क्षय रोग से जो कृश हो गये हों (और) 'सूलिण सल्लिय' जो शूल रोग से पीडित हों (वे भी) 'लहु पुणण्णव' शीघ्र ही फिर जवान 'हुंति' हो जाते हैं 'जयधन्नंतरि पास' हे संसार भर के धन्वन्तरि पार्श्व! 'तुह' तुम 'मह वि' मेरे लिये भी 'रोगहरो भव' रोग-नाशक होओ॥ ३॥

भावार्थ—हे जिन! तुम्हारे स्मरणरूप रसायन से वे लोग भी शीघ्र युवा सरीखे हो जाते हैं, जो ज्वर से जर्जरित हो गये हों; गलित कोढ़ से जिन के कान बह निकले हों; ओठ गल गये हों; आँखों से कम दीखने लग गया हो; जो क्षय रोग से कृश हो गये हों तथा शूल रोग से पीडित हों। इस लिये हे पार्श्व प्रभो! तुम 'जगद्धन्वन्तरि' कहलाते हो। अब तुम मेरे भी रोग का नाश करो॥ ३॥

विज्जाजोइसमंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण,
भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण।

तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥

अन्वयार्थ—'तुह नामिण' तुम्हारे नाम से 'अपयत्तिण' बिना प्रयत्न के 'विज्जाजोइसमंततंतसिद्धिउ' विद्या, ज्योतिष, मंत्र और अस्त्रों की सिद्धि होती है 'भुवणब्भुउ' जगत् को आश्चर्य उपजाने वाली 'अट्ठविह सिद्धि' आठ प्रकार की सिद्धियाँ 'सिज्झहि' सिद्ध होती हैं 'तुह नामिण' तुम्हारे नाम से 'अपवित्तओ वि जण' अपवित्र भी मनुष्य 'पवित्तउ होइ' पवित्र हो जाता है। 'तं' इस लिये 'पास' हे पार्श्व ! 'तुह' तुम 'तिहुअणकल्लाणकोस' त्रिभुवनकल्याणकोष 'निरुत्तउ' कहे गये हो ॥ ४ ॥

भावार्थ—हे पार्श्व प्रभो ! तुम 'त्रिभुवनकल्याणकोश' इस लिये कहे जाते हो कि तुम्हारे नाम का स्मरण-ध्यान करने से बिना प्रयत्न किये ही विद्या, ज्योतिष, मन्त्र, तन्त्र आदि सिद्ध होते हैं; आठ प्रकार की सिद्धियाँ भी, जो कि लोक में चमत्कार दिखाने वाली हैं, सिद्ध होती हैं, और अपवित्र मनुष्य भी पवित्र हो जाते हैं ॥ ४ ॥

खुद्दपउत्तइ मंततंतजंताइ विसुत्तइ,
चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग विगंजइ ।
दुत्थियसत्थ अणत्थघत्थ नित्थारइ दय करि,
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियकरिकेसरि ॥ ५ ॥

अन्वयार्थ—(जो) 'खुद्दपउत्तइ' क्षुद्र पुरुषों द्वारा किये गये

'मंततंतजंताइ' मन्त्र, तन्त्र, यन्त्रों को 'विसुत्तइ' निष्फल कर देता है, 'चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग' जङ्गम-विष, स्थिर-विष, ग्रह, भयंकर तलवार और शत्रु-समुदाय का 'विगंजइ' पराभव कर देता है (और) 'अणत्थघत्थ' अनर्थों से घिरे हुए 'दुत्थियसत्थ' बेहाल प्राणियों को 'दय करि' कृपा कर 'नित्थारइ' बचा देता है 'स' वह 'दुरिय-करिकेसरि पासदेउ' पापरूप हाथियों के लिये शेर समान पार्श्वदेव 'दुरियइ हरउ' (मेरे) पाप दूर करें ॥ ५ ॥

भावार्थ—हे प्रभो ! तुम 'दुरित-करि-केसरी' इस लिये कह-लाते हो कि तुम क्षुद्र आदमियों द्वारा किये गये यंत्र-तंत्र आदि को निष्फल कर देते हो; सर्प-सोमल आदि के विष को उतार देते हो; ग्रह-दोषों को निवारण कर देते हो भयंकर तलवारों के वारों को रोक देते हो, वैरियों के दलों को छिन्न-भिन्न कर देते हो और जो अनर्थों में फँसे हुए अत एव दुःखित प्राणियों के दुःख मिटा देते हो। हे पार्श्व! दया कर मेरे पापों का भी नाश करो ॥ ५ ॥

तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धुरसुरवर,–
रक्खसजक्खफणिंदविंदचोरानलजलहर ।
जलथलचारि रउद्दखुद्दपसुजोइणिजोइय,
इय तिहुअणविअविलंघिआण जय पास सुसामिय ॥ ६ ॥

अन्वयार्थ—'सुसामि' हे सुनाथ ! 'तुह आण' तुम्हारी आज्ञा—'भीमदप्पुद्धुरसुरवररक्खसजक्खफणिंदविंदचोरानलजलहर' बड़े भारी अहंकार से उद्दण्ड भूत-प्रेत आदि, राक्षस, यक्ष, सर्प

राजों के समूह, चोर, अग्नि और मेघ को 'जलथलचारि' जलचर और स्थलचर को 'रउद्दखुद्दपसुजोइणजोइय' (तथा) अतिभयंकर हिंसक पशु, योगिनी और योगी को 'थभेइ' रोक देती है, इस लिये 'तिहुअणअविलंघिआण पास, हे तीनों लोकों में जिस का हुक्म न रुके, ऐसे पार्श्व ! 'जय' (तुम्हारी) जय हो ॥ ६ ॥

भावार्थ—हे पार्श्व सुनाथ ! तुम्हारी आज्ञा बड़े बड़े घमण्डी और उद्दण्ड भूत-प्रेत आदि के, राक्षस, यक्ष और सर्पराजों के, समूह के, चोर, अग्नि और मेघों के, जलचर—नाके, घड़ियाल आदि के, थलचर—व्याघ्र आदि के, भयंकर और हिंसक पशुओं के, योगिनियों और योगियों के आक्रमणों को रोक देती है। इसी लिये तुम 'त्रिभुवनाविलङ्घिताज्ञ' हो ॥ ६ ॥

पत्थियअत्थ अणत्थतत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमंचंचिय चारुकाय किन्नरनरसुरवर।
जसु सेवहि कमकमलजुयल पक्खालियकलिमलु,
सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥

अन्वयार्थ—'अणत्थतत्थ' अनर्थों से पीड़ित (अत एव) 'पत्थियअत्थ' प्रार्थी 'भत्तिब्भरनिब्भर' भक्ति के बोझ से नम्रीभूत (अत एव) 'रोमंचंचिय' रोमाञ्च-विशिष्ट (अत एव) 'चारुकाय' सुन्दर शरीरवाले 'किन्नरनरसुरवर' किन्नर, और देवताओं में उच्च देवता, 'जसु' जिस के 'पक्खालियकलिमलु' कलिकाल के पापों को नाश करने वाले 'कमकमलजुयल' दोनों चरणकमलों की 'सेवहि' सेवा करते हैं, 'सो' वह 'भुवणत्तयसामि पास' तीनों लोकों के

स्वामी पार्श्व 'मह रिउबलु' हमारे वैरियों की सामर्थ्य को 'मद्दउ' चूर-चूर करें ॥ ७ ॥

भावार्थ—हे पार्श्व प्रभो ! अनेक अनर्थों से घबड़ा कर भक्ति-वश रोमाञ्चित हो कर सुन्दर-सुन्दर शरीरों को धारण करने वाले उच्च-उच्च किन्नर, मनुष्य और देवता अर्थात् तीनों लोक तुम्हारे चरण-कमलों की सेवा करते हैं, जिस से कि उन के क्लेश और पाप दूर हो जाते हैं, इसी लिये तुम 'भुवनत्रयस्वामी' कहलाते हो, सो मेरे भी शत्रुओं का बल नष्ट करो ॥ ७ ॥

जय जोइयमणकमलभसल भयपंजरकुंजर,
तिहुअणजणआणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ।
जय मइमेइणिवारिवाह जयजंतुपियामह,
थंभणयट्ठिय पासनाह नाहत्तण कुण मह ॥ ८ ॥

अन्वयार्थ—'जोइयमणकमलभसल' हे योगियों के मनोरूप कमलों के लिये भौंरे' 'भयपंजरकुंजर', हे भवरूप पिंजर के लिये हाथी, 'तिहुअणजणआणंदचंद' हे तीनों लोक के प्राणियों को आनन्द देने के लिये चन्द्र (और) 'भुवणत्तयदिणयर' हे तीन जगत् के सूर्य 'जय' [तुम्हारी] जय हो; 'मइमेइणिवारिवाह' हे मतिरूप पृथ्वी के लिये मेघ 'जयजंतुपियामह' हे जगत के प्राणियों के पितामह ! 'जय' [तुम्हारी] जय हो; 'थंभणट्ठिय पासनाह' हे स्तम्भनकपुर में विराजमान पार्श्वनाथ ! 'मह नाहत्तण कुण' मुझे सनाथ करो ॥ ८ ॥

भावार्थ—हे खंभात में विराजमान पार्श्वनाथ ! तुम कमल पर

भौंरे की तरह योगियों के मन में बसे हुये हो; हाथीकी तरह भयरूप पिंजरे को तोड़ने वाले हो; चन्द्रमा की तरह तीनों लोकों को आनन्द उपजाने वाले हो; सूर्य की तरह तीनों जगत् का अज्ञान-अंधकार नष्ट करने वाले हो; मेघ की तरह मतिरूप भूमि सरस बनाने वाले हो और पितामह की तरह प्राणियों की परवरिश करने वाले हो, इस लिये मेरे भी तुम अब स्वामी बनो ॥ ८ ॥

बहुविहुवन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहिं,
मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहिं।
जं ज्झायहि बहुदरिसणत्थ बहुनामपसिद्धउ,
सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पवद्धउ ॥ ९ ॥

अन्वयार्थ—(जो) 'छप्पन्निहिं' पण्डितों द्वारा 'नियनियसत्थिहिं' अपने-अपने शास्त्रों में 'बहुविहुवन्नु' विविध वर्ण वाला, 'अवन्नु' अवर्ण (तथा) 'सुन्नु' शून्य 'वन्निउ' कहा गया है, (अतएव) 'बहुनामपसिद्धउ' अनेक नामों से मशहूर है; 'ज' जस वा 'मुक्खधम्मकामत्थकाम' मोक्ष, धर्म, काम और अर्थ को चाहने वाले 'बहुदरिसणत्थ नर' अनेक दार्शनिक मनुष्य 'ज्झायहि' ध्यान करते हैं, 'सो' वह 'जोइयमणकमल-भसल पास' योगियों के दिलों में भौंरे की तरह रहने वाला पार्श्व 'सुहु पवद्धउ' सुख बढ़ावे ॥ ९ ॥

भावार्थ—हे पार्श्व ! अपने-अपने शास्त्रों में किसी ने आप को 'नानारूपधारी,' किसी ने निराकार और किसी ने 'शून्य' बतलाया है, इसी लिये आप के विष्णु, महेश, बुद्ध आदि अनेक नाम हैं। और

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को चाहने वाले अनेक दार्शनिक आप का ध्यान करते हैं, इसी लिये आप- 'योगि-मनः-कमल-भसल' हैं। आप मेरे सुख कि वृद्धि करें ॥ ६ ॥

भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरियसरीरय,
तरलियनयण विसुन्न सुन्न गग्गरगिर करुणय।
तइ सहसत्ति सरंत हूंति नर नासियगुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइ पास भयपंजरकुंजर ॥ १० ॥

अन्वयार्थ—'भयविब्भल' [जो] भय से व्याकुलित हों, 'रणझणिरदसण' (जिन के) दाँत युद्ध में टूट गये हों, 'थरहरिय-सरीरय' शरीर थर-थर काँपता हो, 'तरलियनयण' आँखें फटीसी हो गई हों, 'विसुन्न' जो खेद-खिन्न हों, 'सुन्न' अचेत हो गये हों। 'गग्गरगिर' गद्गद बोली से बोलते हों (और) 'करुणय' दीन हों, 'नर' (ऐसे भी) आदमी 'तइ सरंत' तुम्हारे स्मरण करते ही 'सहसत्ति' एक ही दम 'नासियगुरुदर हुंति' नष्ट-व्याधि हो जाते हैं। 'भयपंजरकुंजर पास' भयरूप पिंजरे को (तोड़ने के लिये) हाथी-सदृश हे पार्श्व ! 'मह सज्झसइ विज्झवि' मेरे भयों को नाश करें ॥ १० ॥

भावार्थ—हे पार्श्व प्रभो ! तुम्हारे स्मरण करते ही तत्काल दुःखित प्राणियों के दुःख दूर हो जाते हैं। जैसेः-जो डर से आकुलित हो, युद्ध में जिस के दाँत आदि अङ्ग टूट गये हों, शरीर थर-थर कांपने लग गया हो, आंखें फटसी हो गई हों, जो क्षीण हो गया हो, अचेत हो गया हो या हिचक-हिचक कर बोलने लग गया

हो, इसी लिये तुम 'भयपञ्जर कुंजर' हो। अतः मेरे भी भयों का विध्वंस करो॥ १०॥

पइं पासि वियसंतनित्तपत्तंतपविसिय,-
वाहपवाहपवूढरूढदुहदाह सुपुलइय।
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुरनर,
इय तिहुअणआणंदचंद जय पास जिणेसर॥ ११॥

अन्वयार्थ—'पइं पासि' तुम्हें देख कर 'वियसंतनित्तपत्तंत-पविसित्तियवाहपवाहपवूढरूढदुहदाह' खिले हुए नेत्ररूप पत्तों से निकलती हुई आसुओं की धारा द्वारा धुल गये हैं चिरसंचित दुःख और दाह जिन के, ऐसे (अत एव) 'सुपुलइय सुरनर' पुलकित हुए देव और मनुष्य 'अप्पाणं' अपने-आप को 'मन्नु सउन्नु पुन्नु' मान्य, भाग्यशाली और प्रतिष्ठित 'मन्नइ' मानते हैं, 'इस' इस लिये 'तिहुअणआनंदचंद पास जिणेसर' हे तीन लोक के आनन्द चन्द्र-पार्श्व! 'जय' (तुम्हारी) जय हो॥ ११॥

भावार्थ—हे पार्श्व! क्या सुर और क्या नर, कोई भी जब तुम को देख लेते हैं तो उन की आंखें खिल जाती हैं, उन से आसुओं की धारा बह निकलती है और चित्त पुलकित-प्रफुल्लित हो जाता है। मानो उन आसुओं के द्वारा उन के चिर-सञ्चित दुःख और ताप ही धुल गये हों। अतः दर्शक अपने-आप को भाग्यशाली, मान्य और पुण्यात्मा समझने लगते हैं। इसी लिये तुम 'त्रिभुवन आनन्द-चन्द्र' हो। हे जिनेश्वर! तुम्हारी जय हो॥ ११॥

तुह कल्लाणमहेसु घंटटंकारवपिल्लिय,-
वल्लिरमल्ल महल्लभत्ति सुरवर गंजुल्लिय ।
हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणे वि महूसव,
इय तिहुअणआणंदचंद जय पास सुहुब्भव ॥ १२ ॥

अन्वयार्थ—'घंटटंकारवपिल्लिय' घण्टा की आवाज़ से प्रेरित हुए 'वल्लिरमल्लिय' हिल रही हैं मालाएँ जिन की, ऐसे 'महल्ल-भत्ति' बड़ी भारी भक्ति वाले (अत एव) 'गुंजुल्लिय' रोम-अञ्चित (और) 'हल्लुप्फलिय' हर्ष से प्रफुल्लित 'सुरवर' इंद्र 'तुह कल्लाण-महेसु' तुम्हारे कल्याणमहोत्सवों पर 'भुवणे वि' इस लोक में भी 'महूसव पवत्तयंति' महोत्सवों को विस्तारते हैं। 'इय' इस लिये 'तिहुअणआणंद-चंद सुहुब्भव पास' हे तीनों लोकों को आनन्द उपजाने के लिये चंद्रमा के समान (और) सुख की खानी पार्श्व ! 'जय' (तुम्हारी) जय हो ॥ १२ ॥

भावार्थ—देवेन्द्र तुम्हारे कल्याणकोत्सव पर भक्ति की प्रचुरता से रोमाञ्चित हो जाते हैं, उन की मालाएँ हिलने-जुलने लगती हैं और हर्ष के मारे फूले नहीं समाते। तब वे यहां भी महोत्सवों की रचना रचते हैं—भूतलवासियों को भी आनन्दित करते हैं, इसी लिये हे पार्श्व ! तुम्हें 'सुखोद्भव' या 'त्रिभुवन-आनन्द चन्द्र' कहना चाहिये ॥ १२ ॥

निम्मलकेवलकिरणनियरविहुरियतमपहयर,
दंसियसयलपयत्थसत्थ वित्थरियपहाभर ।

कलिकलुसियजणधूयलोयलोयणह अगोयर,
तिमिरइ निरु हर पासनाह भुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥

अन्वयार्थ—'निम्मलकेवलकिरणनियरविहुरियतमपहयर' हे निर्मल केवल (ज्ञान) की किरणों से अन्धकार के समूह को नष्ट करने वाले! 'दंसियसयलपयत्थसत्थ' हे सकल पदार्थों के समूह को देख लेने वाले। 'वित्थरियपहामर' हे कान्तिपुञ्जों को विस्तारने वाले। (अत एव) 'कलिकलुसियजणधूयलोयलोयणह अगोयर' हे कलिकाल के कलुषित मनुष्यरूप उल्लू लोगों की आँखों से नहीं दीखने वाले। (अत एव) 'भुवणत्तयदिणयर पासनाह' हे तीनों लोकों के सूर्य पार्श्वनाथ! 'तिमिरइ निरुहर' अन्धकार को अवश्य विनाशो ॥ १३ ॥

भावार्थ—हे पार्श्वनाथ! तुम ने अपने निर्मल केवलज्ञान की किरणों से अज्ञानान्धकार नष्ट कर दिया, तमाम पदार्थ-जाल देख लिया, अपने ज्ञान की प्रभा खूब फैलाई अत एव कलिकाल के रागी-द्वेषी पुरुष आप को पहिचान नहीं सकते, इसी लिए तुम 'भुवनत्रय-दिनकर' हो। अत एव मेरा अज्ञान-अन्धकार दूर करो ॥ १३ ॥

तुह समरणजलवरिससित्त माणवमइमेइणि,
अवरावरसुहुमत्थबोहकंदलदलरेहिणि।
जायइ फलभरभरिय हरियदुहदाह अणोवम,
इय मइमेइणिवारिवाह दिस पास मई मम ॥ १४ ॥

अन्वयार्थ—'तुह समरणजलवरिससित्त' तुम्हारे स्मरणरूप जल की वर्षा से सींची हुई 'माणवमइमेइणि' मनुष्यों की मतिरूप मेदिनी-

पृथ्वी, 'अवरावरसुहुमत्थबोहकंदलदलरेहिणि' नये-नये सूक्ष्म पदार्थों का ज्ञानरूप अंकुर और पत्रों से शोभित, 'फलभरभरिय' फलों के भार से पूर्ण, 'हरियदुहदाह' दुःख और ताप का नाश करने वाली (अत एव) 'अणोवम' अनुपम-विचित्र 'जायइ' हो जाती है; 'इय' इस लिये 'मइमेइणिवारिवाह पास' हे मतिरूप पृथ्वी के मेघ पार्श्व! 'मम मइं दिस' मुझे बुद्धि दो॥ १४॥

भावार्थ—जिस तरह जल के बरस जाने पर पृथ्वी पर नये-नये अंकुर उग आते हैं, उन पर पत्ते और फूल लग आते हैं, दुःख और ताप मिट जाते हैं और वह विचित्र हो जाती है; इसी तरह तुम्हारे स्मरण होने पर मनुष्य की मति नये-नये और सूक्ष्म पदार्थों का ज्ञान कर लेती है, विरक्ति को प्राप्त करती है, संसार के संकट काटती है, और अनुपमता धारण करती है, इसी लिये हे पार्श्व! तुम 'मतिमेदिनी-वारिवाह' हो। मुझे बुद्धि दो॥ १४॥

कय अविकलकल्लाणवल्लि उल्लूरियदुहवणु,
दाविय-सग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु।
जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजंतुपियामहु॥ १५॥

अन्वयार्थ—'जं' जिस के द्वारा 'अविकलकल्लाणवल्लि कय' निरन्तर कल्याण-परंपरा की गई, 'दुहवणु उल्लूरिय' दुःखों का वन नष्ट किया गया, 'सग्गपवग्ग दाविय' स्वर्ग और अपवर्ग-मोक्ष का मार्ग दिखाया गया, 'हियावहु रम्मु धम्मु जणिय' हितकारी और

रमणीक धर्म प्रगट किया गया, 'दुग्गइगमवारणु' (जो) दुर्गति का जाना रोकने वाला (और) 'जयजतुह जणएण तुल्ल' जगत् के जन्तुओं का जनक-पिता के बराबर हैं (अत एव) 'जयजंतुपियामह' जगत् के जन्तुओं का पितामह है, 'सो पास जयउ' यह पार्श्व जयवन्त रहे ॥ १५ ॥

भावार्थ—यह पार्श्व प्रभु संसार में विशेषरूप से वर्तमान रहें कि जिस ने जीवों का निरन्तर कल्याणों के ऊपर कल्याण किया, दुःख मेटे, स्वर्ग और मोक्ष का रास्ता बताया, दुर्गति जाते हुए जीवों को रोका, अत एव जिस ने पिता की तरह जीवों का पालन-पोषण किया, सुखकर और हितकर धर्म का उपदेश दिया, इसी लिये जो 'जगज्जन्तुपितामह' साबित हुआ ॥ १५ ॥

> भुवणारण्णनिवास-दरिय परदरिसणदेवय,
> जोइणिपूयणखित्तवालखुद्दासुरपसुवय ।
> तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंट्ठुलु चिट्ठहि,
> इय तिहुअणवणसीह पास पावाइं पणासहि ॥ १६ ॥

अन्वयार्थ—'भुवणारण्णनिवास' जगत् रूप वन में रहने वाले 'दरिय' अभिमानी 'परदरिसणदेवय' और-और मत के देवता (तथा) 'जोइणिपूयणखित्तवालखुद्दासुरपसुवय' योगिनी, पूतना क्षेत्रपाल तथा क्षुद्र असुर-रूप पशुओं के झुंड 'तुह' तुम से 'उत्तट्ठ' घबड़ाये, 'सुनट्ठ' भागे (और) 'अविसंट्ठुलु सुट्ठु चिट्ठहि' निश्चय ही खूब सावधान हो कर रहे, 'इय' इस लिये 'तिहुअणवणसीह पास' हे तीन लोकरूप वन के सिंह पार्श्व। 'पावाइं पणासहि' (मेरे) पापों को नष्ट करो ॥ १६ ॥

भावार्थ—संसाररूप वन में रहने वाले मदोन्मत्त परदेवता बुद्ध आदि और जोगिनी, पूतना, क्षेत्रपाल और तुच्छ असुररूप पशु गण तुम्हारे डर के मारे बेचारे घबड़ाये, भागे और बड़ी हुशियारी से रहने लगे। इसी लिये तुम 'त्रिभुवन-वन-सिंह' हो। मेरे पापों को दूर करो ॥ १६ ॥

फणिफणफारफुरंतरयणकररंजियनहयल,
फलिणीकंदलदलतमालनीलुप्पलसामल ।
कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिय,
जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणयपुरट्ठिय ॥ १७ ॥

अन्वयार्थ—'फणिफणफारफुरंतरयणकररंजियनहयल' धरणेन्द्र के फण में देदीप्यमान रत्नों की किरणों से रँगे हुए आकाश में 'फलिणीकंदलदलतमालनीलुप्पलसामल' प्रियंगु के अंकुर तथा पत्तों की, तमाल की और काले कमल की तरह श्यामल, (तथा) 'कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिय' कमठ असुर के द्वारा किये गये अनेक उपसर्गों को जीत लेने वाले, 'थंभणयपुरट्ठिय पच्चक्खजिणेस पास' हे स्तम्भनकपुर में विराजमान प्रत्यक्ष-जिनेश पार्श्व ! 'जय' (तुम्हारी) जय हो ॥ १७ ॥

भावार्थ—पार्श्व प्रभु ने जब कि 'कमठ' नामक असुर के उपसर्गों को सहा तब भक्ति-वश धरणेन्द्र उन के संकटों को निवारण करने के लिये आया। उस समय धरणेन्द्र की फणों में लगी हुई मणियों के प्रकाश से भगवान् के देह की कान्ति ऐसी मालूम होती थी,

मानों ये प्रियंगु नामक लता के अंकुर तथा पत्ते हैं या तमाल वृक्ष और नीले कमल हैं, ऐसे हे स्तम्भनकपुर में विराजमान और प्रत्यक्षीयभूत पार्श्व जिन ! तुम जयवन्त रहो ॥ १७ ॥

> मह मणु तरलु पमाणु नेय वाया वि विसंटुलु,
> न य तणुरवि अविणयसहावु आलसविहलंघलु ।
> तुह माहप्पु पमाणु देव कारुण्णपवित्तउ,
> इय मइ मा अवहीरि पास पालिहि विलवंतउ ॥ १८ ॥

अन्वयार्थ—'मह मणु' मेरा मन 'तरलु' चञ्चल है (अतः) 'पमाणु नेय' प्रमाण नहीं है, 'वाया वि विसंटुलु' वाणी भी चल-विचल है 'तणुरवि' शरीर भी 'अविणयसहावु' अविनय स्वभाव वाला है (तथा) 'आलसविहलंघलु' आलस्य से परवश है (अतः) 'पमाणु न य' (यह भी) प्रमाण नहीं है, (किन्तु) 'तुह माहप्पु' तुम्हारा माहात्म्य 'पमाणु' प्रमाण है। 'इय' इस लिये 'पास देव' हे पार्श्व। कारुण्णपवित्तउ' दया-युक्त और 'विलवंतउ' रोते हुए 'मइ' मुझ को 'पालिहि' पालो (और) 'मा अवहीरि' (मेरी) अवहेलना मत करो ॥ १८ ॥

भावार्थ—हे पार्श्व देव। मेरा मन चञ्चल है, बोली अव्यवस्थित है और शरीर का तो स्वभाव ही अविनयरूप है तथा आलस्य के वशीभूत है, इस लिये ये कोई प्रमाण नहीं हैं; प्रमाण है, तुम्हारा माहात्म्य। मैं रो रहा हूँ, अत एव दया का पात्र हूँ। तुम मेरी अवहेलना मत करो, बल्कि रक्षा करो ॥ १८ ॥

किं किं कप्पिउ न य कलुणु किं किं व न जंपिउ,
किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव दीणयमवलंबिउ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहिं दुहत्तिहिं,
तह वि न पत्तउ ताणु किं पि पइ पहुपरिचत्तिहिं ॥ १९ ॥

अन्वयार्थ—'पइ पहुपरिचत्तिहिं' तुम-सरीखे प्रभु को छोड़ देने वाले 'दुहत्तिहिं अम्हेहिं' दुःखों से व्याकुलित हमारे द्वारा 'दीणयमवलंबिउ' दीनता का अवलम्बन करके 'किं किं न य कप्पिउ' क्या-क्या कल्पित नहीं किया गया, 'किं किं व कलुणु न जंपिउ' क्या-क्या करुणारूप बका नहीं गया, 'किं व किट्ठु न चिट्ठिउ' क्या-क्या क्लेशरूप चेष्टा नहीं की गई (और) 'कासु' किन के सामने 'निप्फल्ल लल्लि न किय' व्यर्थ लल्लो-चप्पो नहीं की गई, 'तह वि' तो भी 'किं पि' कुछ भी 'ताणु न पत्तउ' शरण न पाई ॥ १९ ॥

भावार्थ—हे देव! तुम को छोड़ कर और दुःखों को पा कर मैं ने क्या-क्या तो मन में कल्पनाएँ न कीं, वाणी से क्या-क्या दीन वचन न बोले, क्या-क्या शरीर के क्लेश न उठाये और किस किस की लल्लो-चप्पो न कि, लेकिन सब निष्फल गईं और कुछ भी परवरिश न पाई ॥ १९ ॥

तुहु सामिउ तुहु मायबप्पु तुहु मित्त पियंकरु,
तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि ताणु तुहु गुरु खेमंकरु।
हउ दुहभरभारिउ वराउ राउ निब्भग्गह,
लीणउ तुह कमकमलसरणु जिण पालहि चंगह ॥ २० ॥

अन्वयार्थ—'तुहु सामिउ' तुम मालिक हो, 'तुहु मायबप्पु' तुम माई-बाप हो, 'तुह पियंकरु मित्त' तुम प्यारे मित्र हो, 'तुहु गइ' तुम गति हो, 'तुहु मइ' तुम मति हो, 'तुहु खेमंकरु गुरु' तुम कल्याणकारी गुरु हो [और] 'तुहुजि ताणु' तुम ही रक्षक हो। 'हउँ' मैं 'दुहभरभारिज' दुःखों के बोझ से दबा हुआ हूँ, 'वराउ' क्षुद्र हूँ [और] 'चंगह निब्भग्गह राउ' उत्कृष्ट भाग्यहीनों का राजा हूँ; [परन्तु] 'तुह' तुम्हारे 'कमकमज-सरणु लीणउ' चरण-कमल की शरण में आ गया हूँ [अतः] 'जिन' हे जिन ! 'पालहि' [मेरी] रक्षा करो ॥ २८ ॥

भावार्थ—हे जिन ! तुम मालिक हो, तुम मा-बाप हो, तुम प्यारे मित्र हो, तुम से सुगति और सुमति प्राप्त होती है, तुम रक्षक हो और तुम ही कल्याण करने वाले गुरु हो। मैं दुःखों से पीड़ित हूँ और बड़े से बड़े हतभाग्यों में शिरोमणि हूँ; पर तुम्हारे चरण-कमलों की शरण में आ पड़ा हूँ; इसलिए मेरी रक्षा करो ॥२८॥

पइ कि वि कय नीरोय लोय कि वि पाविय सुहसय,
कि वि मइमंत महंत के वि कि वि साहियसिवपय।
कि वि गंजियरिउवग्ग के वि जसधवलियभूयल,
मइ अवहीरहि केण पास सरणागयवच्छल ॥ २१ ॥

अन्वयार्थ—'पइ' तुम्हारे द्वारा 'कि वि लोय नीरोय कय' कितने ही प्राणी नीरोग किये गये, 'कि वि पावियसुहसय' कितनेकों को सैंकड़ों सुख मिले, 'कि वि मइमंत' कितने ही बुद्धिमान् हुए 'के वि महंत' कितने ही बड़े हुए 'कि वि साहियसिवपय' कितनेक

भावार्थ—हे पार्श्व ! मेरा शरीर अनेक प्रकार के दुःखों से दुःखित है और तुम दुःखों के नाश करने में तत्पर रहते हो, मैं सज्जन पुरुषों की दया का पात्र हूँ और तुम दया के आकर हो, मैं अनाथ हूँ और तुम त्रिलोकीनाथ हो; इस लिये मुझ को रोते हुए छोड़ देना, यह तुम्हें हरगिज़ शोभा नहीं देता ॥ २३ ॥

जुग्गाऽजुग्गविभाग नाह न हु जोयहि तुह सम,
भुवणुवयारसहाव भावकरुणारससत्तम ।
समविसमइं कि घणु नियइ भुवि दाह समंतउ,
इय दुहिबंधव पासनाह मइ पाल थुणंतउ ॥ २४ ॥

अन्वयार्थ—'नाह' हे स्वामिन् ! 'तुह सम' तुम सरीखे 'जुग्गाजुग्गविभाग' लायक-नालायक का हिसाब 'न हु जोयहि' नहीं देखते हैं, 'भुवणुवयरसहावभाव' जगत का उपकार करने के स्वभाव वाले 'करुणारससत्तम' हे दयाभाव से उत्तम ! 'भुवि दाह समंतउ' पृथ्वी के आताप को शांत करता हुआ 'घणु' मेघ 'किं समविसमइं नियइ' क्या अधिक-नीचा देखता है ? 'इय' इस लिए 'दुहिबंधव' पासनाह' हे दुःखियों के हितैषी पार्श्वनाथ ! 'थुणंतउ मइ पाल' स्तवन करते हुए मेरी रक्षा करो ॥ २४ ॥

भावार्थ—हे नाथ ! आप-सरीखे सत्पुरुष यह नहीं देखते कि यह जीव उपकार करने के लायक और यह नालायक; क्योंकि जगत् के उपकार करने का आपका स्वभाव है । इस दयाभाव से ही आप इतने उच्च बने हैं । अरे पानी बरसाने के लिए क्या बादल भी

कभी यह सोचता है कि जगह एकसी और यह ऊँची-नीची ? इस लिये हे पार्श्वनाथ ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी रक्षा करें; क्योंकि आप दुःखियों के बन्धु हैं ॥ २४ ॥

न य दीणह दीणयु मुयवि अन्नु वि कि वि जुग्गय,
जं जोइवि उवयारु करहि उवयारसमुज्जय ।
दीणह दीणु निहीणु जेण तइ नाहिण चत्तउ,
तो जुग्गउ अहमेव पास पालहि मइं चंगऊ ॥ २५ ॥

अन्वयार्थ—'दीणह जुग्गय' दीनों की योग्यता 'दीणयु मुयवि' दीनता को छोड़ कर 'अन्नु वि कि वि न य' और कुछ भी नहीं है, 'जं जोइवि' जिसे देख कर 'उवयारसमुज्जय' उपकार तत्पर पुरुष 'उवयारु करहि' उपकार करते हैं। (मैं) 'दीणह दीणु' दीनों से भी दीन हूँ (और) 'निहीणु' निर्बल हूँ, 'जेण' जिस से कि 'तइ नाहिण चत्तउ' तुम (सरीखे) नाथ ने छोड़ दिया है; 'तो' इस लिये 'पास' हे पार्श्व ! 'जुग्गउ अहमेव' योग्य मैं ही हूँ, 'चंगउ मइ पालहि' जैसे बने वैसे मेरी रक्षा करो ॥ २५ ॥

भावार्थ—हे पार्श्व ! दीनता को छोड़ कर दीनों की योग्यता और कुछ भी नहीं है, जिसे देख कर उपकारी लोग उपकार करते हैं ! मैं दीनों से दीन और निराश्रय निस्सत्व पुरुष हूँ, शायद इसी लिये तुम ने मुझे छोड़ दिया है । पर मैं इसी वजह से उपकार के योग्य हूँ; अतः जैसे बने वैसे मुझे पालो ॥ २५ ॥

अह अन्नु वि जुग्गयविसेसु कि वि मन्नहि दीणह,
जं पासिवि उवयारु करइ तुह नाह समग्गह ।

सुच्चिय किल कल्लाणु जेण जिण तुम्ह पसीयह,
किं अन्निण तं चेव देव मा मइ अवहीरह ॥ २६ ॥

अन्वयार्थ—'समग्गह नाह' हे विश्वनाथ ! 'अह' अगर 'तह' तुम 'कि वि अन्न वि' कोई और 'दीणह' दीनों की 'जुग्गय-विसेसु मन्नहि' योग्यता विशेष मानते हो, 'जं पासिवि' जिसे देख कर 'उवयारु करइ' उपकार करते हो (और) 'जेण' जिस से 'जिण' हे जिन ! 'तुम्ह पसीयह' तुम प्रसन्न होते हो, 'सुच्चिय किल कल्लाणु' तो वही कल्याणकारी होगी (तो) 'देव' हे देव ! 'किं अन्निण' और से क्या ? 'तं चेव' वही (करो और) 'मइ मा अवहीरह' मेरी अवहेलना मत करो ॥ २६ ॥

भावार्थ—हे विश्वनाथ ! अगर तुम दीनों की और कोई योग्यता-विशेष मानते हो कि जिसे देख कर उपकार करते हो तो हे जिन ! प्रसन्न होओ और वही (रत्नत्रय) मुझ में पैदा करो, वही कल्याणकारी है और से क्या मतलब ? हे देव ! मेरी उपेक्षा मत करो ॥ २६ ॥

तुह पत्थण न हु होइ विहलु जिण जाणउ किं पुण,
हउ दुक्खिय निरु सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमण ।
तं मन्नउ निमिसेण एउ एउ वि जइ लब्भइ,
सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥

अन्वयार्थ—'जिण' हे जिन ! 'जाणउ' (मैं) जानता हूँ कि 'तुह पत्थण' तुम से की गई प्रार्थना 'हु' नियम से 'विहलु न हु होइ' निष्फल नहीं होती । 'हउँ' मैं 'निरु' अवश्य 'दुक्खिय' दुःखित

'सत्तचत्त' शक्ति-रहित 'दुवह्' पदराकल और 'उस्सुयमण' उन्मुक्त हूँ, 'तं' इस वजह से 'जइ मन्नउ' अगर (मैं यह) मानता हूँ कि 'निमि-सेण' पलक मारते ही 'एउ एउ वि लब्भइ' अमुक-अमुक प्राप्त होवे 'किं पुण' तो फिर क्या हुआ ? 'सच्चं जं' यह सत्य है कि 'भुक्खियव-सेण' भूँखे की वजह से' किं उंबरु पच्चइ' क्या उदम्बर पकता है ? ॥ २७ ॥

भावार्थ—हे जिन ! मैं यह जानता हूँ कि आप से की गई प्रार्थना व्यर्थ नहीं जा सकती, तो भी मैं दुःखित हूँ, निर्बल हूँ और फल-प्राप्ति का अतिशय लोलुपी हूँ, इस लिये अगर यह समझूँ कि मुझे अमुक-अमुक फल अभी हाल मिले जाते हैं, तो इस में क्या आश्चर्य ? हाँ ! यह ठीक है कि भूँख की वजह से उदम्बर जल्दी थोड़े ही पक सकते हैं ? ॥ २७ ।

> तिहुअणसामिय पासनाह मइ अप्पु पयासिउ,
> किज्जउ जं नियरूवसरिसु न मुणउ बहु जंपिउ ।
> अन्न न जिण जगि तुह समो वि दक्खिन्नुदयासउ,
> जइ अवगन्नसि तुह जि अहह कह होसु हयासउ ॥ २८ ॥

अन्वयार्थ—'तिहुअणसामिय पासनाह' हे तीन लोक के मालिक पार्श्वनाथ ! 'मइ' मेरे द्वारा 'अप्पु पयासिउ' आत्मा प्रकाशित किया गया, 'जं' इस लिये 'नियरूवसरिसु किज्जउ' (तुम मुझे) अपनासा कर लो, 'बहु जंपिउ' बहुत बकना 'न मुणउ' (मैं) नहीं जानता । 'जिण' हे जिन ! 'जगि' संसार में 'दक्खिन्न-

दयासउ' उदारता (और) दया का स्थान 'तह समो वि' तुम्हारे बराबर भी 'अन्न न' और नहीं है। 'तुह जि' तुम ही 'जइ' अगर 'अवगन्नसि' मुझे कुछ न गिनोगे (तो) 'अहह' हा! 'कह हयासउ होसु' (मैं) कैसा हताश होऊँगा ॥ २८ ॥

भावार्थ—हे तीन लोक के नाथ पार्श्वनाथ ! मैं ने आप के सामने अपना हिया खोल दिया, अब मुझे आप अपने समान बना लीजिये, बस और मैं कुछ नहीं कहना चाहता। हे जिन ! दयालु तो आप इतने हैं कि अधिक की तो बात क्या ? संसार में आप के बराबर भी कोई नहीं है। फिर आप ही मेरी उपेक्षा करेंगे तो हां ? मैं कैसा हताश न हो जाऊँगा ॥ २८ ॥

जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलवियउ,
तु वि जाणउ जिण पास तुम्हि हउँ अंगीकिरिउ।
इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु,
रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥ २९ ॥

अन्वयार्थ—'जिण' हे जिन ! 'जइ' यद्यपि 'तुह रूविण' तुम्हारे रूप में 'किण वि पेयपाइण' शायद किसी प्रेत ने 'वेलवियउ' (मुझे) ठग लिया है, 'तु वि' तो भी 'जाणउ' (मैं यही) जानता हूँ कि 'हउँ' मैं 'तुम्हि अंगीकिरिउ' तुम ही से स्वीकार किया गया हूँ, 'पास' हे पार्श्व ! 'मह इछिउ' मेरा मनोरथ 'जं न होइ' अगर सिद्ध न हुआ (तो) 'सा' यह 'तह ओहावणु' तुम्हारी लघुता है, 'इय' इस लिये 'नियकित्ति रक्खंतह' अपनी कीर्ति की रक्षा करो, 'अवहीरणु णेय जुज्जइ' अवहेलना करना युक्त नहीं है ॥ २९ ॥